

श्रीजिनऋद्धिसूरि जीवनप्रभा।

संसारना जीवो उपर उपकार करती जेम आ,
देखाय छे सौथी हमेशां प्रसरती सूरजप्रभा।
उपकार करशे भव्यजीवोने हमेशां तेम आ,
आचार्य श्रीजिनऋद्धिसूरीश्वरतणी जीवनप्रभा।

मास्तर विजयचन्द।



श्रीवर्धमानाय नमो नमोऽस्तु ।

बालब्रह्मचारी तपस्वी परमपूज्य

जैनाचार्य भट्टारक

श्रीजिनऋद्धिसूरीश्वरजी महाराज साहेबनुं जीवन चरित्र ।

लेखक—गुलाबमुनि ।

संस्कारक

मास्तर विजयचन्द मोहनलाल शाह ।

प्रकाशक

श्रीमहावीर जैन मन्दिर (पायधुनी-मुंबई) ना कार्यवाहक

झवेरी मूलचन्द हीराचन्द भगत ।

सं० १९९५ प्रति १००० सन १९३९

मुद्रक

रघुनाथ दिपाजी देसाई, न्यू भारत प्रिंटिंग प्रेस.

६ केलेवाडी, गिरगाव, बम्बई नं. ४

सद्गुण ग्रहणार्थे विना मूल्य वितरण ।

बे बोल ।

आ ग्रन्थने माटे खरुं कहिये तो बे बोल लखवा जेवुं छे ज नहि, छतां प्रचलित प्रणालिकानुसार बे बोलरूपे कंइक लखवुं ज जोइये एम जणायाथी, पूज्यपाद गुरुदेवना आ जीवनचरित्र लखवाना कारण तरीके जणाववानुं के लगभग वीस वर्षथी ए गुरुदेवना परिचयमां हुं आव्यो छुं, ते दम्यान पूज्य गुरुदेवना सरलता दयालुता तपस्विता अने व्यवहारदक्षता आदि अनेक सद्गुणोनो मने परिचय थयो छे, तेमज प्रबळ तपतेज अने ब्रह्मचर्यतेजना प्रतापे तथा जगत्पूज्य महात्मा स्वर्गस्थ गुरुदेव श्रीमोहनलालजी महाराज साहेबनी उत्कृष्ट सेवा करी प्राप्त करेला तेओश्रीना शुभ आशिर्वादना प्रतापे, ए पूज्यवरना सदुपदेशथी अनेक स्थळे प्रतिष्ठा उपधान उजमणा जैन तीर्थोद्धार जीर्णोद्धार भागवती दीक्षा जैन पाठशाळा जैन उपाश्रय जैन धर्मशाळा जैन ज्ञानभंडार अने जैनोमां परस्पर सम्प वगेरे शासनोन्नतिनां अनेक सत्कार्यो तथा तेने अंगे अट्ठाइमहोत्सवो शान्तिस्नात्रो वरघोडाओ अने संघजमणो पण अनेक थयेलां छे।

एवा परमोपकारी पूज्य गुरुदेवना जीवन सम्बन्धी ए पूज्यश्रीना भक्तो तरफथी वारंवार मने पुछवामां आवतुं होवाथी, तेओ बधाने प्रत्युत्तरो आपवानो पार नहि आवतो जणावाथी पार लाववाना साधनरूप आ जीवनप्रभा लखी काढवानो विचार उत्पन्न थयो । परिणामे केटलाक समय पूर्वे आ कार्यनो प्रारम्भ करवामां आव्यो हतो, पूज्य दादासाहेबनी तथा शासनदेवनी पूर्ण कृपाथी आजे ते कार्य समाप्त थतुं

होवाथी आ तके पूज्य दादासाहेबनो तथा शासनदेवनो उपकार तो मारे मानवो ज जोइये ।

आ चरित्रमां आवेली हकीकतो पूज्य गुरुदेव पासेथी तथा पूज्य गुरुदेवना परिचयमां आवेला साधुओ अने श्रावको वगेरे पासेथी, प्रयत्न करीने मेळव्या बाद तेनी क्रमसर संकलना करी पूज्य गुरुदेवने वांची संभळावी तेओश्रीनी सूचना अनुसार घटतो सुधारो वधारो करी आ ग्रन्थ तैयार करवामां आव्यो छे ।

आ चरित्र लखवानो हेतु एना वांचनारने कंइक पण लाभ थाय एवो होवाथी, तेवी ज हकीकतो आ ग्रन्थमां दाखल करी ते सिवायनी हकीकतोने अत्रे स्थान आपवामां आव्युं नथी ।

मारी मातृभाषा गुजराती न होवाथी आ ग्रन्थनी भाषाने संस्कारित करवानुं, प्रेसकॉपी करवानुं तथा प्रूफ संशोधन करवानुं काम मास्तर विजयचन्द मोहनलाल शाहने सोंपवामां आव्युं हतुं । पूज्य गुरुदेवनी उपर तेओनो पूर्ण भक्तिराग होवाथी तेमने सोंपेलुं काम, वेतन लइने पण तेमणे प्रशंसनीय करी आप्युं ते बदल तेओने धन्यवाद आपी, मान्ते आ ग्रन्थमांथी हंसनी माफक सार ग्रहण करवानी वाचकवर्गने सूचना आपीने आ बे बोलनी समाप्ति करवामां आवे छे ।

ता. २१-९-१९३९। तेजूकायापार्क विमलनीला, माटुंगा—मुम्बई ।	सज्जनवृन्दमनो-मन्दिरस्थानाभिलाषी गुलाबमुनि ।

आ जीवनप्रभा छपावी प्रसिद्ध करवामां ललवाणी प्रेसना मालिक गुरुभक्त श्रीयुत छोगालालजी चम्पालालजी ललवाणीए घणो स्तुत्य प्रयास कर्यो छे, तथा पूज्य श्रीगुलाबमुनिजी महाराज साहेबना सदुपदेशथी नीचे जणावेला सज्जनोए गुरुभक्ति निमित्ते उदार दिलथी मदद आपेली छे ते बदल तेओने धन्यवाद आपवामां आवे छे ।

१ माटूंगामां सं० १९९४ ना पर्युषणमां तथा सं० १९९५ ना बीजा श्रावणना पर्युषणमां थयेली ज्ञानखातानी उपजमांथी हा. राव साहेब शेठ रवजी सोजपाळ । रु. २००

२ माटूंगामां सं० १९९५ ना तपागच्छीय पर्युषणमां थयेली ज्ञानखातानी उपजमांथी हा. शेठ शान्तिलाल जीवणलाल शेठ चुनीलाल कमलसी तथा शेठ हीरजी गंगाधर भणशाली ।
रु. १०१

३ शेठ लालचन्दजी मुंदडा मु० ठाणा रु. २५०

४ स्वर्गवासी शेठ जवानमलजी हजारीमलजीनी धर्मपत्नी श्रीमती भिखीबाई मु० चोपा । रु. २५०

५ शेठ पूनमचन्दजी सुखदेवजीनी मुम्बईनी पेढीना मालिक श्रीयुत किसनचन्दजी पूनमचन्दजी मु० खजवाना । रु. १५१

६ शेठ पुनसी मूरजी हा. श्रीयुत खीमजीभाई मु० कच्छ कोडाय । रु. १०१

७ शेठ बालचन्द मगनलाल मु० पूना । रु. ३१

प्रकाशक—

झवेरी मूलचन्द हीराचन्द भगत ।

जैनाचार्य भट्टारक श्रीजिनऋद्धिसूरीश्वरजी महाराज.



यतिदीक्षा वि० सं० १९३८ फागण शुद्ध

संवेगीदीक्षा वि० सं० १९४२ आषाढ शुद्ध ६ पालिताणा

पन्यासपद वि. सं. १९६६ मागसर शुद्ध ३ गवालीयर.
आचार्यपद वि. सं. १९९५ ना फागण शुद्ध ५ ठाणा नगरे.

पोतपोतानुं कामकाज बंध राखे एवो हुकम कराव्यो, तेनो अमल हजी सुधी पण ते बन्ने राज्योमां चालु रह्यो छे, तथा ते बन्ने राज्यमां उपरोक्त यतित्रयना उपदेशथी जैन मन्दिर अने उपाश्रयना जे जे लागा एटले कर राजदरबारमां तथा राज्यनी रैयतमां चालु थयेला ते लागा पण हाल सुधी चालु रह्या छे।

एवा प्रतापी गुरांसानी परम्परामां यतिवर्य श्रीपूनमचन्द्रजी चीमनीरामजी तथा डूंगरमलजी नामना त्रण गुरुभाईयो थया हता, तेओ पण उपरोक्त यतित्रयनी माफक धर्मशास्त्र तथा ज्योतिष वैद्यक अने मंत्रतंत्रादिकमां प्रवीण होई जैन तथा जैनेतरवर्गमां जैनधर्मने दीपावनारा थई गया, तेओश्रीनी गादीए हाल वर्तमानमां पूनमचन्द्रजीना शिष्य यतिवर्य श्रीयुत ऋद्धिकरणजी विराजता हता तेओ पण धर्मशास्त्र व्याकरण काव्य आदिना अभ्यासी, मंत्रशास्त्रमां प्रवीण अने वैद्यक तथा ज्योतिषशास्त्रमां तो घणा ज कुशल होवाथी ते प्रदेशमां तो तेओ अद्वितीय गणाता हता।

श्रीऋद्धिकरणजी महाराजे चूरुशहेरना जैन मन्दिरने पोताना पैसा खर्ची घणुं सुन्दर बनाव्युं छे ते मन्दिरनी तथा दादावाडीनी सार संभाळ पण पोतेज करता हता, तेओए सं. १९९५ ना चैत्र वदी २ ने रोज चूरुमां स्वर्गवास कर्यो ते पहेलां असल तेरापंथीमांथी स्थानकवासी पूज्य श्रीजवाहरलालजीना परिचयथी ढूंढक थया बाद पाछळथी जिनमूर्तिनी आवश्यकता स्वीकारनारा कोठारी हजारीमलजीना पुत्र सरदारमलजी तेमना पुत्र मूलचन्दजी अने तेओना पुत्र श्रीयुत चम्पालालजी कोठारी


BHARATIYA VIDYA BHAVAN
S N
LIBRARY.

॥ श्रीवीतरागाय नमो नमोऽस्तु ॥

श्रीजिनऋद्धिसूरि जीवनप्रभा ।

राजपूताना देशान्तर्गत वीकानेर राज्यना चूरु शहेरमां श्रीवृहत्खरतरगच्छनी मोटी गादीना श्रीपूज्य महाराजश्रीनी आज्ञानुसार यतिवर्य श्रीयुत ईसरचन्दजी खेमचन्दजी अने जीवणरामजी नामना त्रण गुरुभाईयो रहेता हता। ए त्रणे गुरु-भाईयो यतिवर्योना समयानुसार आचारविचारोथी विभूषित होवा उपरान्त वैद्यक अने ज्योतिषशास्त्रनुं पण सारुं ज्ञान धरावता हता, तेथी तथा धर्मोपदेश आपवानी शक्ति पण सारी होवाथी सर्व जातिना धनिक पुरुषोने अने केटलाएक नाना मोटा ठाकोरोने पण माननीय गणाता हता, खास वीकानेरनरेश तर्फथी तेमज सीकरना रावराजा तर्फथी तो तेओश्रीने केटलाएक गामो वक्षीस आपवानी कोशिष करवामां आवी हती परन्तु तेओश्री तेवी उपाधिमां नहि पडतां ते बन्ने राजाओने तेओए धर्मोपदेश आपीने पर्युषणपर्वना आठे दिवस माटे तेओना राज्यमां पाखी पाळवानुं शरु कराव्युं अर्थात् पर्युषणना आठ दिवसमां कोई पण माणस जीवहिंसा करे नहि अने धोबी रंगारा बंधारा हजाम भाडभूंजा घांची मोची तेली तंबोली अने कंदोई वगेरे आरंभ समारंभना कामो करनारा आठे दिवस

पं. प्र. यति श्रीऋद्धिकरणजी.



यतिदीक्षा वि० स० १९४८ फागण शुक्ल २

राजपूताना चूरु.

स्वर्गवास वि० सं १९९५ चैत्र वदी २

वगेरे चार सज्जनोने पोतानी मालमिलकत उपाश्रय शिष्यपरिवार जैनमन्दिर तथा दादावाडीनी सार संभाळ करवानुं सोंपी गया छे ।

श्रीऋद्धिकरणजी महाराजना नाना गुरुभाई, चीमनीरामजीना शिष्य असल ब्राह्मणज्ञातिना श्रीरामकुमारजी याने आ चरित्रना नायक हता, ए बन्ने गुरुभाईयो सुसंस्कारवाळा होई मूलथी ज वैराग्यभावनाने लइने त्यागवृत्तिवाळा हता तेथी करीने उपरथी तो बन्ने गुरुभाईयो हळीमळीने रहेता हता छतां अन्दरखानेथी तेओनी वृत्ति एकबीजानी उपर आ गादीनी जंजाळ शी रीते चढावी दइ पोते निवृत्त थई जाय ते बाबतनी गोठवणमां हती तेथी श्रीमाल्लिनाथ प्रभुए जेम पोताना मित्रोथी कपट कर्युं तेम आ चरित्रनायक श्रीरामकुमारजीए पण पोताना वडील गुरुभाई श्रीऋद्धिकरणजीथी कपट राखी पोताना मनमां विचार कर्यो के " आ गादीनो त्याग करीने श्रीऋद्धिकरणजी जो मारा पहेलां चाल्या जशे तो पछी स्वर्गस्थ गुरु महाराजनी आ राजसाह्यबी जेवी गादी रूपी गादीनी झूंसरी मारा गळा पर आवी पडशे अने पछी जींदगी सुधी हुं तेमांथी छुटो थई शकीश नहि " एवो विचार करीने कोईने पण कह्या विना एक दिवसे लाग जोईने चूरुथी रवाना थइ गया पण पाछळथी तपास करावी शोधी काढीने पूनमचन्दजी पाछा चूरु लइ गया, नाशीजवामां पोते पावरधा नहि होवाथी आवी रीते त्रण वार पोते नासभाग करी छतां पण तुरत चारे कोर चांपती तपास करावीने तार टपाल अने ऊंटवाळा खेपीया मार्फत गमे त्यांथी

पत्तो मेळवीने पूनमचन्दजी रामकुमारजीने पाछा चूरु लई गया।

आ प्रमाणे वारंवार पोतानी कार्यसिद्धिमां विघ्न आववानुं शुं कारण हशे एम विचार करतां करतां पोताना अन्तःकरण-थी एवो दैवी सन्देश सांपड्यो के अहींथी नाशीने हुं आ गाम ते गाम रखडुं छुं पण कोई तीर्थनी यात्राए जतो नथी तेथीज मारुं काम सिद्ध थतुं नथी माटे हवे ज्यारे लाग मळे त्यारे नाशी जईने तीर्थयात्रा करवी एवो निश्चय करीने नाशी जवाना लागनी वाट जोवा लाग्या।

अगाउ त्रण वार आपणा चरित्रनायक श्रीरामकुमारजीए नास भाग करेली होवा थी हवे एओनी उपर पूनमचन्दजी चांपती देखरेख राखता हता, कोई काम माटे कोई जग्याए एमने एकलाने मोकले नहि, नजीकमां पण क्यांइ गया होयने आवतां विलम्ब थाय तो तुरत माणस मोकली तपास करावे, एवा प्रकारनो जापतो होवा छतां पुण्यवंतोने छावे काळे पण जेम इच्छित वस्तुनी प्राप्ति थया वगर रहेती नथी तेम आपणा चरित्रनायकने पण रात दिन नाशी जवानी झंखना करतां करतां एक दिवस मोको मळी आव्यो एटले झट रवाना थइ गया ने एकदम बीकानेर पहोंच्या, त्यांना रमणीय जैन मन्दिरोनां दर्शन कर्यां अने त्यांथी नजीकमां श्रीनालदादाजीनुं प्रसिद्ध चमत्कारिक देवालय छे त्यांनी यात्रा करी खूब आनन्द अनुभव्यो, ते वखते तेमना अन्तःकरणने एम भास्युं के आ वखतना मारा प्रयाणमां विघ्न नहि आवे अने मारुं

धारेलुं कार्य सिद्ध थशे। सिद्धाचल गिरनार आबू वगेरे महा-प्रभावक तीर्थोनी यात्रा करवानो संकल्प तो एमणे चूरुमां ज करी राख्यो हतो परन्तु चूरुथी एमणे रुपया तो साथे लीधा न हता तेथी घणेदूरना तीर्थोनी यात्राए शी रीते जवुं ते बाबतनी मोटी चिन्ता उत्पन्न थइ छतां बीजो कोइ उपाय न होवाथी खूब हिम्मत करीने पगपाळा मुसाफरी करवानो दृढ निश्चय करी बीकानेरथी प्रयाण करी बिदासर सुजानगढ लाडनूं अने डेगांव थइने नागोर गया त्यांथी मूंडवा खजवाना अने देसवाल थइने मेडताफलोधीमां श्रीपार्श्वनाथ प्रभुनी यात्रा करी जोधपुर पहोंच्या अने माणेकचोकमां गुरांसाहेब श्रीहरदेवजीना उपाश्रयमां मुकाम करी सर्वे जैन मन्दिरोनां दर्शन कर्यां पछी पाली शहेरमां जइ श्रीपूज्यजीना उपाश्रयमां मुकाम करी श्रीनवलखापार्श्वनाथनी यात्रा करी त्यांथी गुंदोच ढोलाडा शिवगंज वेडा अने नाणा थइ खराडी (आबूरोड) गया अने दुनियाभरमां कोतरणी काम थी प्रसिद्ध थयेलां आबू तथा अचलगढनां मनोहर जैन मन्दिरोनी यात्रा करी, त्यां एक यतिवर्यनी मुलाकात थइ, तेओ त्यांथी जूनागढ जवाना हता तेमणे आपणा चरित्रनायकनी द्रव्यना अभावे पगपाळे यात्रा करवानी हकीकत जाणेली होवाथी पोतानी साथे रेलगाडीमां जूनागढ तेडी गया, त्यां गाममां दर्शन करी बीजे दिवसे यात्रा करवा माटे गिरनारना डूंगर उपर चढी श्रीनेमीश्वर भगवाननी टूंक सहस्राम्रवन राजूल रहनेमिनी गूफा तथा पांचमी टूंक सुधीनी यात्रा करतां करतां लगभग

सांज पडी गई त्यारे एम विचार कर्योके " आजनी रात अहीं पांचमी ट्रंक ज रही जवुं ठीक छे " एवो मनसूबो करी त्यां बेठा हता एटलामां रात्रि पडी गई होवाथी ते ट्रंकनी नीचे एक गूफामां कोई योगी रहेतो हतो तेणे गूफामांथी बहार नीकळी पडकार कर्योके " ट्रंक पर कौन बैठा है ? यहाँ किसीको रात रहनेका हुकुम नहि है " ते सांभळीने रामकुमारजी ते योगीनी पासे गया त्यारे योगीए पुछ्युंके " तुम कौन हो ? कहाँ रहते हो ? रातके वख्त महाभयंकर ऐसे इस स्थान पर किस कामके लिए ठहरे हो ? " त्यारे रामकुमारजीए जणाव्युंके हुं तो अहीं यात्रा करवा आव्यो छुं, हुं जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संप्रदायनो यति छुं, आ गिरनार पर्वत उपर अमारा बावीसमा तीर्थंकर श्रीनेमिनाथ प्रभु निर्वाण पाम्या होवाथी आ अमारुं तीर्थ छे तेथी यात्रा करतां करतां अने आ तीर्थनी रमणीयता जोतां जोतां संध्याकाळ थइ जवाथी तथा आ स्थान घणुं सुन्दर अने चित्तने शान्तिकारक जणावाथी श्रीनेमीश्वरप्रभुना चिन्तनमां आ रात्रि अत्रे ज रही पसार करवी एवो विचार करीने हुं निरांते बेठो हतो एटलामां आपनो अवाज संभळावाथी आपनी पासे आव्यो छुं, त्यारे योगीए कह्युं के "तुम भूखे होगे ? चलो इधर खाना तैयार है खा लो" खाधा पछी योगीए पुछ्युं के "तुम इधरसे कहाँ जाओ गे ? " त्यारे रामकुमारजीथी सहसा बोलाइ जवायुं के अहींथी द्वारिका जइ त्यांनी छाप लेवानो मारो विचार छे, त्यारे योगीए कह्युं के "अरे तुम तो

जैन हो और जैनोंका बडाभारी तीर्थ तो शत्रुंजय है, तो भला उस शत्रुंजय तीर्थकी यात्रा करना तुमको अच्छा है उसे छोड-कर द्वारिका जानेका तुमको किसने बतलाया " ए प्रमाणे योगीना मुखथी शत्रुंजयनुं नाम सांभळतां ज रामकुमारजीने अगाउ केटलीक वार शत्रुंजयनो रास सांभळेलो तेनुं स्मरण थयुं अने विचार आव्यो के आ योगी ते खरेखर योगी ज छे, मारा जवाने आडे रस्ते उतरी पडतां एणे प्रमाणिकपणाथी सीधे रस्ते चढाव्यो, त्यार पछी बीजे दिवसे ते योगीनो उप-कार मानीने फरीथी श्रीनेमीश्वरप्रभुनी यात्रा करीने नीचे उतरी जूनागढथी सीधा पालीताणे गया अने खरतरगच्छीय श्रीहेमचन्द्रजीना उपाश्रयमां मुकाम करी हमेशां श्रीसिद्धाचल-जीनी यात्रा करवा लाग्या, ते वखते पंन्यासजी श्रीदयाविमलजी महाराजनी साथे यात्राए जतां आवतां परिचय थयो अने संवेगी साधुओना आचार विचार संबंधी माहितगार थतां थतां पोताने पण संवेगिपणुं स्वीकारवानी तीव्र अभिलाषा जागृत थइ त्यारे ते वात एमणे पं० श्रीदयाविमळजीने जणावी त्यारे तेमणे जणाव्युंके तमे खरतरगच्छना यति छो माटे तमारा ज गच्छना उत्तम क्रियापात्र वचनसिद्धिवाळा परमयोगी तथा जशनामकर्मना उदयवाळा श्रीमोहनलालजी महाराज हालमां अत्रे यात्रा करवा माटे पधारेला छे तेमनी पासे जइ तमारा मनोरथ सफळ करो, ए प्रमाणे पोताना गच्छना एवा उत्तम मुनि श्रीमोहनलालजी के जेमनी अन्यगच्छवाळा मुनिओ पण आवी तारीफ करे छे तेमनी पासे जवानी उत्कंठा थइ अने बीजे

ज दिवसे यतिवर्य श्रीहेमचन्द्रजीना बगीचामांथी पाकां लींबू लइने श्रीमोहनलालजी महाराज पासे जइ साथे लावेला लींबू महाराजश्रीने भेट धर्यां, पोतानी आगळ पाकां लींबू भेट मुकेलां जोइने महाराजश्रीए जणाव्युं के अमे संवेगी साधुओ काचा पाणी अग्नि तथा लीली वनस्पतिने अडकता नथी, मुनिश्रीनुं एवुं कथन सांभळीने मुनिओने अकल्प्य एवी वस्तु पोते भेट धरी ते बदल कांइक ग्लानि थइ छतां पण पोते भोळे भावे फळनी भेट धरेली होवाथी 'फलेन फलमाप्नुयात्' ए न्याये मने इच्छित फळनी प्राप्ति तो अत्रे थशे ज एवी धारणाथी मनने संतोष थयो त्यार पछी मुनिश्रीए रामकुमारजीने आकृति उपरथी ज बोध देवा लायक जाणीने उपदेश रूपे जणाव्युंके हे महानुभाव ! ज्यारे तमे आ संसारना त्यागिपणानो वेप लीधो छे तो हवे ए लीधेलो वेप यथार्थरीते भजवाय एवो प्रयत्न करवानी आवश्यकता छे, लीधेला वेपने यथार्थ नहि भजवी शकाय तो तो पछी उभयतो भ्रष्ट जेवी स्थिति थाय छे माटे हवे समजीने के समज्या विना ज्यारे आ त्यागिपणानो वेप लीधो छे तो हवे पूरेपूरा त्यागी थवा माटे आत्मबळ फोरववानो प्रयत्न करशो तो जरुर सफळ थशो एवी मारी अन्तरनी आशिष छे ।

ए प्रमाणे थोडी पण अत्यंत मधुर वाणी सांभळीने खूब प्रसन्न थयेला रामकुमारजीए पं० श्रीदयाविमलजीनी भलामण सहित पोतानो मनोगत भाव जणाव्यो, मुनिश्री पण पोताना उपदेशनुं अत्यंत शीघ्र फळीभूत थवुं जोइने घणा प्रसन्न थया

अने रामकुमारजी साथे थोडो परिचय थया पछी भागवती दीक्षाने योग्य जाणी सं० १९४९ ना आषाढ सुदी ६ ना रोज श्रीमोहनलालजी महाराजे रामकुमारजीने दीक्षा आपी पोताना वडील शिष्य श्रीयशोमुनिजीना शिष्य तरीके श्रीऋद्धिमुनिजी नाम स्थापन कर्युं, त्यार पछी एक दिवसे आ नूतन मुनिने उपवासनुं पारणुं हतुं त्यारे शीरो रावडी दूध वगेरे पौष्टिक वस्तुओ मोटा महाराजे पारणामां वापरवा अपावी ते वखते आ नूतन मुनिने एवो विचार उत्पन्न थयोके साधुओए तो अरस विरस लूखो सूको आहार करवो जोइए छतां ते वखते ते विचार मनमां ज राखीने मोटा महाराजनी शरमथी कांइ पण बोल्या विना पारणुं करी लीधुं अने पछी बपोरना टाइमे दरेक साधुओ ज्यारे पोतपोताना क्रियाकांडमां हता ते वखते आ नूतनमुनि लाग जोइने कोइने पण कह्या विना त्यांथी रवाना थइ गया अने तलाटीमां वाघूना मन्दिरमां दर्शन करी पहाड उपर आवेली श्रीपूज्यजीनी टूंकमां जइने पहेली रात्रि त्यां ज पसार करी, त्यां रह्या रह्या विचार करवा लाग्याके अमारा यतिपणामां गुरु महाराजनी कृपाथी खावा पीवानी खूब मोज मझा करता हता ते मोज मझानो त्याग करवा माटे तो त्यांथी महामुश्केलीए छुटीने हुं अहीं आव्यो तो अहीं पण ए मोज मझा तो बे डगलां आगळनी आगळ ज आवीने खडी थइ गइ, ठीक छे हुं पण जोउं छुं के ए मोज मझा क्यां सुधी मारी आगळ टकी शके छे एवा एवा विचारमां रात्रि पूरी थतां प्रातःकालना नित्यकर्मथी परवारी

श्रीआदीश्वरप्रभुनी मोटी ट्रूंकमां दर्शन करी त्यांथी चन्दन तलावडीए गया, त्यां सारी मोटी शिला उपर सुता सुता काउस्सग्गध्यानमां केटलोक टाइम वीतावी त्यांथी भाडवाना डूंगर उपर जइ त्यां आवेली देरी पासे त्रण दिवसना उपवास करी त्यांज रह्या, बीजे दिवसे त्यांनो पूजारी आ नूतन मुनिने जोइ गयेलो तेणे पालीताणा गाममां आ मुनिनी शोधाशोध थती सांभळीने शेठ आणंदजी कल्याणजीनी पेढीमां जइने वात करी दीधी, त्यांना मुनीमे ते वात तरत श्रीमोहनलालजी महाराजने जणावी, पछी बीजे दिवसे पेढी तरफथी डोळी मोकलावी नूतनमुनिने खबर आप्याके अहीं पहाड उपर रात रहेवानो सरकारी हुकम नथी माटे तरत शहेरमां पधारो, ते वात सांभळीने डोळीवाळानी साथे ज आपणा चरित्रनायक श्रीमोहनलालजी महाराज पासे आव्या, मोटा महाराजजीए गंभीरपणाए करीने कांइ पण ठपको आप्यो नहि, पछी मोटा महाराजजीनी आज्ञाथी अहमनुं पारणुं कर्युं ।

अगाउ यतिपणामां ज्यारे उपवास करी पारणुं करता त्यारे आ नूतन मुनिने उलटी थया करती हती परन्तु भाडवाना डूंगर उपर रहीने अट्टम कर्या पछी पारणुं करतां ते तकलीफ सदाने माटे बंध थइ गई ए प्रताप पवित्र गिरिराजनो अनुभवमां आव्यो तेथी आ नूतनमुनिने ए पवित्र तीर्थ प्रति घणीज श्रद्धा प्रगट थई तथा आज सुधीना दीर्घकाळना दीक्षापर्यायमां एमणे जे जे कठिन तपस्याओ करी छे ते बधो प्रताप ए परम पवित्र सर्वोत्कृष्ट तीर्थनो ज छे ।

त्यार पछी वगर रजाए चाल्या जवानुं अने डूंगर उपर ज अट्ठम करीने रहेवानुं कारण मोटा महाराजजीना जाणवामां आव्याथी तेमणे आ नूतनमुनिने हितशिक्षा आपेली के सर्व वस्तु उपर त्यागवृत्ति राखीने मुख्यताए जंगलमां ज रहेवुं अने आहार विना ज्यारे धर्मध्यानमांथी चित्त चलायमान थवा मांडे त्यारे ज वसतिमां जइ मुनिने कल्पे एवो निरस आहार लावी शरीरने टकावी राखी धर्मध्यानमां मस्त रहेवुं एवो मुनिनो धर्म छे, अने एवा उत्कृष्ट मार्गने अनुसरनाराओने जोइने हुं घणो खुशी थाउं छुं, परन्तु हजी तमारी दीक्षाने झाझो टाइम थयो नथी तेथी तमे पहेलां तो बीजा मुनिओना संसर्गथी ज्ञान संपादन करो अने त्यार पछी तमारी भावनानुसार उत्कृष्ट मार्गनुं आलम्बन लेशो तो तमारुं जल्दी कल्याण थशे, एवा प्रकारना श्रीमोहनलालजी महाराज साहेबना समयोचित उपदेशथी आपणा चरित्रनायकनो श्रीमोहनलालजी महाराज उपर घणो ज भक्तिराग प्रगट थयो ते कारणथी ज श्रीमोहनलालजी महाराजना स्वर्गवास सुधी तेमनी सेवा भक्ति अने छत्रछायामां मोटे भागे रह्या अने पठन पाठन तप जप विनय वैयावच्चादि सत्कार्योनो लाभ लीधो।

श्रीमोहनलालजी महाराजना शिष्य प्रशिष्यादिकमांथी बीजा पण केटलाक मुनिराजने मोटा महाराजनी सेवामां अहर्निश रहेवानी भावना थती अने तेवी प्रार्थना पण तेओ करता परन्तु ते बधाने एवो लाभ मोटा महाराजजीए झाझो आप्यो नहि ज्यारे आपणा आ चरित्रनायकना विनयादिक गुणो अने सेवाभक्तिथी

मोटा महाराजजी एवा प्रसन्न रहेता के पोतानी अन्तिमावस्था सुधी तेमणे आपणा चरित्रनायकने घणे भागे पोतानी पासे ज राख्या हता, एटला उपरथी वाचकवर्गने पण खातरी थई हशे के श्रीमोहनलालजी महाराज उपर आपणा चरित्रनायकने केवी निर्मळ अने अनहद भक्ति हती ।

एवा जगत्पूज्य क्रियापात्र परमयोगी दरेक गच्छना संघोने मान्य अने वचनसिद्धिवाळा सद्गुरुनी अनुपम सेवा भक्तिथी ज आपणा चरित्रनायकना उपदेशथी केवां केवां जैनधर्मनी प्रभावना करवावाळां सत्कार्यो थयां छे ते वधां अनुक्रमे आगळ लखवामां आवशे के जे जाणवामां आव्याथी बीजाओने पण उत्तम सद्गुरुनी सेवा भक्ति करवामां प्रोत्साहन मळशे ए निःशंक वात छे ।

सं० १९६३ नी सालमां श्रीमोहनलालजी महाराज सुरतमां स्वर्गवासी थया त्यां सुधी तो प्रायः सदैव तेमनी हजूरमां ज आपणा चरित्रनायक रहेला होवाथी खास एकाद बे प्रसंग सिवाय कांइ विशेष जाणवा योग्य न होवाथी ते एकाद बे प्रसंग जणावीने त्यार पछीना एमना स्वतंत्र विहारना प्रसंगोनुं सविस्तर वर्णन करवामां आवशे ।

आपणा चरित्रनायकनां सं. १९४९ थी सं. १९५५ सुधीनां सात चोमासां मोटा महाराजनी साथे ज अनुक्रमे पालीताणा सुरत मुंबई मुंबई अमदावाद पाटण अने सुरतमां थयां हतां, सं. १९५६ नी सालमां वलसाडना श्रावकोनी विनतिथी प्रतिष्ठा प्रसंगे वलसाड जवानी गुरुमहाराजनी आज्ञा थवाथी सुरतथी

विहार करी नवसारी थइने श्रीऋद्धिमुनिजी महाराज वलसाड पधार्या, त्यां शा० डाह्याभाई केसुरजी तथा शा० मंगनभाई रायचन्द तरफथी एमना सान्निध्यमां त्यांना जैन मन्दिरना गोखलामां प्रभुप्रतिमानी प्रतिष्ठा करावी अट्ठाइ महोत्सव तथा शांतिस्नात्र वगेरे धार्मिक कार्यो अने आठ दिवसनां संघजमण उपरोक्त बन्ने शेठ तरफथी करवामां आव्यां हतां त्यार बाद वलसाडथी विहार करी सुरत पधारी सं० १९५६ तथा १९५७ नुं आठमुं तथा नवमुं चोमासुं एमनुं सुरतमां मोटा महाराजनी सेवामां थयुं हतुं त्यार बाद सुरतथी विहार करी सं० १९५८ नुं दशमुं चोमासुं मुंबईमां मोटा महाराजनी साथे कर्युं. चोमासा बाद रोहिडाना शेठ रायचंदजी मूथाए मुंबईमां श्रीमोहनलालजी महाराज पासे आवीने प्रार्थना करी के अमारा गाममां जैन मन्दिरनी प्रतिष्ठा कराववी छे माटे आपना शिष्योने अमारे गाम मोकलवानी कृपा करो, तेमनी विनतिथी मोटामहाराजजीए पोताना मुख्य शिष्य श्रीयशोमुनिजी आदि ८ शिष्योने मारवाड जवानो हुकम कर्यो तेथी श्रीयशोमुनिजी तथा श्रीऋद्धिमुनिजी आदि मुनिओए गुरु महाराजनी आज्ञानुसार मुंबईथी विहार करीने सुरत अमदावादने रस्ते श्रीतारंगा अने कुंभारिया तीर्थनी यात्रा करीने खराडी थइ आबू तथा अचलगढनी यात्रा करीने रोहिडामां धामधूमथी प्रवेश कर्यो, त्यां आठ दिवसनां महोत्सव तथा संघजमण पूर्वक सं. १९५९ ना माघ सुदी ५ ने दिवसे शुभ मुहूर्ते जैन मंदिरनी प्रतिष्ठा करावी,.

पछी रोहिडाथी विहार करी शिरोही जिल्लानी नाणा नांदीया वगेरे पंचतीर्थीनी यात्रा करी झाडोली पिंडवाडा अंजारी अने बेडा थई बीजापुरमां राता महावीरनी यात्रा कर्याबाद सेवाडी लूणावा अने सादडी थइने श्रीराणकपुरतीर्थे पधार्या त्यां आवेला १४५२ स्तंभवाळा सर्व जैन मन्दिरोमां मोटामां मोटा मन्दिरनी यात्रा करीने ते मन्दिरनी बांधणी जोइ ते बंधावनार खर्च करवामां करेली उदारतानी प्रशंसा करी आनन्द पाम्या, त्यार पछी त्यांथी विहार करी भाणपुरा सायरा ढोल अने मोटागाम थइ उदयपुर पधार्या, त्यांना जैन मन्दिरोनां दर्शन कर्या बाद घणा जैनेतरो पण जेने काळीया बाबाना उपनामथी पोताना इष्टदेव तरीके माने छे एवा महाप्रभावक श्रीकेसरीयाजी तीर्थनी यात्रा करवा गया अने आनन्द पूर्वक यात्रा करी पाछा उदयपुरने रस्ते घाणेरावनी नाळ उतरी घाणेराव देसुरी नाडलाई नांडोल तथा वरकाणा पार्श्वनाथनी यात्रा करीने राणीगाम खीमेल खूडाला शिवगज पोसालीया तथा पालडी थइने जावाल पधार्या त्यांना दर्शन करी पाछा शिवगंज गया त्यां मुंबईथी श्रीमोहनलालजी महाराजनो हुकम आव्यो के हमणां जोधपुर जवानी आवश्यकता छे माटे जल्दी त्यां जइ चोमासुं करो तेथी शिवगंजथी विहार करी श्रीयशोमुनिजी ऋद्धिमुनिजी प्रतापमुनिजी भक्तिमुनिजी छगनमुनिजी अने सिद्धिमुनिजी आदिए जोधपुर जइने सं० १९५९ नुं चोमासुं आहोरना ठाकोरनी हवेलीमां कर्युं, ए रीते आपणा चरित्रनायकनुं अगीयारमुं चोमासुं जोधपुरमां थयुं । चोमासा बाद मोटा महाराजजीए

श्रीऋद्धिमुनिजी छगनमुनिजी तथा सिद्धिमुनिजीने मुंबई बोलावी लीधा तेथी ए त्रणे मुनिओ जोधपुरथी विहार करी मुंबई गया अने मोटा महाराजनी सेवामां चोमासुं कर्युं ए रीते श्रीऋद्धिमुनिजीनुं सं० १९६० नुं बारमुं चोमासुं मुंबईमां थयुं । चोमासा बाद आपणा चरित्रनायक श्रीऋद्धिमुनिजी मुंबईथी विहार करीने ठाणा पनवेल लानोली तलेगाम डाभाडा बाबागाम घोडनदी अहमदनगर औरंगाबाद जालना अने लूणारमां धर्मोपदेश आपता अने देवदर्शन करता आ कलिकाळमां पण पोतानो प्रभाव देखाडी रहेला श्रीअन्तरीक्षपार्श्वनाथनी यात्राए सीरपुर पधार्या, भक्ति अने उल्लास पूर्वक त्यांनी यात्रा करीने त्यांथी विहार करी बाळापुर खामगाम मलकापुर जलगाम अमलनेर धूळीया नेर कोडावारी ईसरवाडी नवापुरा सोनगढ व्यारा वाजीपुरा अने बारडोली वगेरे स्थळोमां देवदर्शन तथा धर्मोपदेश करता करता सुरत शहेरमां पधार्या अने अंकलेश्वरना श्रावकोनी घणी विनति होवाथी अंकलेश्वरमां चोमासुं करवा माटे श्री गुमानमुनिजी साथे विहार करवानुं नक्की कर्युं एटलामां सुरतमां गोपीपुराना मैनरोड उपर मोहनलालजी जैन उपाश्रयने नामे प्रसिद्ध थयेलो राजमहेल जेवो नवो उपाश्रय बंधावनार शेठ नगीनचन्द कपूरचन्द झवेरी तथा शेठ कस्तूरचन्द कल्याणचन्द झवेरी ए बन्ने जणाए आवीने महाराज साहेबने कह्युं के आ नवा उपाश्रयमां ज आप चोमासुं करो एवी अमारी विनति छे, जवाबमां महाराजजीए जणाव्युं के में हजी वधारे ज्ञानाभ्यास कर्यो नथी माटे आ मोटा शहेरमां

मारा जेवा थोडुं भणेलाने चोमासुं करवानी विनति शा माटे करो छो मारो तो अंकलेश्वर जेवा नाना क्षेत्रमां चोमासुं करवानो भाव छे त्यारे तेओए कह्युं के अत्रे पंडित पासे भणवानो योग छे माटे अत्रेज स्थिरता करीने चोमासुं करो अने भणवा गणवानुं करो अत्रेथी आपने अमे जवा दइशुं नहि, ए अरसामां श्रीचतुरमुनिजी त्यां पधार्या पछी बन्ने मुनिओ सुरतना श्रावकोनो आग्रह होवाथी मोटा महाराजनी आज्ञा मंगावी सुरतमां ज रोकाइ गया, श्रावकोनी भक्ति तथा भणवानो सारो योग मळी जवाथी आपणा चरित्रनायक श्रीऋद्धिमुनिजीनुं सं० १९६१ नुं बारमुं चोमासुं तथा सं० १९६२ नुं तेरमुं चोमासुं पण सुरतमां थयुं ते दर्म्यान महाराजजीए अभ्यास पण सारो करी लीधो, वचमां सं० १९६१ ना चोमासा बाद बुहारीमां जैन मन्दिरनी प्रतिष्ठा करवा माटे त्यांना संघनो घणो आग्रह थवाथी सुरतथी विहार करी श्रीऋद्धिमुनिजी तथा श्रीचतुरमुनिजी बुहारी पधार्या अने सं० १९६२ना मागसर सुदी ५ ना शुभ मुहूर्ते त्यांना मन्दिरमां आठ दिवसना उत्सव शान्तिस्नात्र अने संघजमण पूर्वक श्रीवासुपूज्यस्वामीनी प्रतिष्ठा करावी, ते वखते जैन धर्मनी सारी प्रभावना थइ हती तेमज प्रतिष्ठा प्रसंगना दरेक कार्यो निर्विघ्न समाप्त थयां हतां । प्रतिष्ठा प्रसंगे उत्सवना दिवसोमां जैन मन्दिरनी बाहेरना मंडपमां त्यां भेगा थयेला लोको एक ग्रामोफोन वाजुं लावी वगाडवा लाग्या तेमां अनेक तरेहनां गायनो पैकी केटलांएक अश्लील गायनो पण हतां ते सांभळवा माटे घणां माणसो

भेगां थयेलां हतां, ते वखते आपणा चरित्रनायके ते टोळामांना आगेवानोने बोलावीने कह्युं के आवां अश्लील गायनो आ स्थानमां नहि वगाडो कारणके एथी धर्मनी आशातना अने हांसी थाय छे, त्यारे ते लोकोए महाराज साहेबना कथनने नहि गणकारतां जवाब आप्यो के आपने एमां शुं हरकत छे, अमे अमारे बे घडी मोज करीये छीए एम कहीने चाल्या गया, पछी महाराज साहेबे पोते मौन धारण करीने जे कंइ करवानुं हतुं ते करी लीधुं, पेला लोको मंडपमां जइने बेठा पछी वाजावाळाए गायनो वगाडवानुं शरु कर्युं परन्तु वाजामांथी अवाज नीकळवो बीलकूल बंध थइ गयो, कांइ वांकुं चुंकुं थयुं हशे एम समजी ते वाजावाळाए तथा बीजापण केटलाकोए बारीकीथी तपासी जोयुं पण कांइ वांकुं चुंकुं थयेलुं जणायुं नहि तेथी ते दरेक जणाए वाजुं वगाडवानी जात जातनी कोशिष करी जोइ परन्तु वाजाए तो सर्वथा मौन धारण करनारा योगीनी माफक अवाज नहि कर्यो ते नहि ज कर्यो, आखरे बधा समजी गया के आ चमत्कार जरुर महाराज साहेबनी चमत्कारिक शक्तिथी ज थयेलो छे माटे महाराजश्रीने मनाव्या सिवाय आपणो दहाडो वळे एम नथी एवो निश्चय करीने केटलाक आगेवानो महाराजश्री पासे गया अने कह्युं के साहेब अमे आपनी अवज्ञा करी ते बदल माफी मागीए छीए अने हवे कृपा करीने आपनो चमत्कार पाछो खेंची लो, महाराजश्रीए तेओने जणाव्युं जे तमे तमारे बे घडीने बदले चार घडी मोज मझा करी लो, एवो जवाब

२

सांभळीने बीजा बधा तो ठीक पण पेला वाजानो मालिक घणी फीकरमां आवी पड्यो अने करगरीने कहेवा लाग्यो के साहेबजी आमां मारे बहु नुकशानमां उतरवुं पडशे माटे महेरबानी करो हवे मंडपमां हुं वाजुं नहि वगाडुं त्यारे महाराजजीए वाजा-वाळाने कह्युं के तारुं वाजुं उठावीने देरासरनी हदनी बाहेर लइ जइने वगाडी जो ते प्रमाणे तेणे करी जोयुं तो महाराज साहेबना मौनव्रतनी साथे वाजाना मौनव्रतनो पण अंत आवेलो जणायो तेथी बधा लोको खूश खूश थइ गया अने महाराजश्रीनो आवो चमत्कार देखी चमत्कृत थइ थया, ए बनावथी आखा सुरत जिल्लामां आपणा चरित्रनायक चमत्कारी महाराज तरीके प्रख्यात थया अने केटलाक जैन जैनेतरो तो एमने वाजुं बंध करावनार महात्मा तरीके ज ओळखवा लाग्या।

त्यार पछी बुहारीथी विहार करी सुरत पधार्या अने मोटा महाराजश्रीए मुंबईथी सुरत तरफ विहार कर्यो त्यारे श्रीऋद्धि-मुनिजी महाराज मुंबई तरफ मोटा महाराजजीनी सामे विहार करीने दाहाणुं मुकामे श्रीमोहनलालजी महाराजनी सेवामां हाजर थया, त्यार बाद मोटा महाराजजीनी साथे विहार करता करता सुरत पधार्या त्यां सं. १९६२ ना चैत्र वद १२ ना रोज श्रीमोहनलालजी महाराजनो स्वर्गवास थयो, त्यार बाद विहार करी कठोर पधार्या अने श्रीकान्तिमुनिजी तथा श्रीकल्याणमुनिजी साथे आपणा चरित्रनायके सं. १९६२ नुं पंदरमुं चौमासुं कठोरमां कर्युं, गुजराती अने मारवाडी साथमां परस्पर क्लेश चालतो हतो ते घणा प्रयत्नथी महाराजश्रीए दूर

कराव्यो तेनी खुशालीमां सायणवाळा शेठ पानाचन्द नानचन्दे संघजमण कर्युं हतुं तथा श्रीसंघे त्यांना मन्दिरना चोकमां नकशीदार आरसनो गोखलो करावी तेमां महा प्रभावक जगत्पूज्य श्रीमोहनलालजी महाराजना चरणनी स्थापना करी हती ।

कठोरना मारवाडीसंघे नवुं जैन मन्दिर तैयार कराव्युं हतुं परन्तु पैसा घटी पडवाथी अने कुसंप हतो तेथी प्रतिष्ठानुं काम अटकी पडेलुं हतुं ते बाबत त्यांना मारवाडी समाजना आगेवान शेठ जयचन्दभाईने तथा शेठ भीमाजीने बोलावीने महाराजजीए कह्युं के हवे तमे ज्यां सुधी रु. १००० टीपमां न भराय त्यां सुधी कठोरमां पग मुकवो नहि एवी प्रतिज्ञा करीने बाहेरगाम टीप करवा जाव, महाराजश्रीनी आज्ञा शिरोमान्य करीने महाराजश्रीए आपेला एवा शुभ मुहूर्तमां टीप करवा कठोरथी प्रयाण कर्युं के बीजेज दिवसे रु. १००० लइने पाछा कठोर आव्या, ते उपरथी तेओने तथा आखा मारवाडी साथने एवी सचोट श्रद्धा बेसी गइ के आ महाराजजीनी कृपादृष्टिथी आपणा दरेक विघ्नो दूर थइ प्रतिष्ठानुं काम पार पडशे तेथी प्रतिमा लेवा जवा माटेनुं मुहूर्त काढी आपवानुं महाराजजीने जणाव्युं, महाराज साहेबे तेओने कह्युं के आजे अहीं शान्तिस्नात्र तथा संघजमण छे तेनो लाभ लइने आजे ज तमे प्रतिमा लाववा माटे रवाना थइ जाव तो तमारुं काम जल्दी थइ जशे एवो आजनो दिवस छे, महाराजजीना वचनमां विश्वास उपजेलो होवाथी बीजुं बधुं काम पडतुं मुकीने ते ज दिवसे संघना माणसो रवाना

थया ने मारवाडमां आवेला पोसीना तीर्थमां पांच जैन प्राचीन मन्दिरो छे त्यांथी संप्रतिराजाना वखतनी श्रीशान्तिनाथ भगवान आदिनी मनगमती त्रण प्राचीन प्रतिमाओ लइने कठोर आव्या ते वखते त्यांना राज्यमान्य नगरशेठ मोहनलाल लक्ष्मीचन्द दसाडीयाए पोताना बंगलामां पहेलां प्रतिमाजीने पधराव्यां हतां तेनां दर्शन करवा जैन जैनेतरोनां टोळे टोळां उतरी पड्यां हतां, प्रतिमानुं कद मोटुं होवाथी लोको एम धारवा लाग्या के बे त्रण जणाथी आ प्रतिमा उंचकाशे नहि परन्तु उपाडी जोतां तो घणी हलकी जणाइ तेथी लोको समजवा लाग्या के प्रतिमाजी बहु चमत्कारी जणाय छे, त्यार पछी सं. १९६४ ना मागसर सुदी ३ ना शुभ मुहूर्ते आठ दिवसना महोत्सव शान्तिस्नात्र अने संघजमण पूर्वक श्रीशान्तिनाथ भगवाननी प्रतिष्ठा करावी, ते प्रसंगे महाराजश्रीना प्रभावथी उपज पण घणी सारी थइ हती, मारवाडी समाजे ज्यारथी कठोरमां श्रीशान्तिनाथ भगवाननी पधरामणी करावी छे त्यारथी कठोरना मारवाडी समाजनी आज सुधी उत्तरोत्तर दरेक प्रकारनी आबादी थती रही छे तेमज ए लोकोनी धर्मभावना पण चढती रही होवाथी एमणे बीजां पण अनेक सत्कार्यो कर्यां छे।

कठोरनी प्रतिष्ठा प्रसंगे वयोवृद्ध महाराज श्रीकान्तिमुनिजी त्यागमूर्ति श्रीदेवमुनिजी मारवाडमां महदुपकार करनार श्रीकेशरमुनिजी तथा ए कठोरनी वीसाश्रीमाळी ज्ञातिमांथी बाल्यवयमां दीक्षित थयेला विद्याविलासी श्रीक्षमामुनिजी आदि श्रीमोहनलालजी महाराजना घणा शिष्य प्रशिष्यो कठोरमां पधारेला

हता ते वधाए परस्पर एक बीजाना विचारो जणावी एवो निश्चय करेलो के हवे आपणा समुदायमां पं० श्रीयशोमुनिजीने आचार्यपदे स्थापवा अने ते बाबतनी बधा साधुओए सही करीने ते कागळ त्यां हाजर रहेला सौथी वडील महाराज श्रीकान्तिमुनिजीने सोंप्यो हतो।

त्यार बाद कडोद गामना आगेवान शेठ मोतीचन्द जगनाथजी तथा शेठ मोतीचन्द राजाजी वगेरेए आवीने आपणा चरित्रनायकने विनति करी के जेवी रीते आपे अत्रे प्रतिष्ठानुं काम सांगोपांग पार उतार्युं तेवीज रीते अमारी उपर कृपा करीने अमारा गाममां पधारी प्रतिष्ठा करावी आपो, ते टाइमे पं० श्रीहर्षमुनिजीना उपदेशथी शेठ नगीनचन्द कपूरचन्द झवेरीये सुरतथी छ री पाळतो झगडीया तीर्थनो संघ काढेलो ते कडोर आवी पहोंच्यो होवाथी महाराजजीए कडोदवाळाने कह्युं के आ संघ साथे झगडीयानी यात्रा कर्या बाद कडोद आववानी मारी भावना छे तेथी कडोदना श्रावको घणो संतोष पाम्या। त्यार पछी संघ साथे झगडीया तीर्थनी यात्रा करीने मांगरोळ तडकेश्वर अने वहुधान थइने महाराजश्रीए कडोदमां धामधूमथी प्रवेश कर्यो अने धर्मोपदेश चालु करी पहेलां तो त्यांना संघमां घणा वखतथी कुसंप चाल्या करतो हतो ते दूर कराव्यो, गाममां संप थइ गया पछी प्रतिष्ठाना काम संबंधी उपदेश आपीने सर्वेने हळी मळीने प्रतिष्ठानुं काम पार पाडवा तैयार कर्या अने आठ दिवसना महोत्सव तथा संघजमण पूर्वक सं० १९६४ ना माघ महिनामां शुभ मुहूर्ते श्रीशान्तिनाथ भगवाननी प्रतिष्ठा करी।

परस्पर कुसंपना कारणे अटकी पडेलां प्रतिष्ठा जेवां मोटां धार्मिक कार्यो आपणां चरित्रनायकने हाथे निर्विघ्न पार पडतां हतां तथा अणधारेली शासनोन्नति थती हती तेथी आसपासनां बीजां जे जे गामोमां प्रमाद अने कुसंपे पोतानो पगदंडो जमावी प्रतिष्ठा वगेरे धार्मिक कार्यो अटकावी राखेलां हतां ते प्रमाद अने कुसंप पण महाराजश्रीना प्रतापने सहन नहि करी शकवाथी स्वयमेव स्थानान्तर करवानी तैयारी करवा लाग्या, तेमां सौथी पहेलां कठोर अने कडोदनो प्रतिष्ठानुं कार्य महाराज साहेबना प्रभावथी निर्विघ्नपणे पार पडेलुं पोतानी नजरे जोनारा व्यारावा संघना अग्रेसरोए महाराज साहेबने विनति करी के साहेबजी कठोर अने कडोदमां जेवी रीते आपे अटकी पडेली प्रतिष्ठाओ करावी आपी छे तेवी ज रीते हवे अमारा गामनी प्रतिष्ठानुं काम पार उतारी आपो । परोपकारपरायण अने जैनधर्मनां अटकी पडेलां सत्कार्यो श्रावकोने सचोट धर्मोपदेश आपीने पहेली तके शरु कराववानी जैनसाधुनी खास फरज छे एवुं माननारा श्रीऋद्धिमुनिजी महाराज तरत तेओनी विनति स्वीकारीने कडोदथी विहार करी व्यारे पधार्या अने सौथी पहेलां त्यांना संघमां आळसे स्थिर वास कर्यो हतो तेने विहार करावी दीधो एटले प्रतिष्ठाना कार्य माटे त्यांना संघमां उत्साहनी पधरामणी थइ तेथी त्यांना संघे दरेक कार्यमां एक बीजाने उमंगभेर साथ आपीने आठ दिवसना महोत्सव शान्तिस्नात्र तथा आठ संघजमण पूर्वक घणा आडम्बरथी सं० १९६४ ना

वैशाख मासमां महाराजश्रीना वरदहस्ते श्रीअजितनाथ प्रभुनी प्रतिष्ठा करावी ते प्रसंगे महाराजश्रीना उपदेश अने प्रभावथी उपज घणी सारी थइ हती। त्यारामां प्रतिष्ठानुं कार्य पुरुं थयुं एटले वाट जोई रहेला वारडोली तालुकाना सरभोण गामना श्रावकोए पोताना गाममां प्रतिष्ठा करावका माटे महाराजश्रीने सरभोण पधारवानी विनति करी ते स्वीकारीने त्यांरेथी विहार करी महाराजजी सरभोण पधार्या अने धर्मोपदेश द्वारा त्यांना संघमां उत्साह प्रगटावी आठ दिवसना महोत्सव संघजमण अने शान्तिस्नात्र पूर्वक सं. १९६४ ना जेठ मासमां त्यांना जैन मन्दिरनी प्रतिष्ठा करी। त्यार वाद सुरतना शेठ दलीचन्द वीरचन्द सराफे सुरतमां नवापुराने उपाश्रये पधारवानी विनति करीने जणाव्युं के मारा पिताश्रीना श्रेयार्थे आठ दिवसना महोत्सव पूर्वक नवापुराना जैन मन्दिरना भोंयरामां शामळा पार्श्वनाथ प्रभुनी प्रतिष्ठा आपना हाथे कराववानो मारो भाव छे माटे मारी उपर कृपा करीने आप सुरत पधारो, तेओनी विनति स्वीकारीने महाराज साहेब सामैया सहित सुरतमां प्रवेश करी नवापुराने उपाश्रये पधार्या, त्यार पछी जगत्पूज्य श्रीमोहनलालजी महाराजना परम भक्त शेठ दलीचन्दभाईए आठ दिवसना महोत्सव अने संघजमण पूर्वक शामळा पार्श्वनाथनी प्रतिष्ठा आपणा चरित्रनायक श्रीऋद्धिमुनिजी महाराजना वरद हस्ते करावी हती। ते वखते महाराजश्री जे उपाश्रयमां उतर्या हता ते घणो जूनो तेमज अगवडवाळो हतो तेथी महाराज साहेबे साधुओने दरेक प्रकारनी सगवडवाळा, उपाश्रयनी

जरुरीयात जणावनारो उपदेश देवा मांड्यो, ते उपदेशनी असरथी नवापुराना शेठ मगनभाई देवचन्दनी धर्मपत्नी श्रीमती सूरजबेने रु. १५००० खरची जाहेर रस्ता उपर बे माळनो नवो उपाश्रय कराव्यो, हवे ते उपाश्रय सगवडवाळो थवाथी साधुओनी स्थिरता अवार नवार थया करे छे। त्यार बाद महाराजश्री विहार करी रांदेर थइने ओलपाड पधार्या, त्यांनुं जैन मन्दिर घणुं जीर्ण थइ गयुं हतुं तेथी श्रावकोने उपदेश आपी ते मन्दिरनो जीर्णोद्धार कराव्यो पछी पाछा सुरत पधारी शेठ दलीचन्द वीरचन्द तथा शेठ कृष्णाजी जोधाजी वगेरे नवापुराना आगेवानोना आग्रहथी महाराज साहेबे सं. १९६४ नुं सोलमुं चोमासुं सुरतमां नवापुराना उपाश्रये कर्युं।

चोमासा बाद पोताना गुरु महाराज पं० श्रीयशोमुनिजीनी आज्ञा आववाथी सुरतथी विहार करी कठोर मांगरोळ झगडीया डभोई छोटाउदयपुर आलीराजपुर कुकसी राजगढ अने धार थइने मांडवगढ तीर्थनी यात्राए पधार्या, ते वखते रतलाम शहेरथी रायबहादूर शेठ चांदमलजी कोटावाळाए पं० श्रीयशोमुनिजी महाराजना उपदेशथी काढेला मांडवगढना संघ साथे पोताना गुरुमहाराज पं० श्रीयशोमुनिजी साधु समुदाय सहित त्यां पधारेला होवाथी आपणा चरित्रनायकने एक साथे स्थावर अने जंगम तीर्थना दर्शननो लाभ मळवाथी घणो ज आनन्द थयो। त्यार पछी ते मांडवगढ तीर्थमां ज सारुं मुहूर्त जोइने गुरु महाराजे श्रीऋद्धिमुनिजी आदि ४ मुनिवरोने उत्तराध्ययनसूत्रना योगोद्-

हननो प्रारंभ कराव्यो, पछी बधा साधुओनी पवित्र तीर्थ श्रीसमेतशिखरजीनी यात्रा करवानी भावना थवाथी ते दिशाए विहार लम्बावी मांडवगढथी विहार करी अनुक्रमे इन्दोर देवास मकसीतीर्थ सारंगपुर अने ब्यावरा थइने गूना-सिटी पधार्या त्यां श्रीगुमानमुनिजी आवी मळ्या तेमने पण त्यां योगोद्वहनमां प्रवेश कराव्यो, पछी त्यांथी विहार करी शिवपुरी थइने ग्वालीयर लश्कर पधार्या अने सींधीया नरेशना खजांची शेठ नथमलजी गुलेच्छाना आग्रहथी पोताना गुरु महाराजनी छत्रछायामां आठ साधुना समुदायमां श्रीऋद्धिमुनिजी महाराजनुं सं० १९६५ नुं सत्तरमुं चोमासुं ग्वालीयरमां थयुं। चोमासा बाद पांचे साधुओना योग पूरा थया एटले सं. १९६६ ना मागसर सुदी ३ ना दिवसे पं० श्रीयशोमुनिजीए श्रीगुमानमुनिजी श्रीऋद्धिमुनिजी अने श्रीकेशरमुनिजीने पंन्यास पदवी तथा श्रीरत्नमुनिजी अने श्रीभावमुनिजीने गणी पदवी अर्पण करी, ते प्रसंगे शेठ नथमलजी गुलेच्छाए आठ दिवसनो महोत्सव घणा ठाठमाठथी कर्यो हतो।

त्यार पछी श्रीसमेतशिखरजीनी यात्रा माटेना विहारनी तैयारी थइ ते वखते आपणा चरित्रनायक पं० श्रीऋद्धिमुनिजीनी तबीयत नरम होवाथी गुरु महाराजनी आज्ञा लइने पोते त्यांज रह्या अने पं० श्रीयशोमुनिजी आदिए शिखरजीनी यात्रा माटे विहार कर्यो, रस्तामां आगरा कानपुर इलाहाबाद अने बनारसनी यात्रा करी श्रीसमेतशिखर पहोंच्या, त्यांनी यात्रा करी राणीगंज अने बरद्वान थइने कलकत्ते पहोंच्या त्यां

सुधीनी बधी सगवड शेठ नथमलजी गुलेच्छाए ग्वालीयरथी करी आपी हती ।

त्यार पछी पंन्यासजी श्रीऋद्धिमुनिजीनी तबीयत ज्यारे सुधरी गइ त्यारे ग्वालीयरथी विहार करीने मोरेना तथा धोळपुर थइने आगरे पधार्या, त्यां थोडा दिवस स्थिरता करीने पछी त्यांथी जयपुर तरफ विहार कर्यो, अनुक्रमे भरतपुर महवा बांडीकुइ अने डौसा थइने जयपुर पधारी सं० १९६६ नुं अढारमुं चोमासुं त्यांना संघना आग्रह थी जयपुरमां कर्युं, त्यां पंन्यासजी महाराजे एकीसाथे ८१ आयंबीलनी तपस्या करी, पर्युषण प्रसंगे आगराथी शेठ तेजकरणजी चांदमलजी अजमेरथी शेठ हीराचन्दजी संचेती अने मुंबईथी शेठ मणिलाल उत्तमचन्द झवेरी तथा शिवराजजी झवेरी वगेरे घणां माणसो बहारगामथी महाराजजीनुं चोमासुं जयपुरमां जाणीने पर्युषण पर्वनी आराधना करवा जयपुर आव्यां हतां तेथी ते सालमां पर्युषण संबंधी दरेक धार्मिक कार्यो जयपुरमां बहु सारां थवाथी जैन शासननी शोभा वधी हती, ते अरसामां दिगम्बरी जैनो तरफथी १५ दिवसनो मोटो महोत्सव थयो हतो ते पुरो थया पछी श्वेताम्बर संघ तरफथी पण एक मोटो महोत्सव थयो हतो, ते महोत्सवना प्रसंग उपर चूरुशहेरथी महाराज साहेबना यतिपणाना वडील गुरुभाई यतिवर्य श्रीऋद्धिकरणजी पधार्या हता, तेओनी साथे तेरापंथी थइ गयेला केटलाएक ओसवाल भाईयो पण जयपुर आव्या हता ते श्रावकोए पंन्यासजीने पुछ्युं के

गुजरात वगेरे देशमां तो संवेगी साधुओ घणा विचरे छे पण अमारा स्थली प्रदेशमां तो कोई आवता ज नथी अने तेरापंथी साधुओनो अमने घणो परिचय थाय छे तेथी अमारा तरफना श्रावकोनो घणो भाग तो तेरापंथी थइ गयो छे माटे आपना जेवा पूर्वावस्थामां स्थलीप्रदेशना अनुभवी साधुओए अमारा देशमां जरूर आववुं जोइये, संवेगी साधुओना परिचय वगर मूर्तिपूजक धर्मनी उत्तमता अमारा जेवाने शी रीते मालूम पडे। पंन्यासजी महाराजनुं यतिपणानुं स्थान चूरु ते प्रदेशमां आवेलुं होवाथी तेरापंथीयोनी केटलीएक पोल महाराजजीना जाणवामां हती, वळी केटलाएक श्रावकोनी साथे महाराजश्रीने ओळखाण तथा स्नेह होवाथी ते तरफ विचरवाथी जरुर लाभ थशे अने आ चूरुना श्रावको ते तरफ पधारवानो घणो आग्रह पण करे छे तेथी थलीप्रदेशना विहारनी कठिनाइने अवगणीने पण मारे जरूर ते तरफ जवुं जोइये, एवो निश्चय करीने जयपुरथी विहार करी श्रीमाधवपुर पलसाना सीकर अने नवलगढ थइने झुंझणुं पधार्या, त्यां जैन मन्दिर तथा मूर्तिपूजक संप्रदायना ५० घर होवाथी महाराज साहेबे त्यां १५ दिवसनी स्थिरता करी धर्मोपदेश आप्यो त्यार बाद त्यांथी विहार करीने चूरु पधार्या त्यांना जैन तथा जैनेतरना मोटा समुदाये महाराज साहेबने घणा सत्कारपूर्वक नगर प्रवेश कराव्यो हतो, चूरुमां महाराज साहेबे २० दिवसनी स्थिरता करी ते दर्म्यान हमेशां व्याख्यान चालतुं हतुं तेमां अनेक प्रकारना प्रश्नो पुछी लोको संतोपकारक खुलासो

मेळवता हता । एक दिवसे महाराजजी गोचरीए पधारता हता ते रस्तामां शेठ ऋद्धिकरणजी सुराणानी हवेली आवी, ते हवेलीमां तेरापंथीमतना साधुओ उतरेला हता तेओनी पासे पंन्यासजी महाराज गया त्यारे तेरापंथी साधुओए कह्युंके आप लोक तो रेलगाडीमां विहार करो छो, मूर्तिपूजक साधुसमुदायमांथी बहिष्कृत थयेला शान्तिविजयजी जेवा कोई कोई मुनि रेलगाडीमां विहार करता जाणीने तेरापंथीसाधुओए कहेलुं होवाथी ' शठं प्रति शाठ्यं ' ए नीतिने अनुसरी पंन्यासजीए तुरतज तेरापंथी साधुओने जवाब आप्यो के आप लोक रातना आहार करो छो तथा काचुं पाणी पीओ छो ने, त्यारे तेमणे जणाव्युं के अमे रात्रे खाता नथी अने काचा पाणीने तो अडकता पण नथी तो पछी पीवानी तो वातज क्यां रही, त्यारे पंन्यासजीए कह्युं के तमारा साधु खंडेला गाममां छे ते रात्रे खाय छे तथा काचुं पाणी पीए छे त्यारे तेरापंथी साधुओ बोली उठ्याके ते साधुने तो अमे समुदाय बहार करेलो छे, त्यारे पंन्यासजीए तेओने समजाव्युं के जेवी रीते राते खानार तथा काचुं पाणी पीनार साधुने तमे समुदाय बहार करेलो छे तेवीज रीते रेलगाडीमां विहार करनार साधुने अमे पण समुदायथी बहार काढी मुक्यो छे, उत्तम पुरुषोए उत्तम पुरुषोनो दाखलो लेवो जोइये बाकी संसारना दरेक पंथमां दरेक काळमां कोई ने कोई एवा क्षुद्र मनुष्यो तो मळी ज आवे छे परन्तु तेनो दाखलो कोई पण आत्मार्थी जीवे लेवो जोइये

नहि। त्यार बाद पंन्यासजी महाराजे तेरापंथी साधुओने पुछयुं के तमारामां तथा स्थानकवासीयोमां शी जूदाई छे ? त्यारे तेमणे जवाब आप्यो के अमे त्रण पात्र राखीये छीये अने स्थानकवासीयो सात पात्र राखे छे, त्यारे पंन्यासजी महाराजे कह्युं के अत्रे हमणां स्थानकवासी साधुओ तो छे नहि तमे छो तो हुं तमने ज पुछुं छुं के त्रण ज पात्र राखवानुं कया सूत्रमां छे, जवाब मळ्यो के आचारांग सूत्रमां, त्यारे पंन्यासजीए कह्युं के आचारांग सूत्रमां मने तो कोई तेवो पाठ जणायो नथी छतां कदाच मारी भूल थती होय तो ते मारे सुधारवी जोइये माटे आचारांगनो ते पाठ मने बतावो, त्यारे तेरापंथी साधुओ आचारांग सूत्रमां पाठ शोधवा लाग्या, शोधतां शोधतां बार वागी गया छतां पाठ मल्यो नहि त्यारे कहेवा लाग्या के हवे आहार पाणीनो टाइम थई गयो छे माटे बपोरे आप पाछा पधारजो त्यारे पाठ बतावीशुं. पंन्यासजीए कह्युं के भले, बपोरे बतावजो एम कहीने पंन्यासजी महाराज पोताने मुकामे आवी आयंबील करवा बेठा हता, उपरोक्त हकीकत आखा चूरु शहेरमां फेलाइ गइ होवाथी हवे बपोरे शुं बनाव बने छे ते जोवाने माटे घणा जैनो अने जैनेतरो पंन्यासजी महाराजने मुकामे आवी पहोंच्या, आयंबील कर्या पछी जरा विश्रान्ति लईने पंन्यासजी महाराज तेरापंथीयोने मुकामे गया तेओनी पाछळ शहेरना बसो अढीसो माणसोनुं टोळुं पण गयुं आ बधो मामलो जोईने तेरापंथी साधुओ गभरावा लाग्या के आ तो आपणी इज्जत जाय एवो प्रसंग आवी

पड्यो छे छतां हिंमत राखीने आखुं आचारांग तपासी वळ्या तथापि जोइये तेवो पाठ नहि मळी शकवाथी तेओए विचार कर्यो के सुज्येष्ठाने पोतानी राणी बनाववानी धूनमांने धूनमां श्रेणिकराजाए आ सुज्येष्ठा छे के कोई बीजी छे तेनी तपास कर्या वगर चिल्लणानेज सुज्येष्टा मानीने पोतानी राणी बनावी दीधी तेम त्रण पात्रनो पाठ जोवानी धूनमांने धूनमां आ संवेगी साधुने त्रण पात्र राखवाना पाठने बदले आपणने मळी आवेलो आ त्रण जातना पात्र राखवानो पाठ बतावीये एटले श्रेणिकराजानी माफक विशेष तपास कर्या वगर ए संवेगी साधु पण पोताने मन गमतो पाठ मळी आव्यो एम मानीने अहींथी रवाना थइ जशे, एवो विचार करीने तेओ बोल्याके "ल्यो जुओ आ पाठ," एम कहीने काष्ठनां तुम्बडानां अने माटीनां ए त्रण जातनां पात्र राखवानो आचारांग सूत्रनो पाठ बताव्यो, ते पाठ वांची जोइने पंन्यासजी महाराजे तेरापंथी साधुओने कह्यु के जरा आंखो बराबर खोलीने जुओ अने तेम छतां पण बराबर नहि वंचातुं होय तो आंखे चश्मा चढावीने जुओ के आ पाठ त्रण पात्र राखवानो अधिकार बतावे छे के त्रण जातनां पात्र राखवानो अधिकार बतावे छे एवुं पंन्यासजी महाराजे कह्युं, ते वखते श्रेणिक महाराजानी धूनमां ने आ पंन्यासजी महाराजनी धूनमां तेरापंथी साधुओने महदन्तर जणायु अने श्रेणिकराजानी माफक आ संवेगी साधु पण भूलथाप खाइ जशे एम मानी लेवामां पोते मोटी पहाड जेवी गफलत खाधेली जणाइ परन्तु हवे शो उपाय ! बननार वस्तु बनी

गइ, हवे कांइ पण जवाब आपी शकाय एम हतुं नहि एटले निरुत्तर रहीने तेओ परस्पर एक बीजानुं मोढुं जोवा लाग्या एटले त्यां भेगा थयेला गृहस्थो आपस आपसमां कहेवा लाग्या के जोइ तेरापंथी साधुओनी मनःकल्पना, सूत्रना आधार विना पोताने फावे तेम वर्तन राखवुं अने आपणा जेवा अजाण गृहस्थोने सुत्रानुसारिपणानो दंभ देखाडवो, अने आ संवेगीसाधु जेवा कोई सूत्रोना जाणकार तेमना सूत्रविरोधि वर्तननो जवाब मांगे तो तेमने पण जुठुं बोलीने खोटो पाठ बताववो, एथी करीने एमनी तथा साथे एमना भक्तोनी पण संसारवृद्धिनुं कारण छे के बीजुं कांइ, त्यार बाद टाइम घणो थइ जवाथी अने हमणां तेओ कांइ जवाब आपी शकशे नहि एम जणायाथी पंन्यासजी महाराजे कह्युं के अत्यार तो हवे हुं जाउं छुं अने काले सवारे पाछो आवीश माटे गमे ते सूत्रमांथी आपनी मान्यतानो पाठ होय तो शोधी काढीने मने बतावजो, आ प्रमाणे ज्यारे पंन्यासजीए कह्युं त्यारे तेओ मुंझावा लाग्या के आ संवेगी तो आपणो पीछो छोडे एम लागतु नथी माटे काले वळी शुं जवाब देशुं ए प्रमाणे तेओ मांहोमांहे घूसपूस करवा लाग्या, आखरे तेमने एक रस्तो जडी आववाथी तेओ बोलया के अमारे तो काले सवारे ज विहार करवानो छे, बस थइ रह्युं त्यां हाजर रहेला लोको स्वयमेव समजी गया के तेरापंथी साधुओ हारी गया, आपणा जेवा जैनसूत्रोथी अजाण गृहस्थोने माथे ज तेरापंथी साधुओ पोताना तूतना भूतने मजबूत वळगाडी दे

छे परन्तु आवा सूत्रोना जाणकार कोई मळी जाय तो तेओना तूतना भूतने माथे केवां जूत पडे छे ते आपणे नजरो नजर जोयुं, पछी सर्वे पोतपोताने स्थाने चाल्या गया, बीजे दिवसे सवारमां तपास करतां जणायुं जे खरेखर तेरापंथी साधुओ सवारना पहोरमां ज भागी गया हता।

आगला दिवसना बनावथी अने पोताना साधुओ भागी गया होवाथी घणा तेरापंथी श्रावको तथा जैनेतरोना मनमां तेरापंथी मत जिनाज्ञा विरुद्ध छे एम जणायुं तेथी शेठ ऋद्धि-करणजी सुराणा शेठ रायचन्दजी सुराणा शेठ सुगनचन्दजी पारख तथा शेठ तोलारामजी सुराणा वगेरे सो एक तेरापंथी श्रावको पंन्यासजी महाराजना स्थानपर अनेक प्रकारना प्रश्नो पुछवा आव्या, महाराजजीए तेओने कह्युं के तमे वधा चर्चा करवा आव्या छो के धर्मनुं यथार्थ स्वरूप जाणवा आव्या छो? त्यारे ते श्रावकोए जणाव्युं जे साहेब तेरापंथी पूज्यना लश्कर ना सेनापति सरखा तेरापंथी साधुओ आपनी साथे चर्चामां हारी जवाथी जवाब आप्या विना ज अहींथी चाल्या गया तो पछी आप जेवा समर्थ ज्ञानीनी साथे तेरापंथी पूज्यनी सेनाना सिपाई सरखा श्रावकोनी चर्चा करवानी शक्ति तो होय ज क्यांथी, हीनपुण्यवाळा अमे मनुष्यभव आर्यक्षेत्र अने जैनकुल पाम्या छतां एवा धर्महीन देशमां जन्म्या छीए के एक तो अमारी उपर कुदरते रुठीने झाड पान फळ फूल अने पाणी प्राप्त करवानी कायमने माटे मुश्केली उभी करी मुकेली छे अने बीजुं दुनियाभरने पोताना सिद्धान्तोथी अजायबीमां

गरकाव करी दे एवा तेरापंथी मतना साधुओनी राजधानी जेवा आ अमारा स्थलीप्रदेशमां आपना जेवा आगमधर साधुओना दर्शन तो खरुं कहिए तो आ घोर कलिकाळमां अमने कल्पवृक्ष समान अत्यन्त दुर्लभ थइ पडेलां छे, तेथी करीने " उज्जड गाममां एरंडो प्रधान " ए कहेवत मुजब आ तेरापंथी साधुओ ज आ देशमां तरणतारणहार थइ पडेला छे अने मारवी जेम करोडीयानी जाळमां सपडाइ जाय तेम अमे ए तेरापंथी साधुओनी वाग्जाळमां सपडाइ गयेला छीए। गइ कालनी चर्चाथी कांइक अमारी आंखो खूली छे अने प्रभु महावीरना धर्मनुं खरुं स्वरूप जाणवानी इच्छा थइ छे तेथी अमे बधा आपनी पासे आव्या छीए। त्यारे पंन्यासजी महाराजे तेओने जणाव्युं जे जो एम ज होय तो तमारामांथी जे कोई श्रावक जाणकार होय ते तमारा बधा तरफथी जे जे प्रश्न पुछवा होय ते पुछे अने बाकीना बीजा बधा शान्तिथी सांभळशे तो हुं खुशी थी दरेक प्रश्ननो जवाब शास्त्रीय पाठ सहित आपीश, ते वात तेओए कबूल करीने तेरापंथीमां सारा जाणकार गणाता शेठ रायचन्दजी सुराणाने अग्रेसर करीने पुछ्युं के आप मन्दिर बंधाववामां जिनमूर्तिने काचा पाणीथी न्हवण कराववामां तथा फूल चढाववामां अने जिनमूर्ति आगळ धूप तथा दीपक करवामां धर्म मानो छो ? पंन्यासजीए कह्युं के हा, ए बधां कृत्यो जिनेश्वरनी आज्ञा मुजब करवामां धर्म मानीये छीये, पछी तेमणे पुछ्युं के जिनमूर्तिनी आगळ नाटक करवामां पण धर्म मानो छो ? त्यारे पंन्यासजीए तेओने पुछ्युं के कोई जैनसाधु

नाटक देखे तो ते वीतरागनी आज्ञामां गणाय के आज्ञा बहार गणाय ? सुराणाजीए जवाब आप्यो के आज्ञा बहार गणाय, त्यारे पंन्यासजीए कह्युंके जो एमज होय तो तमारा मत मुजबतो गणधर भगवंतनी आगळ सूर्याभ देवताए करेला नाटकने जोनारा १४००० साधुओ अने ३६००० साध्वीओ आज्ञा बहार ठर्या, त्यारे सुराणाजी बोल्या के ए बाबतनो खुलासो माराथी थइ शके एम नथी माटे आप ज ए बाबत अमने खुलासाथी समजावो, त्यारे महाराज साहेबे रायपसेणी (राजप्रश्नीय) सूत्रनो पाठ काढीने बताव्यो अने समजाव्युं के श्रीमहावीरप्रभुपासे सूर्याभ देवे आवीने प्रार्थना करीके प्रभो ? आप तो सर्वज्ञ होवाथी आपने कांइ जाणवानुं बाकी रह्युं नथी परन्तु आपना साधुओने तथा साध्वीयोने नाटक द्वारा मारी ऋद्धि देखाडुं त्यारे भगवाने सूर्याभ देवने हा के ना पाडी नहि परन्तु मौन रह्या, त्यारे " न निषिद्धमनुमतं " ए न्याये सूर्याभदेवे आज्ञा मळेली जाणीने साधु साध्वीयोनी समक्ष बत्रीस प्रकारनुं नाटक कर्युं, ए प्रमाणेनो राजप्रश्नीय सूत्रनो मूल पाठ तथा तेनी टीका ते लोकोने बतावीने तथा प्रभुप्रतिमानी पूजानो पाठ बतावीने जिनप्रतिमानी साबीती करी आपी त्यारे ते लोकोए कह्युंके आपे सूत्रनी साक्षीए जे वात बतावी ते अमारे गळे उतरी छे पण अपना जेवा संवेगी साधुओ अमारा कम भाग्यने लइने आ तरफ विचरता नथी अने आ तेरापंथी अथवा खरुं कहीए तो मनःकल्पितपंथी अहींथी डगता नथी एटले " नहि मामानी जग्याए काणो मामो पण सारो "

ए कहेवत मुजब अहींना लोको तेरापंथी साधुओने गुरु तरीके मानवा लागी जाय छे ।

त्यार पछी चोमासाने हजी घणी वार होवाथी चुरुथी विहार करीने रतनगढ पडिहारा छापर सुजानगढ लाडनूं अने डेगांव थइने महाराजश्री नागोर पधार्या, त्यांना श्रावकोमां घणा वर्षथी कुसंपे पोतानुं साम्राज्य जमावी मुकेलुं होवाथी कोई पण धर्मकार्य रुडी रीते थइ शकतुं न हतुं, ते कुसंपने मटाडवा माटे पार्श्वचन्द्रगच्छीय श्रीभ्रातृचन्द्रसूरिजीए घणी कोशिष करेली परन्तु हठाग्रही श्रावकोनी ताणाताणीथी संप थइ शक्यो न हतो, पंन्यासजीए अन्दरखानेथी झगडाना मूळ कारणो जाणी लइने पहेलां तो असर कारक धर्मोपदेश आपवा मांड्यो तेमां प्रसंगोपात संप उपर उचाळो भरीने हीजरत करवा तैयार थयेली रैयत अने राजा तथा साप अने कीडी वगेरेनां दृष्टान्तो आपीने संपनुं महत्त्व समजावता हता, थोडा दिवस बाद ज्यारे बधा लोकोनो पोतानी उपर धर्मराग बंधायो छे एम जणायुं एटले महाराजजीए विहार करवानी वात काढी त्यारे त्यांना संघे भेगा थइने महाराजजीने नागोरमां ज रोकावानो घणो आग्रह कर्यो, एटले महाराजजीए प्रत्युत्तर आप्यो के तमारा शहेरमां तो कुसंप घणो छे, ते कुसंपने लइने तमारा सांसारिक कार्योनी वात तो दूर रही परन्तु धार्मिक कार्योमां एक बीजाने अंतरायो उभा करो छो माटे एवा कुसंपवाळा शहेरमां रहेवा करतां अमे तो कुसंप वगरना नाना गामडामा रहेवुं वधारे पसंद करीये छीये कारणके त्यां दरेक धर्मकरणी

वधा एकसंपथी करे छे, ते सांभळीने संघमांना आगेवानो शेठ मूलतानमलजी जूहारमलजी गोपीलालजी सुगनचन्दजी अमोलखचन्दजी तथा उदयचन्दजी बोथरा, मोहनलालजी तथा गुलावचन्दजी समदडीया, वकील सज्जनमलजी भूरट, मोहनलालजी वच्छराजजी तथा छगनमलजी चोरडीया, अमर चन्दजी लाभचन्दजी हीराचन्दजी अने गोपीलालजी खजांची, गुलाबचन्दजी तथा पन्नालालजी चोधरी, झवेरीचन्दजी दुगड अने मोहनलालजी भणशाली वगेरे दरेक तडना आगेवानोए कह्युं के आप थोडा दिवस अत्रे रोकाइने अमने आप्यो तेवो वधारे धर्मोपदेश आपशो तो अमारी अन्दर घर करी रहेलो कुसंप आपना उपदेशनी असरथी थोडा वखतमां जरुर दूर थइ जशे, सर्वे आगेवानोनां मन कूणां थयेला जोइने तेओनी विनति स्वीकारी महाराजजीए विहार करवानुं बंध राख्युं अने पाछुं व्याख्यान चालु करी संप कराववानी कोशिष करवा मांडी, गुरु महाराजजीनी कृपाथी थोडा 'ज वखतमां पंन्यासजी श्रीऋद्धिमुनिजीए नागोरमां संप करावी दीधो तेनी खुशालीमां संघ तरफथी ठाठमाठथी उत्सव करवामां आव्यो हतो अने उत्सवने छेल्ले दिवसे संघजमण करवामां आव्युं हतुं, घणे वर्षे नागोरना जैनोनुं आवुं संघजमण थवाथी वधा जैनोने ते दिवसे घणो ज आनन्द थयो हतो।

ते वखतमां एक दीक्षाभिलाषी श्रावकने तेनी योग्यतानी खात्री माटे महाराजजीए पोतानी पासे राख्यो हतो तेनामां योग्यता जणायाथी पंन्यासजी महाराजे तेने दीक्षा आपवानी

जाहेरात करी, ते दीक्षा प्रसंगे नागोरना संघे महोत्सव कर्यो हतो अने शहेर वहार श्रीमोहनलालजी महाराजना यतिपणाना गुरु श्रीरूपचन्दजी महाराजना बगीचामां पंन्यासजीए दीक्षा आपी हती।

त्यार बाद नागोरथी विहार करी खजवाना थइ मेडताफलोधीमां श्रीपार्श्वनाथ भगवाननी यात्रा करी महाराजजी पाछा नागोर पधार्या, चोमासामाटे नागोरना संघे विनति करी परन्तु कुचेराना श्रावकोए आवीने जणाव्युं के साहेब नागोर तो शहेर होवाथी साधु साध्वीनां चोमासां अवार नवार थया करे छे परन्तु अमारा कुचेरा गाममां साधुनुं के साध्वीनुं चोमासुं तो थतुं नथी तथा शेषकाळमां आवागमन पण जवल्लेज थाय छे तेथी अमारा गामना घणा जैनो तो उपरा उपरी ढुंढक साधुओनां चोमासां थतां होवाथी तेमनो उपदेश सांभळीने ढूंढीया थइ गया छे माटे आ चोमासुं आप कुचेरे करवानी कृपा करो नहि तो पछी अमारा जेवा थोडा रह्या सह्या मूर्तिपूजको पण ढूंढीया थइ जशे, महाराज साहेबे लाभालाभनो विचार करी कुचेरानी विनति स्वीकारी अने नागोरथी विहार करी मूंडवे आव्या ते वखते जेठ महिनानी सखत गरमी पडती होवाथी मूंडवे आवतां रस्तामांथी ज पंन्यासजीने ताव चढ्यो, मूंडवामां ओसवालो बधा ढूंढीया थइ गया होवाथी उतरवानी जग्या मळी नहि, ओसवालोने त्यां तथा सरावगीओ (दिगम्बरीओ) ने त्यां गरम पाणीनी तपास करी ते पण मळ्युं नहि तेथी तेवी सखत गरमीमां पंन्यासजी महाराज पोताना

शिष्य साथे विहार करी कुचेराना मार्गमां लोढागोत्रीय ओसवालोनी कुलदेवीनुं मन्दिर आवे छे तेनी नजीकमां एक गाम छे त्यां गया पण ते गाममां ओसवालोनुं एक पण घर हतुं नहि तेथी त्यांथी आगळ विहार कर्यो, हजी कुचेरा त्रण मैल दुर हतुं ते वखते वार पर वे वागेला हता अने मारवाडनी सखत लू चाली रही हती तेवामां एक समडीनुं झाड आव्युं तेनी छायामां बन्ने मुनिओ विश्रान्ति लेवा बेठा, तेवामां एक तो सखत ताव चढेलो हतो अने बीजुं पाणी विना कंठ कांटा पडता हता तेथी पंन्यासजी महाराजने मूर्छा आवी गइ, एटलामां भाग्ययोगे एक ऊंटवाळो त्यां थइने कुचेरे गयो तेणे जतांनी साथे बजारमां ओसवालोने वात करीके रस्तामां तमारा बे साधु पाणी विना तरफडे छे, ते सांभळी तरत ज कुचेराना श्रावको पाणी वगेरे लइने त्यां जई पहोंच्या, ते वखते बन्ने मुनिओने बेहोश पडेला जोइने श्रावकोए उपचार करीने शुद्धिमां आण्या पछी जेम तेम करी सांजे कुचेरे पहोंच्या, लोको बोलवा लाग्या के संवेगी साधुओ गुजरात काठीयावाडमां झाझुं विचरे छे ने मारवाड तरफ आवता नथी तेनुं कारण एक तो मारवाडनो विहार कठण अने बीजुं गुजराती जेवो आपणामां विवेक नहि एटले कांटा कांकरावाळा आपणा देशमां जवल्ले ज कोई कोई साधु आवी चढे छे अने एकाद बे चोमासां करी पाछा गुजरातमां चाल्या जाय छे, पछी पंन्यासजी महाराजे व्याख्यान चालु करी असर कारक अने जैन साधुथी अपरिचित तथा जैनसाधु उपर थोडो प्रेम

राखनाराओने अत्यंत रोचक थइ पडे एवो धर्मोपदेश आपीने सर्वेने धर्मकरणीमां आदरवाळा बनाव्या, ए रीते पंन्यासजी श्रीऋद्धिमुनिजीनुं सं० १९६७ नुं ओगणीसमुं चोमासुं कुचेरामां थयुं ।

कुचेरामां चोमासानी शरुआत थइ छतां वर्षाद पड्यो नहि तेथी कुचेराना अन्यदर्शनीयोए वर्षादने लाववामाटे त्यांना भेरुंजीना मन्दिरमां यज्ञ होम अने शान्तिपाठ करीने धामधूमथी ठाकोरजीनी रथवाडी काढी ठाकोरजीने नवरावना माटे गाम बहार तळाव उपर लइ गया परन्तु वर्षाद पड्यो नहि तेथी लोको कहेवा लाग्या के आ साल तो ठाकोरजी पण पाणीने बदले पत्थरथी न्हाया, ते वखते त्यांना संघना आगेवानोने पंन्यासजी महाराजे जणाव्युं के हालमां अहीं दरेक धर्मवाळाओ पोतपोताना देवोनो ओच्छव करे छे तो आपणे पण रथयात्रानो वरघोडो काढवो जोइये, ते वात बधाने पसन्द पडवाथी सारुं मुहूर्त जोइने पंन्यासजी महाराजने अग्रेसर करी कुचेराना श्रावकोए आडम्बर पूर्वक रथयात्रानो वरघोडो काढी आखा गाममां फेरव्यो अने स्नात्रपूजा भणावी ते ज दिवसे मूशळधार वर्षाद पड्यो, ज्यां रेतीना गोटेगोट उडी रह्या हता त्यां पाणीनी रेलमरेल थइ रही, तळावो पाणीथी छलाछल थइ गयां अने लोकोनां दिल ऊंचां थइ गयां हतां ते शान्त थवाथी आखा गाममां आनन्द आनन्द थइ रह्यो, लोको कहेवा लाग्या के जैनोना देव ते खरेखरा देव ज छे, त्यार पछी पंन्यासजी महाराज कुचेराथी त्रण मैल पर लूणसर गाममां शिखरबंध

जैनमन्दिर छे तेना दर्शन करवा कुचेराना घणा श्रावको साथे पधार्या, त्यां ओसवालोना आठ दश घरो छे तेमां फक्त चुन्नीलालजीनुं एक घर मूर्तिपूजक रह्युं छे बाकी बधां ढूंढक थइ गयां छे, कुचेराना संघे त्यां पूजा भणावी एटले त्यां पण खूब वर्षाद पड्यो, तळाव भराइ गयुं लीलालहेर थइ गइ अने जैनधर्मनी अत्यन्त प्रशंसा थइ ।

ते चोमासामां पंन्यासजीना उपदेशथी कुचेरामां पहेलो उपकार ए थयो के ढूंढक थइ गयेला ३० घरवाळा पाछा मूर्तिपूजक थया, बीजो उपकार ए थयो के कुचेराना ओसवालोमां सारा माठा कोई पण प्रसंगे जमणवार थतो ते रातना ज थतो तेथी जमण करनारने आखी रातनो उजागरो थतो हतो, लांबा काळथी चाल्या आवता ते दुष्ट रीवाजने महाराज साहेबे महा मुसीबते बंध कराव्यो । त्रीजो उपकार ए थयो के कुचेरामां कोइना तरफथी स्वामिवत्सलनुं जमण होय त्यारे फेवळ पुरुषो ज जमणमां भाग लेता हता, बैरांओने स्वामिवत्सलना जमणमांथी बातल राखवानो रीवाज चाल्यो आवतो हतो तेथी महाराज साहेबे श्रावकोने समजाव्युं के आपणा धर्मने मानवावाळा दरेक माणसने जमाडवा तेनुं नाम स्वामिवत्सल कहेवाय, आवो रीवाज तो कोई पण जग्याए जाणवामां आव्यो नथी, तमारा गाममां आवो रीवाज क्यांथी घुसी गयो वगेरे घणुं समजावीने बैरांओने पण स्वामिवत्सलना जमणमां जमवा जवानुं शरु कराव्युं । चोथो उपकार ए थयो के कुचेरामां ढूंढिया साधुओनुं आवागमन विशेष थतुं होवाथी अने तेओ

वैरांओने मासिकधर्म (ऋतुधर्म) पाळवानो निषेध करता होवाथी तथा तेओनी आर्याओ (ढूंढक साध्वीओ) मासिक-धर्म नहि पाळती होवाथी तेओना संसर्गने लइने मन्दिरमार्गी वैरांओ पण मासिकधर्म पाळवामां लोचो वाळता हतां तेथी महाराज साहेबे व्याख्यानमां जणाव्युं जे श्रीस्थानांगसूत्रना दशमां ठाणामां दश प्रकारनी अशुचि टाळवानी कही छे, तथा प्रज्ञापना उपांगमां पण अशुचि टाळवानुं विस्तारथी जणाव्युं छे, माटे स्त्रियोए मासिकधर्म पूरो २४ पहोर पाळवो जोइये, ते दर्म्यान रसोइ वगेरे घरनुं कामकाज करवुं नहि, भणवुं नहि के पुस्तक पानाने अडकवुं नहि पण तपस्या करी शकाय, ढूंढिया लोकोनी आर्याओ तथा श्राविकाओ मासिकधर्म पाळती नथी अने धर्मकरणी करे छे भणे छे घरनुं सघळुं कामकाज करे छे ते वंधु जिनाज्ञाथी विरुद्ध छे।

ते सालमां कुचेरामां संस्कृत टीकाने वांची शके एवा जोरावरमलजी नामना ढूंढियाना विद्वान साधु पण चोमासुं रहेला हता, पंन्यासजी महाराजे व्याख्यानमां कहेली वात सांभळीने गाममां ते वातनी चर्चा चाली तेथी ढूंढिया श्रावको तेमना महाराज पासे जइने कहेवा लाग्या के संवेगी महाराज सूत्रनी साक्षी आपीने वैरांओने मासिकधर्म पाळवानी वीत-रागनी आज्ञा जणावे छे माटे आप ते बाबतनो जवाब सूत्रनी साक्षी सहित आपो नहि तो आर्याजीओने तथा श्राविकाओने मासिकधर्म पाळवानो उपदेश करो, ब्राह्मण मेसरी अग्रवाल वगेरे अन्य दर्शनीयो हालमां आ संवेगीनुं व्याख्यान सांभ-

ळीने आपणा धर्मनी घणी निन्दा करे छे - अने कोई कोई तो अमने मोढामोढ भ्रष्टाचारी, कही खीजवे छे, तेओनुं कथन सांभळीने तथा समयने ओळखीने ते जोरावरमलजी महाराज पण वैरांओने मासिकधर्म पाळवानो उपदेश देवा लाग्या। अने पांचमो उपकार ए थयो के जेओए पोतानी आखी जींदगीमां श्रीशत्रुंजय महातीर्थनी यात्रा करी न हती, तेवा कुचेराना सवासो दोढसो माणस कार्तिकी पूनमनी यात्रा करवा पालीताणे गयां अने शत्रुंजय गिरनार भोयणी अमदावाद तारंगा तथा आबू वगेरेनी यात्रा आनन्द पूर्वक करीने घेर आव्या, पछी तेओमांना साधनसंपन्न श्रावकोए यात्रा करी आव्यानी खुशालीमां उपरा उपरी स्वामिवत्सलनां जमणो कर्यां लहाणीओ पहेंची जैन मन्दिरमां ठाठमाठथी पूजाओ भणावी प्रभावनाओ करी आंगी अने रोशनाई करी भावना बेसाडी तथा वैरांओए गरबा गाया तेथी वैरांओने जात जातना वासण वगेरेनी लहाणी करी। ए रीते कुचेरामां जैन शासननी खूब शोभा वधारी।

त्यार बाद कुचेराथी विहार करी महाराजजी खजवाने पधार्या, त्यांना श्रावकोना आग्रहथी त्यां १८ दिवस रोकाया अने धर्मोपदेश आप्यो पछी त्यांथी मेडताफलोधी पधारी त्यांनी यात्रा करी, ते तीर्थमां जयपुरथी शेठ हीरालालजी टांके आवीने बहु आग्रह पूर्वक विनति करी के अमारे त्यां नवपदजीनुं उजमणुं छे माटे कृपा करीने आप जयपुर पधारो, तेओना अत्यन्त आग्रहथी विनति स्वीकारीने त्यांथी विहार करी मेडता रीयां आलणीयास पुष्करराज अजमेर अने

किसनगढ थइने महाराजश्री जयपुर पधार्या, त्यां शेठ हीरालालजी टांके खूब उत्साह अने ठाठमाठथी महोत्सव तथा उजमणुं कर्युं, पछी जयपुरथी विहार करी अजमेर ब्यावर सोजत पाली गुंदोच बीजोवा वरकाणा नांडोल तथा नाडलाइनी यात्रा करीने महाराजश्री देसूरी पधार्या त्यां चार बाइयोने दीक्षा आपी उत्तमश्रीजीनी चेली तरीके जाहेर करी ।

त्यार बाद त्यांथी विहार करीने घाणेराव सादडी अने राणकपुरनी यात्रा करीने वाली शिवगंज पालडी कोलरगढ शिरोही अने अणादरा थइने आबू तथा अचलगढनी यात्राए पधार्या, यात्रा कर्या बाद विहार करी आबूरोड पालनपुर सिद्धपुर ऊंझा मेसाणा कलोल अमदावाद खेडा मातर सोजीत्रा खंभात जम्बूसर आमोद भरुच अंकलेश्वर अने सायण थइने महाराज साहेब सुरत पधार्या त्यां थोडा दिवसनी स्थिरता कर्या बाद विहार करीने नवसारी बीलीमोरा वलसाड बगवाडा वापी श्रीगाम घोलवड दाहाणुं पालगढ अगासी बोरीवली मलाड अंधेरी माहिम दादर अने भायखला थइने मुंबई लालबाग जैन उपाश्रयमां पधार्या अने सं० १९६८ नुं वीसमुं चोमासुं तथा सं० १९६९ नुं एकवीसमुं चोमासुं पंन्यासजी श्रीऋद्धिमुनिजीए मुंबईमां कर्युं ।

त्यार बाद मुंबईथी विहार करी सुरत भरुच खंभात धोलेरा वळा अने शिहोर थइने महाराजश्री पालीताणे पधार्या अने बाबू पन्नालालजीनी धर्मशाळामां त्यागमूर्ति महाराज श्रीदेवमुनिजी साथे रह्या, ते ज धर्मशाळामां सन्मित्र श्रीकर्पूरविजयजी महा-

राज पण उतर्या हता, एक दिवसे आपणा चरित्रनायक तथा श्रीदेवमुनिजी श्रीकर्पूरविजयजी महाराज पासे गयेला त्यारे तेमणे श्रीदेवमुनिजीने पुछ्युं के पं. श्रीऋद्धिमुनिजी खरतरगच्छनी सामाचारी करे छे ? श्रीदेवमुनिजीए कह्यु के हा, त्यारे तेमणे पंन्यासजीने पुछ्युं के श्रीमहावीर प्रभुना छ कल्याणक संबंधी तमारो शो अभिप्राय छे ? त्यारे पंन्यासजीए कह्युं के अमे तो आपने मळवा आव्या छीए त्यारे तेओए कह्युं के मळवा आव्या ते बहु सारी वात छे परन्तु प्रसंग पामीने छ कल्याणक बाबतनो तमारो अभिप्राय हुं जाणवा इच्छुं छुं, त्यारे पंन्यासजीए जणाव्युं के श्रुतकेवली श्रीभद्रबाहुस्वामीकृत कल्पसूत्रमां स्पष्ट पाठ के "पंच हत्थुत्तरे होत्था साईणा परिनिव्वुए भयवं" त्यारे श्रीकर्पूरविजयजी बोल्या के ए पाठमां कल्याणक शब्द क्यां छे ? त्यारे पंन्यासजीए कह्युं के एम तो श्रीपार्श्वनाथ प्रभुना अधिकारमां "पंच विसाहे होत्था" तथा श्रीनेमिनाथ प्रभुना अधिकारमां "पंच चित्ताए होत्था" एवो पाठ छे त्यां पण कल्याणक शब्द नथी तेनुं शुं ? त्यारे तेओए कह्युं के ए रीते जो महावीरस्वामीना छ कल्याणक मानो तो पछी श्रीआदीश्वर प्रभुना पण छ कल्याणक तमारे मानवां पडशे ? त्यारे पंन्यासजीए जणाव्युं के जेवी रीते श्रीमहावीरस्वामीना श्रीपार्श्वनाथस्वामीना तथा श्रीनेमिनाथस्वामीना कल्याणको जूदा जूदा पाठमां जणाव्या छे ते मुजब जो श्रीआदीश्वर प्रभुना आप बतावो तो अमारे मानवामां कांइ वांधो नथी, कल्पसूत्रना मूल पाठमां तो "चउ आसाढे अभीई पंचमे

होतथा" एम श्रीभद्रबाहुस्वामी जणावे छे, जो छ कल्याणक होत तो श्रीभद्रबाहुस्वामी ते जणाव्या वगर रहेत नहि, छेवटे श्रीकर्पूरविजयजी वोल्या के हुं कोईनी साथे चर्चा करतो नथी पण स्वाभाविक जाणवा माटे तमने पछ्युं छे, वीजे दिवसे श्रीसिद्धगिरिनी यात्राए जतां रस्तामां तेओ मळ्या त्यारे तेमणे आपणा चरित्रनायकने विनयपूर्वक निष्कपटपणे जणाव्युं के में तमारी नहि पण महान् पुरुषोनी गइ काले जे अवज्ञा करी हती ते वदल तमारी साक्षीए मिच्छामि दुकडं दउं छुं ।

पालीताणामां फागण सुदी १ थी लगातार ८१ आयंबीलनी तपस्या पूर्वक पंन्यासजी महाराजे श्रीसिद्धगिरिनी ९९ यात्रानो प्रारंभ कर्यो तेमां एवो नियम करेलो के "धर्मशाळाएथी नीकळ्या बाद ओछामां ओछी एक यात्रा करीने ५० बांधी नवकारवाली गण्या वाद ज धर्मशाळामां प्रवेश करवो " एवी रीते ८१ आयंबीलनी उग्र तपस्या तथा ९९ यात्रा पुरी कर्या वाद सं० १९७० नुं वावीसमुं चोमासुं पालीताणामां कर्युं, चोमासा बाद त्यां रोकाइने चैत्री पूनम सुधी यात्रानो लाभ लीधो त्यार पछी त्यांथी विहार करीने मोखडका नवागाम पीपलीया चमारडी वळा पछेगाम इंटालीया रतनपुर वेलावदर हेबतपुर धोलेरा अने आमलीपीपली थइने तारकेश्वरनो आरो उतरी पंन्यासजी महाराज खंभात पधार्या अने शेठ अम्बालाल पानाचन्दजी धर्मशाळामां उतर्या, पछी त्यांना संघनो भक्तिभाव अने आग्रह जोइने सं० १९७१ नुं तेवीसमुं चोमासुं श्रीदेवमुनिजी साथे खंभातमां कर्युं, त्यांना संघे महाराज साहेबना

उपदेशथी श्रीमोहनलालजी जैन पाठशाळा तथा हुन्नरशाळा स्थापन करी तेनो लाभ खंभातना जैनोनी पांचे ज्ञातिना छोकरा छोकरीयो तथा बैरांओ लेवा लाग्यां ।

ते चोमासामां महाराज साहेबना दर्शन करवा मुंबईथी बाबू रतनलाल चुन्नीलाल आव्या हता तेओए महाराज साहेबना उपदेशथी खंभातमां श्रीमोहनलालजी जैन पाठशाळा तथा हुन्नरशाळा वगेरेमां रु० ३००० आप्या हता ।

चोमासा बाद खंभातथी विहार करीने सौथी पहेलां पंन्यासजी महाराज सायमे पधार्या त्यारे खंभातनी पूजा भणावनाराओनी टोळी पोतानुं वाजुं नरयां दोरी गुंथवानां साधनो अने डांडीया लइने साथे गइ हती, ते टोळीमां खंभातना नगरशेठ वेणीभाई दीपचन्द, मास्तर दीपचन्द पानाचन्द, खंभात स्टेटना नाजर साहेब शेठ बकोरदास, दलपतभाई नगीनदास फोटावाळा, भोगीलाल मगनलाल नाणावटी, गांडाभाई रतनचन्द, रतनलाल रणछोडदास, मणिलाल जीवचन्द, साकरचन्द रायचन्द अने पोरवाडनी ज्ञातिना शेठ भोगीलालभाई वगेरे खंभातना १५०–१७५ माणसो हता ते बधाने सायमाना संघे ठाठमाठती प्रवेश कराव्यो, महाराज साहेबे व्याख्यान वांच्युं पछी सायमाना संघे भक्तिपूर्वक बधा भाईयोने जमाड्या हता, त्यांथी विहार करी जणसन गया त्यां फेनाइवाळा खुशालदास शेठ तथा रायचन्द काकाए सायमावाळानी माफक सामैयुं तथा जमणवार कर्या हता, त्यांथी विहार करी वडदला थइने धर्मज गया त्यांना संघे ठाठमालथी सामैयुं करी प्रवेश

कराव्यो हतो अने सौ भाईयोने जमाड्या हता, अहीं सुधी खंभातनी मंडली साथे रहेली हती ते पूजा भणाववामां भावना भावनामां डांडीयानी भातभातनी रमतमां दोरी गुंथनमां अने गावा वजाववामां कुशल होई उत्साहथी भाग लेती हती तेथी दरेक गाममां उत्सव जेवुं थइ रहेतुं हतुं, धर्मजथी खंभातनी मंडली खंभात गई अने पंन्यासजी महाराज विहार करीने पेटलाद जम्बूसर भरुच अने सायण थईने सुरत पधार्या अने सं. १९७२ नुं चोवीसमुं चोमासुं गोपीपुरामां आवेला श्रीमोहनलालजी जैन उपाश्रयमां कर्युं, चोमासुं पुरुं थवा आव्युं त्यारे नवापुरामां शेठ मगनभाई देवचन्द तरफथी जे नवो उपाश्रय तैयार थयो हतो तेमां शेठ देवचन्दभाईनी सुपुत्री श्रीमती नेमकुंवरबेन तथा शेठ खुशालभाईनी विनतिथी आसो महिनामां पंन्यासजी महाराजे उपधान कराव्यां हतां ते समाप्त थतां महाराज साहेबना उपदेशथी आठ दिवसनो महोत्सव वरघोडो तथा संघजमण वगेरे शासनोन्नतिनां कार्यो थयां हतां, त्यार पछी सुरत जील्लाना गामोमां विहार करता करता दाहाणुं अने पालगढ थइने मुंबई पधार्या त्यां लालबागना जैन उपाश्रयमां पंन्यासजी महाराजनुं सं. १९७३ नुं पचीसमुं चोमासुं थयुं, आ वखतना मुंबईना चोमासामां आसो महिनामां शेठ वालूभाई कल्याणचन्द झवेरी तथा शेठ भगवानदास हीराचन्द झवेरी तरफथी पंन्यासजी महाराजे उपधान वहन कराव्यां हतां ते पूरण थतां लालबागमां महोत्सव करवामां आव्यो हतो, त्यार बाद वालकेश्वर वगेरे परामां फरी आवीने पाछा

लालबाग आवी सं. १९७४ नुं छव्वीसमुं चोमासुं पण पंन्यासजी महाराजे मुंबईमां कर्युं, चोमासुं पुरुं थया पछी शेठ भगवानदास हीराचन्द झवेरीये महाराज साहेबने कहुं के अमारा पुण्योदयथी आपना जेवा सग्दुरुनी अमने प्राप्ति थई छे अने आपश्रीना ज उपदेशथी अमारा आखा कुटुंबने श्रीसिद्धगिरिनी ९९ यात्रा करवानी भावना थइ छे परन्तु आपना सान्निध्यमां रहीने अमे ९९ यात्रा करीये एवी अमारी कामना छे, माटे साहेबजी अमारी उपर कृपा करीने आप साहेब पालीताणे पधारो तो अमारी ते कामना जरूर फळीभूत थशे।

यात्राए जवानो मनसूबो तो घणा वखतथी अमे कर्या करीये छीये परन्तु यथार्थ नामवाळी आ मोहमयी नगरीमां कंइ ने कंइ एवुं निमित्त आवीने खडुं थइ जाय छे के जेथी करीने अमारा आखा कुटुंबने एकीसाथे यात्राए जवानो योग ज आवतो नथी, छतां अमारी एवी धारणा छे के आप जो पालीताणे पधारशो तो आप साहेबना प्रभावथी अमारा अन्तरायो दूर थइ जशे अने कामधंधो बधो छोडीने आपश्रीना स्नेहाकर्षणथी खेंचाइने अमारुं आखुं कुटुंब आ अलबेली नगरीनी जंजाळी धमालमांथी निवृत्त थइने ९९ यात्रा करवा माटे पालीताणे आवी शकशे, धर्मनिष्ठ वयोवृद्ध शेठ भगवानदासभाईनी एवी हृदयंगम विनंतिथी सिद्धगिरिनी यात्रा करी आव्याने हजी थोडो ज टाइम थयो हतो छतां पोताने यात्रानो लाभ थवा उपरांत शेठ भगवानदासभाईना आखा कुटुंबने यात्रानो मोटो लाभ थशे एम धारीने पालीताणे जवा माटे

मुंबईथी विहार करी वलसाड सुरत भरुच कावी खंभात धोलेरा अने वळा थइने पंन्यासजी महाराज पालीताणे पधार्या ते दर्म्यान शेठ भगवानदास झवेरी पोताना आखा कुटुंबने लइने पालीताणे आवी गया हता त्यार बाद पंन्यासजी महाराजना सान्निध्यमां तेमना कुटुंबे श्रीसिद्धगिरिनी विधिपूर्वक ९९ यात्रा पुरी करी ।

आ वखते पंन्यासजी महाराजे ज्यां सुधी पालीताणामां रह्या त्यां सुधी एकांतरे उपवास अने पारणामां आयंबील एवी उग्र तपस्या करवा पूर्वक यात्रानो लाभ लीधो हतो ।

मारवाडना स्थानकवासी संप्रदायना पूज्य श्रीजयमलजीना समुदायना मुनि श्रीसूर्यमलजीना शिष्य प्रशिष्य मुनिश्री रूपचन्दजी गुलाबचन्दजी अने वीजराजजी नामना त्रण साधुओने पोतानो ढूंढक मत जिनाज्ञा विरुद्ध भासवाथी श्रीमहावीर प्रभुना शुद्ध संवेग धर्मने अंगीकार करवाना तथा तीर्थयात्रा करवाना इरादाथी मारवाड तरफथी आबूजीनी यात्रा करीने पालनपुर भोयणी विरमगाम वढवाण लींबडी बोटाद अने सोनगढ थइने सं० १९६० नी सालमां पालीताणे आव्या हता, तेओनो वेष हजी ढूंढीयानो होवाथी कोई धर्मशाळामां तेमने स्थान मळ्युं नहि, ते वखते एक स्थानकवासी भावसारनी दुकान पालीताणामां हती ते भावसारे ते त्रणे मुनिओने पोताना मकानमां उतार्या, त्यार पछी ते साधुओए श्रीशत्रुंजय पर्वत उपर चढी बहुभावपूर्वक नवे ट्रुकोनी यात्रा करी, रस्तामां जतां आवतां ते मुनित्रयने जोइने केटलाक संवेगी साधुओ बोलता हता के

आ ढूंढीयाओने उपर नहि जवा देवा जोइये, एवा एवा निन्दात्मक वचनोनी परवा राख्या वगर ते मुनिओए पांच यात्रा करी, तेओनी भावना ढूंढियानो वेष छोडीने संवेगिपणु स्वीकारवानी हती पण ते वखते तेम करवाथी मन्दिरमार्गी तथा स्थानकवासी संप्रदायमां परस्पर क्लेश थवा जेवुं वातावरण जाणीने तेओ त्यांथी विहार करीने पछेगाम थइ वरवाळे गया, त्यां ते साधुओए ढूंढक वेषनो त्याग करी मन्दिरमार्गीनो वेष धारण कर्यो अने श्रीमोहनलालजी महाराजना समुदायना श्रीमसममुनिजी पासे त्रण महिना सुधी रहीने साधुनी दरेक क्रिया शिखी लीधी परन्तु रेल्वेद्वारा दूर दूरनी यात्रा करवानी भावना होवाथी संवेगिपणानी दीक्षा लीधी नहि अने पादविहारथी तथा श्रावको टीकीट कढावी आपे त्यारे रेलविहारथी यात्रा करवा लाग्या ए रीते तेओए श्रीसमेतशिखरजी तथा पावापुरी राजगृही चंपापुरी अजीमगंज अने कलकत्ता वगेरेनी यात्राओ करी अने चोमासां अनुक्रमे सं० १९६० नुं खेराळु १९६१ नुं पालनपुर १९६२ नुं शिरोही १९६३ नुं अजीमगंज १९६४ नुं मालेगाम १९६५ नुं सादडी १९६६ नुं वाली १९६७ नुं मेडता १९६८ नुं कुचेरा १९६९ नुं पाचोरा अने १९७० थी १९७४ सुधीना नागोरमां कर्यां, छेल्ला पांच चोमासां एकीसाथे नागोरमां करवानुं कारण ए हतुं के श्रीरुपचन्दजी महाराजनी तबीयत नरम रह्या करती हती, घनता उपचारो करवा छतां पण सं० १९७४ ना श्रावण सुदी १४ नुं पाक्षिक प्रतिक्रमण करी बृहच्छांति सांभळतां

सांभळतां समाधिपूर्वक तेओ नागोरमां ज स्वर्गवास पाम्या, पोताना गुरु महाराजनी सेवामां मुनि श्रीगुलाबचन्दजी तथा गिरधरलालजी पण नागोरमां रोकाइ रह्या हता तेओ हवे छुटा थया एटले चोमासा बाद पादविहार करी फलोधी मेडता जेतारण सोजत आउवा नांडोल वरकाणा खीमेल शिवगंज नाणा पिंडवाडा खराडी पालनपुर मेसाणा अमदावाद सरखेज बावळा धोळका धधुंका बरवाळा वळा अने उमराळा थइने पालीताणे आव्या ते ज अरसामां मुंबईथी विहार करीने आपणा चरित्रनायक पंन्यासजी श्रीऋद्धिमुनिजी महाराज साहेबनुं पण पालीताणे पधारवुं थयुं, तेओनी पासे सं० १९७५ ना वैशाख सुदी ६ ना रोज ते बन्ने मारवाडी मुनिओए दीक्षा लीधी, पंन्यासजी महाराजे श्रीगुलाबचन्दजीने पोताना शिष्य तरीके जाहेर करी श्रीगुलाबमुनि नाम स्थापन कर्युं अने श्रीगिरधारिलालजीने श्रीगुलाबमुनिजीना शिष्य तरीके जाहेर करी गिरिवरमुनि नाम स्थापन कर्युं, त्यार बाद पालीताणेथी विहार करीने चमारडी उमराळा वळा धोलेरा अने बोरु थइने पंन्यासजी महाराज खंभात पधार्या अने शेठ अम्बालाल पानाचन्दनी धर्मशाळामां सं० १९७५ नुं सत्तावीसमुं चोमासुं कर्युं, चोमासा पछी खंभातथी विहार करीने जम्बूसर आमोद समनी भरुच अंकलेश्वर सायण सुरत नवसारी वलसाड दाहाणुं पालगढ अगासी अंधेरी अने भायखला थइने लालबाग जैन उपाश्रयमां पधारी सं० १९७६ नुं अट्ठावीसमुं चोमासुं पंन्यासजी महाराजे मुंबईमां कर्युं, चोमासा बाद खंभातवाळा शेठ

गांडाभाई रतनचन्दने आठ दिवसनो महोत्सव करवो हतो. तेथी तेमणे आग्रह पूर्वक विनति करी के आप खंभात पधारो तो मारे महोत्सव करवो छे, तेमना अत्यंत आग्रहथी मुंबईथी विहार करी सुरत अने भरुच थइने पंन्यासजी महाराज खंभात पधार्या त्यां शेठ गांडाभाईए महाराज साहेबनी हाजरीमां ठाठ माठथी आठ दिवसनो महोत्सव कर्यो त्यार पछी खंभातथी विहार करीने बोरसद समनी भरुच अने कठोर थइने श्रीमोहनलालजी जैन ज्ञानभंडारने सुव्यवस्थित करवा सुरत पधार्या, अहीं प्रसंगानुसार श्रीमोहनलालजी जैन ज्ञानभंडारनी हकीकत जाणवा योग्य होवाथी पाठकोने जणाववामां आवे छे।

खास करीने मुंबई अने सुरतना जैनोना महदुपकारी श्रीखरतरगच्छ नभोमणि जगत्पूज्य परमयोगी वचनसिद्धिवाळा श्रीमोहनलालजी महाराज सपरिवार सं० १९६२ मां छेल्लीवार सुरत पधार्या ते वखते सुरतनी ओसवाल ज्ञातिमां अग्रेसर गणाता शेठ नगीनचन्द कपूरचन्द झवेरीने महाराज साहेबे उपदेश आप्यो के तमने तमारा पुण्यानुसार लक्ष्मीनी प्राप्ति सारी थयेली छे तो खेडुतो जेम पोताना क्षेत्रमांथी प्राप्त थयेला अनाजनो भविष्यमां विशेष अनाजनी प्राप्तिने अर्थे पाछा तेज क्षेत्रमां व्यय करे छे तेम तमने पण पूर्वे करेलां पुण्यकार्योथी जे लक्ष्मीनी प्राप्ति थयेली छे तेथी पण भविष्यमां विशेष लक्ष्मीनी प्राप्तिने अर्थे तमारे ते लक्ष्मीनो पुण्यकार्योमां जेम बने तेम वधारे व्यय करवो जोइये, तमारा जेवा अनेक जैन धनाढ्योनी वसतिवाळा आ तमारा सुरत जेवा मोटा शहेरमां

जैननुं कोई पुस्तक चतुर्विध संघने तथा बीजा कोई ज्ञानना रसीया मनुष्यने जोइये तो तरत मळी शके एवो एक पण जैन ज्ञानभंडार नथी माटे तेवा एक भंडारनी हस्तीनी खास जरुर छे, मारी जींदगीमां मारी पासे घणां पुस्तकोनो संग्रह थयेलो छे, मारी हवे अन्तिमावस्था होवाथी तमारा जेवा कोई गृहस्थ तरफथी भंडारने माटे सारा मकाननी सगवड थाय तो मारुं बधुं पुस्तक संघने अर्पण करी एक सारा भंडारनी जरुरीयात पुरी पाडवानी मारी इच्छा छे। श्रीमोहनलालजी महाराजना परमभक्त गणाता अने श्रीमोहनलालजी महाराजनी कृपाथी ज मारी उपर लक्ष्मी देवीनी कृपा थयेली छे एवुं माननारा शेठ नगीनचन्द कपूरचन्द झवेरीने महाराज साहेबना उपदेशनी एवी तात्कालिक असर थई के ते ज वखते कंइ पण लांबो विचार कर्या वगर शेठ साहिबे महाराज साहेब आगळ जाहेर कर्युं के आप साहेब आपनुं बधुं पुस्तक ज्ञानभंडारने अर्पण करवा इच्छो छो तो हुं ते पुस्तकोनी रक्षा थइ शके एवुं पत्थरनुं ज्ञानभंडारमाटेनुं सुन्दर मकान बंधावीश अने आपना नामथी ते ज्ञानभंडार जाहेर करीने दरेक माणस तेनो लाभ लइ शके एवी व्यवस्था सुरतनो जैन संघ करशे, ए प्रमाणे मकाननी सगवड थवानुं जाहेर थवाथी महाराज साहेबे पोतानी पासेनो हस्तलिखित तथा मुद्रित ग्रंथोनो मोटो संग्रह सुरतना श्रीसंघने अर्पण कर्यो, त्यार बाद श्रीमोहनलालजी महाराज सुरतमां ज थोडा दिवसमां स्वर्गवास पाम्या त्यार पछी शेठ नगीनचन्द कपूरचन्द झवेरीये श्रीमोहनलालजी जैन

उपाश्रयनी समीपमां ज थोडा वखतमां श्रीमोहनलालजी जैन ज्ञान भंडार माटे सुन्दर मकान बंधाव्युं तेमां बधुं पुस्तक स्थापन करी श्रीमोहनलालजी जैन ज्ञानभंडार जाहेर कर्यो ।

भंडारनी स्थापना तो थइ गई परन्तु तेना निभावने माटे कोई जातनुं फंड न हतुं तेथी भंडारनी व्यवस्था सारी न हती. अने केटलाक सारा हस्तलिखित अमूल्य ग्रन्थो तो चोराइ पण गया हता, केटलोक टाइम वीति गया बाद ते वात उपरोक्त ज्ञान भंडारनुं मकान बंधावी आपनार शेठ नगीनचन्द कपूरचन्द झवेरीना सरलस्वभावी सुपुत्र शेठ फकीरचन्द नगीनचन्द झवेरीये ते वखते मारवाडमां विचरता पंन्यासजी श्रीहर्षमुनिजीने जणावी अने भंडारनी सुव्यवस्था करावा माटे सुरत पधारवानी आग्रहभरी विनति करी, तेथी गुरुभक्तिमां सावधान विद्याप्रेमी पंन्यासजी श्रीहर्षमुनिजी घणो लांबो विहार करीने पूज्य गुरुवर्यना ज्ञानभंडारनी सुव्यवस्था करावा माटे सुरत पधार्या, ते वखते सुरतना संघे पंन्यासजी महाराजनो प्रवेश घणा ज उत्साह अने आडम्बरथी कराव्यो हतो, श्रीमोहनलालजी जैन ज्ञानभंडारना कार्यवाहकोने खातरी थइ के पंन्यासजी महाराज श्रीहर्षमुनिजीना उपदेश अने प्रयत्नथी हवे जरुर ज्ञानभंडारनी व्यवस्था सुधरी जशे परन्तु " न जाने जानकीनाथ ! प्रभाते किं भविष्यति " माणस धारे छे शुं, अने कुदरत करे छे शुं, जे दिवसे पंन्यासजीए सुरतमां प्रवेश कर्यो ते ज दिवसे तेओ एकदम बीमार थइ गया, मांदगीए जोतजोतामां भयंकर रुप पकडयुं ते वखते श्रावकोए प्रसिद्ध

प्रसिद्ध वैद्यो तथा डाक्टरोने लावीने अनेक उपचारो कर्या पण कहेवत छे के " टूटी तेनी बूटी नहि " फक्त चार दिवसमां ज पंन्यासजी श्रीहर्षमुनिजीनो सुरतमां स्वर्गवास थइ गयो तेथी सुरतना संघमां हाहाकार वर्ताइ गयो, पंन्यासजी महाराज घणे लांबे वखते सुरत पधारेला होवाथी जैन धर्मनी अनेक प्रकारनी उन्नतिना कार्यो थवानी लोकोनी धारणा निष्फळ गइ, श्रीमोहनलालजी जैन ज्ञानभंडारना कार्यवाहकोनी आशा उपर पण पाणी फरी वळ्युं, छतां पंन्यासजी महाराज श्रीहर्षमुनिजीनी सतत सेवा करनार अने तेओना प्रीतिपात्र श्रीयुत क्षान्तिमुनिजीने जोइने तेओए कल्पना करी के कदाच भंडारनी सुव्यवस्था कराववा माटे श्रीयुत क्षान्तिमुनिजी प्रयत्न करशे परन्तु तेओनी ते कल्पना पण निष्फळ गइ, त्यार पछी केटलोक टाइम वीति गया बाद श्रीमोहनलालजी जैन ज्ञानभंडारनी उन्नतिने अर्थे भंडारना कार्यवाहकोनी दृष्टि द्रव्य क्षेत्र काळ अने भावने अनुसरी वर्तनार उग्रविहारी तपस्वी श्रीमोहनलालजी महाराजनी घणी सेवा करनार आपणा चरित्रनायक पंन्यासजी महाराज श्रीऋद्धिमुनिजी उपर पडी तेथी तेओने विनति करी सुरत लाववानो मनसूबो कर्यो, ते वखते पंन्यासजी श्रीऋद्धिमुनिजी पंन्यासजी श्रीक्षान्तिमुनिजी श्रीसिद्धिमुनिजी तथा श्रीमनोहरमुनिजी खंभातमां बिराजता हता तेओने विनति करवा सुरतथी शेठ फकीरचन्द झवेरीये पोताना महेताजी कपूरचन्द साकरचन्दने खंभात मोकल्या, तेमणे त्यां जइने पंन्यासजीने जणाव्युं जे साहेब आप सुरत पधारो अने श्रीमोहनलालजी जैन ज्ञान

भंडारने सुव्यवस्थित करो। तेओनी आग्रहभरी विनंतिथी अने पोताना दादा गुरुश्रीना भंडारनी हालत सुधारवी ए मारी पहेली फरज छे एम विचारीने खंभातथी सुरत जवा माटे विहार कर्यो, ते वखते पेटलादमां शेठ छगनभाईना अट्टाइ महोत्सव प्रसंगे प्रवर्तक श्रीकान्तिमुनिजी महाराज श्रीयुत कल्याणमुनिजी तथा श्रीयुत हीरमुनिजी पधारेला हता तेथी पंन्यासजी महाराज पण पेटलाद पधार्या त्यां महोत्सव शान्तिस्नात्र अने संघजमण वगेरे धार्मिक कार्योनी समाप्ति बाद प्रवर्तकजी महाराजे पंन्यासजीने जणाव्युं जे आ सिद्धिमुनि आपणा समुदायथी घणा वखतथी स्वयमेव अलग थइ भावनगर जइ पं० श्रीगंभीरविजयना शिष्य थइने गंगविजय तरिके जाहेर थयेल परन्तु पोताना स्वभावथी त्यां एने फावी शक्युं नहि एटले पोतानुं नवीन नाम गोपवीने असल नामने आगळ करी रहेल छे माटे एनो स्वभाव जोतां एने पाछो आपणा समुदायमां शामिल करवानी मारी पोतानी तो मरजी नथी, ते वखते सिद्धिमुनिजीए प्रवर्तकजी आदि वडीलोने नर्म पडीने पोतानी आगली भूलो तरफ नहि जोतां समुदायमां भेळवी लेवानी आजीजी करी तेथी प्रवर्तकजीए पंन्यासजीने जणाव्युं जे तमारी इच्छा होय तो भले हाल तमे एने तमारी साथे राखो, तमारी आज्ञामां केवी रीते रहे छे ते जूओ पछी आगळ उपर एने माटे विचार करीशुं, ते वात सिद्धिमुनिजीए कबूल करी एटले पंन्यासजी श्रीऋद्धिमुनिजी पं० श्रीक्षान्तिमुनिजी श्रीसिद्धिमुनिजी तथा श्रीमनोहरमुनिजी

पेटलादथी विहार करी बोरसद उमेटा पादरा अने भरुच थइने सुरत पधार्या, थोडा दिवस बाद नवसारीवाळा शेठ अमरचन्दभाईए सुरत आवीने पंन्यासजी महाराजने विनति करी के अमारा कुटुंबनी एक बेनने नवपदजीनुं उजमणुं तथा महोत्सव करवानो छे ते बधुं काम मने सोंप्युं छे तेथी आप थोडा दिवस माटे नवसारी पधारवानी कृपा करो, ते विनति स्वीकारीने पंन्यासजी महाराज आदि ठाणा ४ नवसारीमां सत्कार पूर्वक पधार्या त्यां नवपदजीनुं तथा ज्ञानपंचमीनुं उजमणुं जळयात्रानो वरघोडो आठ दिवसनो महोत्सव शान्तिस्नात्र अने संघजमण आदि धार्मिक कार्यो पंन्यासजी महाराजनी छत्रछायामां घणा ठाठथी थयां, नवसारीमां आवो महोत्सव क्वचित ज थतो होवाथी अने पंन्यासजी महाराजनो योग होवाथी वलसाडथी शेठ गांडाभाई मागजी, जीवदयावाळा शेठ लल्लुभाई गुलाबचन्द झवेरी तथा शेठ मगनभाई, मुंबईथी शेठ केसरीचन्द भाणाभाईवाळा श्रीयुत फकीरभाई सुरतथी शेठ सुरचन्दभाई वदामी जज तथा महेताजी कपूरचन्द वगेरे बहार गामनां घणां माणसो आव्यां हतां, ते महोत्सव पुरो थया बाद वलसाडवाळानी विनतिथी चार ठाणा वलसाड पधार्या, त्यां शेठ नाथालाल खुमचन्द कोठारी तरफथी नवो बंधायेल आलीशान उपाश्रय तेना कार्यवाहकोए पांच दिवसनो उत्सव करीने पंन्यासजी श्रीऋद्धिमुनिजीना हस्ते खुल्लो मुकाव्यो त्यार बाद वलसाडथी विहार करी पंन्यासजी पाछा सुरत पधार्या, अने गोपीपुरामां श्रीमोहनलालजी जैन उपाश्रयमां सं० १९७७

मुं ओगणत्रीसमुं चोमासुं रह्या, ते वखते सुरतना गोपीपुरामां मोटा रस्ता उपर रहेता शेठ चुनीलाल गुलावचन्द दालीया जेओ सरकारी जंगलखातामां रु. ११०० ना पगारथी नोकरी करी रीटायर थइने हालमां पेन्सन उपर छे तेओने पंन्यासजी महाराजे वात करीके तमारा जेवा उंची केळवणी पामेला अने निवृत्ति-जीवन गाळनाराए श्रीमोहनलालजी जैन ज्ञान भंडारनी देख-रेख राखी व्यवस्थासर भंडारनो वहीवट करवो जोइये, त्यारे तेमणे जणाव्युं के भंडारनो उत्तम प्रकारे वहीवट चलाववा माटे पैसानुं साधन तो छे नहि एटले शी रीते सुन्दर व्यवस्था करी शकाय, पंन्यासजी महाराजे जवाब आप्यो के ते वात मारी जाणमां आवी छे तेथी भंडारना निभाव फंडने. सारा पाया उपर लाववानो प्रयत्न चाली रह्यो छे परन्तु सारुं फंड थया पछी सारा कार्यकर्तानी जरुरत होवाथी तमने में भंडारनुं काम सारी रीते संभाळवानी वात करी छे, त्यारे दालीयाजीए जणाव्युं जे जो आपना प्रयत्नथी निभाव फंड सारुं थई जशे तो भंडारना सुव्यवस्थित काम काज माटे हुं माराथी बनती मदद जरुर आपीश ।

चोमासाना प्रारंभथी ज श्रीमोहनलालजी जैन ज्ञान भंडारने सारा पाया उपर लाववानो प्रयत्न पंन्यासजी महाराजे करवा मांड्यो, प्रथम तो भंडारना पुस्तको माटे कबाटोनी जरुरत हती तेथी ते बाबतनो उपदेश आपतां नवापुरावाला शेठ कृष्णाजी जोधाजीए सौथी प्रथम रु० २०० नोंधाव्या त्यार पछी पंन्यासजी महाराजना सतत प्रयत्न अने उपदेशना प्रतापे

जूदी जूदी व्यक्तियो तरफथी एक साइझना कुल ४५ कबाटोनी मदद मळी, दरेक कबाट उपर भेट अपनारनुं नाम लखावी भंडारमां मुकाव्या अने तेमां पुस्तकोने व्यवस्थितरीते गोठववामां आव्या, त्यार पछी पंन्यासजी महाराजना उपदेशथी शेठ लालूभाई हेमचन्द मुखडीया तथा शेठ हीराचन्द जीवणजी उपधान वहन कराववा तैयार थया, पंन्यासजी महाराज श्रीऋद्धिमुनिजीए विद्वद्वर्य महाराज श्रीमाणेकमुनिजी तथा भंडारना कार्यवाहको साथे मसलत करीने एवो विचार कर्यो के श्रीमोहनलालजी जैन ज्ञानभंडारना मकानमां आ उपधाननी क्रियाओ कराववी अने माळ वगेरेनी उपधान अंगेनी बोलीनी जे उपज आवे ते भंडारना निभाव फंडमां लइ जवी, त्यार पछी पर्युषणना दिवसोमां गोपीपुराना उपाश्रयमां श्रीसंघ समक्ष जाहेर करवामां आव्युं के आवती विजयादशमीने रोज गोपीपुरामां आवेला श्रीमोहनलालजी जैन ज्ञान भंडारना मकानमां उपधान तप शरु कराववामां आवशे अने ते उपधानमां माळवगेरेनी जे उपज आवशे ते ज्ञानभंडारना निभाव फंड खाते लइ जवामां आवशे, ते वखते शेठ लालूभाई हेमचन्द तरफीवाळाए तथा शेठ हीराजन्द जीवणजीए उभा थइने श्रीसंघने जणाव्युं जे उपरोक्त शरतथी उपधान वहेवडाववानी अमारी इच्छा छे माटे संघ तरफथी अमने रजा मळवी जोइये, ते ज वखते संघ तरफथी श्रीमोहनलालजी ज्ञान भंडारना कार्यवाहक शेठ फकीरचन्द नगीनचन्द झवेरीये उभा थइने शेठ लालूभाईने तथा शेठ हीराचन्दभाईने चांदलो करी उपधान वहन

करावनानो आदेश आप्यो, त्यार बाद विजयादशमीने दिने श्रीमोहनलालजी जैन ज्ञान भंडारना मकानमां उपधान क्रियानो प्रारंभ कराववामां आव्यो ते ज दिवसे ८० माणसोए उपधान-तपमां प्रवेश कर्यो।

आ संसारमां अनादिकाळथी ईर्ष्यालुओनी हस्ती चाली आवे छे, कोई माणस सारुं काम करतो अथवा करावतो होय तेना उपर ईर्ष्या राखीने तेनाथी विशेष सारुं कार्य करवा अथवा कराववानो प्रयत्न करवामां आवे तो तो ते ईर्ष्या पण प्रशस्य गणाय परन्तु एवा प्रकारनी ईर्ष्या करनार तो कोईक ज वीरलो होय छे, ज्यारे सारुं कार्य करनार के करावनार उपर ईर्ष्याए करीने तेना कार्यमांथी कांइ पण मारी मचडीने भूल शोधी काढी अगर तो सारुं कार्य करनार करावनारमां कदाच कोई अंगत दूषण होय तो तेने अने नहि होय तो उप-जावी काढीने पण जाहेर करी ते सत्कार्य करनारने करावना-रने तथा साथे साथे ते सत्कार्यने पण वगोवनारा आ दुनियामां डगले ने पगले जोवामां आवे छे।

अहीं सुरतमां पण श्रीमोहनलालजी जैन ज्ञान भंडारनी उन्नतिने अर्थे सतत प्रयत्न करनार पंन्यासजी श्रीऋद्धिमुनिजी महाराज उपर ईर्ष्यालुओनी द्रष्टि पडी, तेओए येन केन प्रका-रेण पंन्यासजीना सत्कार्यमां विघ्न नांखवानुं नक्की कर्युं।

श्रीजैन धर्मना मुख्य बे सम्प्रदायो छे, एक श्वेताम्बर अने बीजो दिगम्बर, दिगम्बर संप्रदायना श्रावको तो आ पंचम काळमां परम आलम्बनभूत श्रीजिनेश्वरनी वाणीना पठन पाठन अने

स्वाध्यायमां ठीक ठीक प्रयत्न करता जणाय छे, अन्य संप्रदायना प्रखर विद्वानो साथे वाद विवादमां उतरी जैन धर्मनां उच्च तत्त्वोने प्रकाशमां लावी जैनेतरोनां तत्त्वोने झांखा पाडी जैन धर्मनी उत्कृष्टता साबीत करी बतावनारा अनेक दिगम्बर जैन श्रावक पंडितो जोवामां आवे छे, ज्यारे अमारा श्वेताम्बर संप्रदायना श्रावकोए तो प्रायः सेंकडे ९९ टकाए पोताने तारवानो, जैन धर्मनो प्रचार करवानो तथा जैन धर्मने टकावी राखवानो जाणे जैन साधुओने ठेको ज आपी दीधो होय अने पोते जैन धर्मना सिद्धान्तोने जाणवा समजवा माटे प्रयत्न करवाना जाणे सोगंद ज लइ लीधा होय तेवुं जोवामां आवे छे, जैन धर्मना मूळतत्त्वोने जाणवा माटेनी संस्कृत अने प्राकृत भाषाना अभ्यासनी वात तो दूर रही परन्तु कर्मग्रन्थादि प्रकरणो अने तत्त्वार्थसूत्र आदि खास खास ग्रन्थोनो यथार्थ अभ्यास करनारा तो जैनोनी वसतिवाळा मोटा शहेरमां पण मळवा दुर्लभ थइ पड्या छे अने जैनेतरोनी साथे चर्चामां उतरी जैन धर्मनुं मंडन तेम ज अन्य धर्मनुं खंडन करी शके एवा मात्र बे चार जैन पंडितो हालमां जे जोवामां आवे छे ते स्वर्गस्थ शास्त्र विशारद जैनाचार्य श्रीविजयधर्मसूरिजीना प्रयत्नने आभारी छे, आखा जैन श्वेताम्बर संप्रदायनी एवी स्थिति छे तेमां पण आ सुरत शहेर तो मोजीला तरीके प्रसिद्ध ज छे, एवा ए सुरत शहेरमां पण खान पान अने वस्त्रविभूषादिके करी मोज मझा करनारा सर्वे पराओमां गोपीपुरानो नम्बर प्रायः पहेलो गणाइ शके एम छे एटले पंन्यासजी महाराजना सत्कार्यमां जैनशास्त्रनी शाख

सहित विरोध करवानुं काम गोपीपुराना श्रावकोनी शक्ति बहारनुं होइ तेओए कोई साधुने पोतानुं हथीयार बनाववानो विचार कर्यो परन्तु भाग्ययोगे ते टाइमे सुरतमां तेवा साधुनो पण खरुं कहिए तो अभाव हतो, ते वखते नेमुभाईनी वाडीने उपाश्रये ते उपाश्रयना कार्यवाहकोनी विनतिथी पंन्यासजी श्रीऋद्धिमुनिजीए पोतानी साथे रहेला श्रीसिद्धिमुनिजीने चोमासुं करवा मोकल्या हता तेथी तेओ पोताना शिष्यने लइने त्यां पधार्या हता परन्तु त्यां जता न मालूम तेओने केवा अपशुकन थया के थोडा दिवस बाद तेमना शिष्यने तेना सगां वहालां आवीने तकरार करीने घेर लइ गया, ते सिद्धिमुनिजीने पंन्यासजी महाराजना विरोधीओए गमे तेम करीने पोताना हाथमां लीधा, ए सिद्धिमुनिजीए अगाउ केटला अने केवा रंग पलटा करेला ते तथा एनो स्वभाव केवा मकारनो छे ते जाणीने ज पेटलादमां मवर्तक श्रीकान्तिमुनिजीए तो एने साथे राखवानी ना ज पाडेली, पंन्यासजी पोते पण तेना रंग पलटाथी तथा स्वभावथी अजाण न हता छतां ते वखतनी तेनी नम्रता अने आग्रहभरी विनति उपर लक्ष्य राखीने पंन्यासजीए तेने साथे राखेल ते बधुं भूली जइने तेणे तेना असली स्वभावानुसार वर्तन कर्युं, हवे पेला ईर्ष्यालुओरूपी कुहाडाने सिद्धिमुनिरूपी हाथो मळी आववाथी तेमणे पंन्यासजी महाराजना सत्कार्य उपर आक्षेप करनारां हेंडबीलो कोई हाली मवालीने नामे छपावीने सूर्य सामे धूळ उराडवानो धंधो शरु कर्यो, पंन्यासजी महाराजश्रीए तथा श्रीमाणेकमुनिजीए तेओना

आक्षेपोना जवाबो शास्त्रना तथा प्रत्यक्ष प्रमाणना दाखला सहित आप्या हता छतां पोदरो पडे ते धूळ लीधा विना खसे नहि ए दृष्टान्ते सुरतना संघमां आ बाबत चर्चानो विषय थइ पडी तेथी विचार करवाने माटे श्रीमोहनलालजी जैन ज्ञान भंडारना कार्यवाहको १ शेठ फकीरचन्द नगीनचन्द झवेरी २ शेठ केसरीचन्द कल्याणचन्द झवेरी ३ शेठ चुन्नीलाल गुलाबचंद दालीया ४ शेठ दलीचन्द वीरचन्द सराफ ५ शेठ लाल्लूभाई हेमचन्द सुखडीया ६ शेठ तलकचन्द कल्याणचन्द जरीवाळा ७ शेठ छगनलाल चुनीलाल चोकसी अने ८ शेठ मोहनलाल डाह्याभाई भूतवाळा ए आठ कार्यवाहको तथा बीजा अनेक सद्गृहस्थो अने विरुद्ध पक्षवाळाओनी एक सभा भरवामां आवी ते वखते पंन्यासजी महाराजे जणाव्युं के आ उपधाननी क्रिया ज्ञान भंडारना मकानमां करावेली छे तथा आ उपधानने अंगे माळ वगेरेनी बोलीनी जे आवक थशे ते वधी ज्ञानभंडारना उपयोगमां लेवानी छे एम उपधानमां प्रवेश करनाराओने पहेलेथी ठराव करीने जणावी दीधेलुं छे तेथी एमां शास्त्रनो कांइ वांधो आवे एवुं नथी ते बाबतनो शास्त्रनो आधार जोइने ज आ ठराव करावेलो छे, ते सांभळीने शेठ फकीरचन्द तथा शेठ केसरीचन्द बोल्या के पहेलेथी शास्त्रानुकुल आपणे जे ठराव करेलो छे ते मुजब ज्ञान भंडारमां ज उपधाननी वधी उपज लइ जवानी छे, परन्तु शेठ नेमुभाईनी वाडीने उपाश्रये चोमासुं रहेला श्रीसिद्धिमुनिजी आ बाबतमां लोकोने आडुं अवळुं समजावी रहेला छे तेथी ते उपाश्र-

यना आगेवान शेठ नवलचन्द खीमचन्द झवेरी तथा शेठ मोतीचन्द गुलाबचन्द झवेरी वगेरे विरुद्धपक्षवाळाओए निन्दात्मक हेंडबीलो छपावी चर्चा जगाडी छे छतां आपणे तो आपणा अगाउथी करेला शास्त्रानुसारी ठरावने मजबूत वळगी रहेवानुं छे, ते वखते विरुद्धपक्षवाळाओए कह्युं के बीजी तीजी वात हवे रहेवा दो अने आ बाबत उपर विचार करीने श्रीमोहनलालजी महाराजना ज्ञान भंडारना कार्यवाहको जे कहे ते अमारे कबूल छे, त्यारे कार्यवाहकोए कह्युं के जो एम कबूल होय तो तमे ते बाबतनी सही करी आपो, त्यारे शेठ नवलचन्द खीमचन्द झवेरीये तथा शेठ मोतीचन्द गुलाबचन्द झवेरीये सही करी आपी ते कागळ हालमां शेठ चुनीलाल गुलाबचन्द दालीयाजी पासे मोजूद छे, त्यार बाद ते सभामां पाटणमां बिराजता वयोवृद्ध अनुभवी प्रवर्तक श्री कान्तिविजयजीने अत्रेनी वधी हकीकत जणावीने जवाब मंगावेलो ते जाहेर करवामां आव्यो, पूज्य प्रवर्तकजीए जवाबमां जणावेलुं के तमोए तो पहेलांथी ज ठराव करावेलो छे के आ उपधाननी बधी उपज ज्ञान भंडार खाते लइ जवानी छे परन्तु ठराव न कर्यो होय तो पण देवद्रव्यने ज्ञानद्रव्यमां लइ जवाय एवी शास्त्रनी आज्ञा छे, एटलामां कोई बोल्युं के बीजा आचार्योनो मत पण आ बाबतमां मंगाववो जोइये, त्यारे शेठ केसरीचन्दभाईये कह्युं के जेने तेम करवुं होय ते भले तेम करे अने कदाच कोई आचार्यनी आ बाबतमां विरुद्धता तेमना हस्ताक्षरथी मंगावीने जाहेर करशे तो तेनो शास्त्रना पाठथी खुलासो

करवानुं काम श्रीमाणेकमुनिजीए स्वीकार्युं छे एटले आपणे हवे आपणा करेला ठरावनो अमल करवा सिवाय बीजी तीजी पंचातमां पडवानी जरुरत नथी, वधारामां तेओए जणाव्युं जे सं० १९७७ नी सालमां रतलाममां खरतरगच्छना विद्वान जैनाचार्य श्रीजिनकृपाचन्द्रसूरिजीए उपधान करावेलां तेनी उपज साधारण खातामां लेवडावी छे, सं. १९६२ मां कठोरमां श्रीकल्याण मुनिजीए उपधान करावेलां तेनी उपज साधारणमां लेवडावी छे, पंन्यासजी श्रीहर्षमुनिजीए सं. १९६९ मां आगरामां उपधान करावेलां तेनी उपज साधारणमां लेवडावेली छे, तथा जेमनां पवित्र पगलांथी तथा जेमनी भक्ति करवाथी आपणा सुरत शहेरना जैनो भाग्यशाळी अथवा समृद्धिशाळी थया एवा आपणा परम उपगारी जगत्पूज्य श्रीमोहनलालजी महाराजे सं. १९५५ मां कतारगामना जैन मन्दिरनी प्रतिष्ठा करावेली त्यारे वरघोडानी रथ सिवायनी दरेक बोलीनी उपज साधारण खातामां लेवडावेली अने ए ज महाराजजीना सं. १९५८ ना मुंबईना चोमासामां पर्युषणमां लक्ष्मीदेवीना चोथा स्वप्नानी बोली बाबू साहेब पन्नालालजी पूरणचन्दजीना धर्मपत्नी श्रीमती पार्वतीबेन बोलेला तेनी उपज तथा ते ज पार्वतीबेने उपधान करीने पहेली माळ पहेरेली तेनी उपज साधारणमां लई ते रुपयाथी हालना मुंबईना लालबागना उपाश्रयनी उपरनी छत जडाववामां आवेली छे, ते उपाश्रयमां मोटा पदवीधरो योगनिष्ठो आगमधरो अने पंजाब केसरियो वगेरे चोमासुं करी चुकेला छे,*

---

*त्यार पछी हालना चालु समय सुधीमा तो बीजा पण अनेक आचार्य उपाध्याय पंन्यासादि पदवीधरो ते उपाश्रयमा चोमासुं करी गया छे अने करे छे। लेखक।

पेथापुरमां पंन्यासजी श्रीकमळविजयजीए उपधान करावेलां तेनी उपज पेथापुरमां जैन शाळा बंधाववामां वपरायेली छे ने तेमां साधुओ पण उतरे छे वगेरे अनेक दाखलाओ आपणा ठरावने पुष्टि आपनारा मळी आवे एम छे माटे आपणा करेला ठराव मुजब उपधाननी उपज ज्ञान भंडार खाते लइ जवामां कोई जातनी हरकत नथी एवो निश्चय जाहेर करीने सभा बरखास्त करवामां आवी, त्यार बाद उपधाननी माळनी बोलीने दिवसे सामापक्षवाळानी मोटी हाजरीमां माळना घीनी बोली बोलाववामां आवी ते उपजनो सरवाळो रु० ११००० उपरनो थयो हतो अने पंन्यासजी महाराजना वरदहस्ते माळ पहेराववामां आवी हती तथा ते प्रसंगे महोत्सव करवामां आव्यो हतो ए रीते उपधाननी समाप्ति थइ हती, त्यार पछी थोडा ज दिवसोमां पंन्यासजी श्रीक्षान्तिमुनिजीना शिष्य श्रीयुत कीर्तिमुनिजी सुरत आव्या अने जोर शोरथी लोकोनी आगळ बबडाट करवा लाग्याके उपधाननी माळनी उपज ज्ञानभंडारमां लइ जवानी कोनी ताकाद छे, हुं पण श्रीमोहन-लालजी महाराजना समुदायनो साधु छुं माटे ए उपजना रु० ज्ञानभंडारमां कोई काळे नहि लइ जवा दउं, एवी रीते फुंफाडा तो घणा मार्या परन्तु दाढ काढी नांखेला मदारीना सर्पना फुंफाडानी माफक वधाए तेनी अवगणना करी एटलुं ज नहि परन्तु उलटुं लोको तेमनी वातो करवा लाग्या के एमना समुदायना नायकना आ ज्ञानभंडारनी अस्तव्यस्त स्थिति थइ गइ हती त्यारे तो ए साहेब न मालूम कइ गुफामां कुंभ-

कर्णनी निन्द्रमां घोरता हता अने हवे ज्यारे पंन्यासजी महाराज श्रीऋद्धिमुनिजीए लोकोना विरोधनी दरकार कर्या वगर अत्यन्त परिश्रम करी ज्ञानभंडारनी अन्तरंग तथा वहिरंग दशाने खूब उन्नतिपर आणी मुकी त्यारे एवण जागी गया परन्तु पंन्यासजी महाराजनी जाहोजलाली अने कर्तव्यपरायणता तथा भंडारनी उन्नत दशाने जोइने खुश थवाने बदले जवासाना झाडनी पेठे सुकाया लाग्या ए पण समयनी बलिहारी छे।

त्यार पछी माळनी बोलीनी उघराणी करवामां आवी त्यारे लगभग बधी उघराणी वसूल थवा आवी हती ते वखते मगमांथी जेम कोई गांगडु नीकळी आवे तेम बोली बोलनारामांथी पण एक कालीयावाडीवाळा शेठ लखमाजी मोटाजी नीकळी आव्या खरा, तेमणे बोलेली बोलीना पैसानी उघराणी करवा जनार माणसने तेमणे जणाव्युं के हुं तो माळनी बोलीनुं द्रव्य देवद्रव्य गणाय के ज्ञानद्रव्य गणाय ते बाबतनो बधा आचार्यो पासेथी खुलासो मेळव्या पछी योग्य लागशे तो आपीश एवो रोकडो जवाब आप्यो, त्यार पछी शेठ लखमाजी मोटाजीने नवपदजीनुं उजमणुं करवुं हतुं तेनी बधी तैयारी करीने उजमणानी कुंकुमपत्रिका छपाववानो मुसदो पण माळनी बोलीना पैसा रोकी राखवानी श्रीसिद्धिमुनिजीनी सलाह मळी मध जेवी लागवाथी तेमनी पासे तैयार कराव्यो पछी पंन्यासजी महाराज पासे आवीने कह्यु के अमारे उजमणुं करवुं छे तेनी आ कुंकुमपत्रिका छपाववा माटे तैयार करी छे, त्यारे महाराजजीए जणाव्युं के तमे उपधाननी माळनी बोलीना पैसा

हजी आप्या नथी तेनो बोजो माथे उपाडीने आ उजमणुं करवा तैयार थया छो पण तमे ख्याल राखजो के माळनी बोलीना पैसा आप्या विना तमारो छुटको थवानो नथी, हुं तमने चेतवणी आपुं छुं के माळनी बोलीना पैसा आप्या विना तमे सुखशान्तिथी उजमणुं करी शकशो नहि, माळनी बोलीना पैसा घरमां राखीने जो तमे निर्विघ्नपणे उजमणुं करी लो तो हुं पण श्रीमोहनलालजी महाराजनो प्रशिष्य नहि. ए प्रमाणे खुल्ली चेतवणी आपी छतां तेमणे पोतानो हठवाद छोड्यो नहि, पछी उजमणानी बधी तैयारी थइ गइ अने जे दिवसे शरुआत करी तेज दिवसे शेठ लखमाजी मोटाजी जाते अचानक बिमार पडी गया, त्रण दिवस सख्त बिमार रह्या तेवामां पंन्यासजी महाराजनी चेतवणी याद आवी गइ एटले माळनी बोलीना पैसा बाबत आचार्योनी सम्मति लेवानुं आकाशमां उडावी दइ तरत ज माळनी बोलीना पैसा मोकलावी आप्या। अगाउ भंडारमां रु० ३५०० नी सीलक हती पछी शेठ फकीरचन्द नगीनचन्द झवेरी तरफथी रु० ५००० तथा तेमना भाई झवेरचन्द तरफथी रु० १००० नी मदद भंडारने मळी अने उपधाननी बोलीनी उपज आवी ते बधा मळीने कुल रु० ३०००० त्रीस हजार श्रीमोहनलालजी जैन ज्ञान भंडार खाते जमा थया। भंडारमां भोंयतळीये तथा माळ पर आरस जडाववानी तथा भंडारने अन्दर अने बहारथी रंग रोगान करावी सुन्दर देदीप्यमान करानवानी जरुरीयात हती ते बाबत पण कार्यवाहकोए पंन्यासजी

महाराजने जणाव्यंने कह्यं के आपे भंडारनुं काम हाथमां लीधुं छे तो हवे भंडारने सर्वांगसुन्दर बनाववामां कोई पण वात बाकी नहि रहेवी जोईये, पंन्यासजीने पण ते वात योग्य जणायाथी ते बाबतनो उपदेश करवा मांड्यो, परिणामे जूदी जूदी व्यक्तियो तरफथी नानी मोटी रकमनी मदद मळवा लागी तेमां थी रु० २००० आरस जडाववामां अने रु० १५०० रंगरोगानमां खर्चाया, कबाटो कराववामां रु० ७००० तो पहेलां खर्चाइ गया हता एटले पंन्यासजी महाराजना उपदेशथी कुल रु० ११००० भंडारमां खर्चाया तेमां रु० १००० नी मदद पंन्यासजी श्रीक्षान्तिमुनिजीना उपदेशथी मळी हती बाकीनी बधी मदद पंन्यासजीना उपदेशथी जूदी जूदी व्यक्तियो तरफथी मळी हती अने श्रीगुलाबमुनिजीना उपदेशथी दाहाणुंना संघ तरफथी रु० २०० नी मदद मळी हती. ए रीते भंडारनी अन्तरंग स्थिति तथा बहिरंग स्थिति सद्धर बनावी।

त्यार पछी साधु साध्वीओने भणाववा माटे पंडितने तथा बालक बालिकाओने धार्मिक भणाववा माटे मास्तरने राखीने पंन्यासजी महाराजे ए ज भंडारमां श्रीमोहनलालजी जैन पाठशाळानी स्थापना पण करावेली छे तेनो लाभ घणा साधु साध्वीओ बालक बालिकाओ अने जैनतरो पण लई रह्या छे, तेम ज भंडारमांथी वांचवा माटे पुस्तको आपवा लेवानी सगवड करावेली होवाथी पुस्तक वांचननो लाभ पण लोकोने मळ्या करे छे।

श्रीमोहनलालजी जैन ज्ञान भंडारनी स्थापना थया पछी गोपीपुरामां ज श्रीजैनानन्द पुस्तकालयनी स्थापना पण श्रीआनन्दसागरसूरिजीना उपदेशथी थयेली छे, त्यार पछी फागण वदमां सुरतथी विहार करीने नवसारी अमलसाड वगेरे सुरत जील्लाना गामोमां उपदेश करता करता पंन्यासजी महाराज वलसाड पधार्या अने त्यांना संघना आग्रहथी सं० १९७८ नुं त्रीसमुं चोमासुं वलसाडमां कर्युं, चोमासा बाद वलसाडथी विहार करीने बीलीमोरा जलालपुर सुरत भरुच जम्बुसर अने कावी थइने खंभात पधारी पंन्यासजी महाराज श्रीऋद्धिमुनिजीए सं० १९७९ नुं एकत्रीसमुं चोमासुं खंभातमां कर्युं अने चोमासा बाद विहार करी बोरसद वासद वडोदरा मीयागाम क्षणोर झगडीया मांगरोळ तडकेश्वर अने बहुधान थइने पंन्यासजी महाराज कडोद पधार्या अने त्यांना संघनी विनतिथी सं० १९८० नुं बत्रीसमुं चोमासुं कडोदमां कर्युं । आ चोमासामां पंन्यासजीनी साथे श्रीविजयप्रेमसूरिजीना शिष्य श्रीमनोहरविजयजी पण हता, पंन्यासजी महाराजना उपदेशथी कडोदना संघ तरफथी आसो मासमां उपधान शरु थयां हतां तेनी समाप्ति वखते आठ दिवसनो उत्सव शान्तिस्नात्र तथा संघजमण करवामां आव्यां हतां ।

कडोदमां लाडवा श्रीमाळी भाईयोनी पण वस्ती छे तेओ संघजमणमां शामिल न होता ते बाबत लक्ष्यमां लइने पंन्यासजी महाराजे दाखला दलीलोथी उपदेश आपवा मांड्यो के संघजमणमां जैनधर्मने पाळनारा नवकारमंत्रनुं स्मरण करनारा

कोई पण जैनने अटकावी शकाय नहि छतां "पीछेसे चली आती है" ए कहेवत मुजब केटलाकोने ए वात रुचि नहि परन्तु पंन्यासजी महाराजना अथाग प्रयत्न अने समजावटने परिणामे आखरे त्यांना संघजमणमां लाडवाश्रीमाळी भाईयोने साथे जमाडवानुं नक्की थयुं अने ते प्रमाणे नवकारसीमां सर्व जैन बन्धुओ साथे बेसीने जम्या तेथी लाडवाश्रीमाळी भाईयो पंन्यासजी महाराजनो घणो उपकार मानवा लाग्या, अने कायमने माटे संघजमणमां लाडवाश्रीमाळी भाईयोने साथे जमाडवानो कडोदना संघमां ठराव थवाथी ते भाईयो पण संघना दरेक कार्यमां साथ आपवा लाग्या, तेमज जैन तथा जैनेतरोए आवुं उत्तम कार्य कराववा बदल पंन्यासजी महाराजनी खूब प्रशंसा करी।

त्यार पछी कडोदथी विहार करी मांडवी व्यारा बुहारी करचलीया सीसोदरा गणदेवी वलसाड पारडी अने बगवाडा थइने पंन्यासजी महाराज दम्मण पधार्या, दम्मणनी स्थिरता दर्म्यान दाहाणुं बगवाडा वापी अने वलसाडना आगेवान श्रावको पोतपोताना गाममां चोमासुं करवा माटेनी विनति करवा आव्या हता, ते बधानी स्वामिभक्तिनो लाभ दम्मणना झवेरी खीमचन्दभाईये लीधो हतो। चारे गामवाळाओनी विनति उपर विचार करीने वलसाडवाळा शेठ गांडाभाई मागजीभाई तथा जीवदयाना कामम‌ां घणो ज प्रशंसनीय प्रयास करनार मुंबईनी जीवदया मंडळीना प्रमुख शेठ लल्लुभाई गुलाबचन्द झवेरीनो घणो ज आग्रह होवाथी तथा वलसाडमां

धार्मिक कार्यो विशेष थवाना संयोग जोइने महाराजश्रीए वलसाडनी विनंति स्वीकारी, अने चोमासाने हजी वार होवाथी दाहाणुं मगणाना गामडाओमां विहार करीने धर्मप्रचार कर्या पछी पाछा वळतां वापी अने पारडी थइने पंन्यासजी महाराजे वलसाडमां धामधूमथी प्रवेश कर्यो अने सं० १९८१ नुं तेत्रीसमुं चोमासुं वलसाडमां कर्युं । ते चोमासामां पंन्यासजीए एक एक पारणाने आंतरे अट्ठम जेवी कठिन तपस्या लगातार चार मासनी करीने आत्मिक आनन्दनो अनुभव करी अनेक प्रकारनी आत्मिकशक्तिने खीलवी हती । पर्युषणपर्वनी आराधना करवामाटे वलसाडना संघे आजुबाजुना गामोमां निमंत्रण पत्रिका मोकलेली होवाथी बहारगामनुं घणुं माणस खास पर्युषण करवा वलसाडमां आव्युं हतुं, तेओमां फणसावाळा शेठ मेघराजजीना बेन श्रीमती सुरजबेने १० उपवासनी तपस्या करी हती अने १५ दिवस सुधी तेमना तर्फथी रसोडुं चालु राखी साधर्मीभाईओनी भक्ति करवामां आवी हती, तदुपरांत परीयावाळा शेठ छोटालालभाई, अंबाचवाळा शेठ ताराचन्द जेताजी अने दवीयरवाळा शेठ केसरीमलजी जेठाजी कांकरीया तर्फथी पण जुदा जुदा त्रण रसोडां चालु होइ दरेक रसोडे स्वामिभाईनी भक्ति करवामां आवती हती । आखा हिन्दुस्थानमां तथा बहारना बीजा देशोमां पण जीवदया मंडळीमार्फत तन मन अने धनथी जीवदयानुं अत्युत्तम काम करनार शेठ लल्लूभाई गुलाबचन्द झवेरीये आखा चोमासामां महाराज साहेबने वांदवामाटे बहारगामथी आवनार भाविकोनी

भक्तिनो लाभ लीधो हतो। आसो महिनामां शेठ लल्लुभाई गुलाबचन्द झवेरी तथा शेठ नगीनदास झवेरी तर्फथी उपधान वहन करावायां हतां तेमां घणा गामना भाई बेनोए प्रवेश कर्यो हतो, उपधाननी समाप्ति थतां पंन्यासजी महाराजने वरद हस्ते माळ पहेराववानी क्रिया थइ हती तथा महोत्सव करवामां आव्यो हतो ते वखते जीवदयाखाते आसरे रु० ३००० नी उपज थइ हती।

चोमासा बाद ऊंटडीगामना धर्मनिष्ठ शेठ जयचन्दभाईये पंन्यासजी महाराजने विनति करी जणाव्युं जे हवे मारी छेल्ली अवस्था छे तेथी मारे हाथे करेली कमाइमांथी अट्ठाइ महोत्सव वगेरे धर्मकार्यमां केटलुंक द्रव्य वापरवानी मारी भावना थइ छे माटे कृपा करीने आप अमारे गाम पधारो तो मारी भावनानो अमल करूं, तेथी तेमनी विनति स्वीकारीने महाराजश्री ऊंटडी पधार्या ते दर्म्यान शेठ जयचन्दभाई वलसाड बीलीमोरा वगेरे नजीकना गामोमां जाते जइने पोताना स्नेहिवर्गने आमंत्रण करी आव्या अने घेर आवीने महोत्सव तथा स्वामिवत्सल घणा उमंगथी करीने पोतानी आप कमाइना द्रव्यनो सदुपयोग कर्यो, त्यांथी डुंगरीना श्रावको विनति करीने महाराजश्रीने पोताने गाम डुंगरीमां लइ गया अने ठाठमाठथी पूजा भणावी स्वामिवत्सल कर्युं, त्यार पछी त्यांथी विहार करी बीलीमोरा नवसारी अने मरोली थइने पंन्यासजी महाराज सुरत पधार्या, ते वखते शेठ छोटुभाई भगवानदास झवेरीये महाराज साहेबने जणाव्युं जे आप साहेब श्रीसमेतशिखरजीनी यात्राए पधारो

तो आपश्रीने रस्तामां जे जे प्रकारनी सहायता जोइये ते बधी हुं पुरी पाडवानी इच्छा राखुं छुं, आप जो शिखरजीनी यात्राए जवानो नक्की विचार करो तो रस्तामां थनारा खर्चपेटे रु० ५००० आजे ज शेठ नगीनचन्द कपूरचन्द झवेरीने त्यां मुकी आवुं, आप साहेब शिखरजी पधारशो तो अमारा आखा कुटुंबने पण शिखरजीनी यात्रानो लाभ मळशे, ए महान् तीर्थनी यात्रा हजी सुधी हुं करी शक्यो नथी। शेठ छोटुभाईना आग्रहथी श्रीसमेतशिखरजीनी यात्राए जवानुं नक्की करी सुरतथी विहार करी बारडोली अने कडोद थइने पंन्यासजी मांडवी पधार्या त्यांना शेठ मोतीचन्दभाईनी अट्ठाइ महोत्सव शान्तिस्नात्र तथा संघजमण करवानी भावना थवाथी पंन्यासजी महाराज ते धार्मिक कार्योनी समाप्ति थयाबाद त्यारा सोनगढ नवापुरा चिंचपाडा अने खांडबारा थइने नन्दरबार पधार्या अने त्यां एक जैन श्रावकनुं जीन छे एम खबर मळवाथी महाराज साहेबे ते जीनमां मुकाम कर्यो, त्यारथी नन्दरबार आवतां रस्तो घणो कठण होवाथी महाराजजीने पगे सोजा आवी गया अने ते सोजानी पीडाथी तावनी पधरामणी पण थइ चुकी हती, पछी ते जीनना मालिक सुरतवाळा शेठ डाह्याभाई मंछाराम खबर पडी के सुरत तरफथी विहार करीने कोई साधु महाराज आपणा जीनमां पधार्या छे, शेठे विचार कर्यो के जोउं तो खरो के कया महाराज छे, पछी जइने जूवे छे तो पोताने जैन धर्मनी ओळखाण करावी सन्मार्गे चडावनार पोताना पर-

मोपकारी गुरु महाराज पंन्यासजी श्रीऋद्धिमुनिजीने जोइने शेठ खूब प्रसन्न थया पछी महाराजश्रीने वन्दना करी तेमनी स्थिति जोइने औषधादिनो उपयोग कर्यो, त्यार बाद महाराजश्रीनो बहु लांबो विहार करवानो विचार जाणीने शेठ कह्युं के धर्मोपदेश आपतां अने संयममार्गनुं पालन करतां आपने तो सदाये यात्रा सरखुं ज छे छतां समेतशिखरजी जेवा महान् तीर्थनी यात्राए जवानो आपनो भाव छे तो भले पण तवीयत पूरेपूरी सुधरे नहि त्यां सुधी तो आपने अहींथी विहार करवा दइश नहि. आपने कदाच एवो विचार आवतो होय के हालमां मदद करनार श्रावक मळेल छे तो जो हुं हमणा शिखरजी नहि जइश तो पछी पाछुं सहाय करनार कोण मळशे, तो ते बाबतनी आप चिन्ता करशो नहि, आपश्रीनी तवीयत सुधरी गया पछी आपनी शिखरजी जवानी भावना हशे तो दरेक प्रकारनी सगवड हुं करावी आपीश कारणके आप तो मने जैन धर्ममां स्थिर करनारा मारा परम उपकारी छो, वळी गुजरात थी बहु दूर नहि छतां पण अनार्य जेवा आ शहेरमां आपश्रीना अचानक दर्शन थयां छे तो अत्रे तैयार थयेला जैन मन्दिरनी प्रतिष्ठा आपने हाथे करावी लेवानी मारी भावनाने सफळ कर्या वगर आप अहीं थी विहार करवानी वात ज काढशो नहि, अने काढशो तो पण हुं आपने विहार करवा दइश नहि, एम कहीने सुरतथी झवेरी छोटुभाईना मोकलेला माणसो जे महाराजश्रीनी साथे हता तेओने सुरत रवाना करी दीधा, महाराजजीए पण त्यारथी नन्दरबार सुधीना फक्त ६२ मैलना

विहारथी थयेला अनुभवने ध्यानमां लइने श्रीसमेतशिखरतीर्थने त्यांथी ज नमस्कार करी ते वखते आगळ जवानो विचार मांडी वाळ्यो, त्यार पछी नन्दरवारमां उपाश्रय हतो नहि तेने माटे महाराज साहेबे नन्दरवारना जैन संघने उपदेश आपवाथी श्रीसंघे १५००० रुपीया खरचीने सुन्दर नवीन उपाश्रय कराव्यो पछी प्रतिष्ठा माटेनी दरेक बाबतनी तैयारी करवा मांडी, प्रतिष्ठानो दिवस ज्यारे नजीक आव्यो त्यारे त्यांना संघ पासे शेठ डाह्याभाइये प्रतिष्ठा संबंधी कुल खर्च करवानी तथा तेर दिवसनी नवकारसी करवानी रजा मांगी, त्यारे श्रीसंघे जणाव्युं के बधो खर्च करवानी तथा बधी नवकारसी करवानी आपने एकलाने रजा आपी शकाय एम नथी कारणके पोताने आंगणे आवेला आवा सर्वोत्तम प्रसंगे संघना दरेक भाईने यथाशक्ति लाभ लेवानी इच्छा थाय ए स्वाभाविक छे, छतां शेठ डाह्याभाईना घणा ज आग्रहथी संघे त्रण नवकारसीनी तेमने रजा आपी अने बीजी दश नवकारसीयो बीजा भाईयो तरफथी करवामां आवी, ए रीते प्रतिष्ठा प्रसंगे तेर दिवसनो महोत्सव अने तेर संघजमण थयां हतां अष्टोत्तरी स्नात्र पण भणावायुं हतुं अने सं० १९८२ ना ज्येष्ठ सुदी ६ ना दिवसे पंन्यासजी महाराजना वरदहस्ते प्रतिष्ठा करवामां आवी हती, शेठ डाह्याभाईये घणा ज उत्साहथी द्रव्य परथी ममता उतारीने उदार दिलथी चढावो बोलीने भगवानने गादीए बेसाडवानो तथा ध्वजादंड अने कळश चढाववानो आदेश लीधो हतो, नन्दरवारनी प्रतिष्ठाने अंगे शेठ डाह्याभाईए

कूल रु० ५०००० खच कर्यो हतो, प्रतिष्ठाना प्रसंगमां नन्दरबारना दरेक जैन भाईनो उत्साह अपूर्व हतो अने पोताने आंगणे पधारेला स्वाभिभाईयोनी भक्ति तेओए घणी सुन्दर करी हती एम प्रतिष्ठा प्रसंगे बहारगामथी आवनार घणा भाईयो कहेता हता, पूज्य पंन्यासजी महाराजश्रीना ब्रह्मचर्यना तथा उग्र तपस्याना प्रतापे तथा श्रीमोहनलालजी महाराजनी सेवाभक्ति करीने पंन्यासजीए प्राप्त करेला आशिर्वादना प्रतापे अनार्य जेवा प्रदेशमां आवेला नन्दरबारमां जैनोनी घणी थोडी वस्ती होवा छतां प्रतिष्ठा प्रसंगे कूल एक लाख रुपीयानो खर्च थयो अने उपज पण घणी सारी थइ हती ए रीते प्रतिष्ठानुं कार्य निविघ्न समाप्त थयुं हतुं, भावनाओ तथा उपरा उपरी संघजमणोथी ते प्रदेशमां जैनधर्मनी घणी ज शोभा वधी हती,

चोमासा माटे घणा गामोनी विनतिओ पंन्यासजी महाराज पासे आववा लागी तेमां आखा सुरत जील्लामां प्रसिद्धि पामेला लक्ष्मीपात्र व्यारावाळा शेठ चीमनाजी मेघाजी वगेरे व्याराना आगेवानोए जाते हाजर थइने आ चोमासुं व्यारामां करवानी आग्रहपूर्वक विनति करी, तेओनी भक्ति अने आग्रह जोइने तेओनी विनति स्वीकारीने नन्दरबारथी विहार करी पंन्यासजी महाराज श्रीऋद्धिमुनिजी व्यारे पधार्या त्यारे त्यांना संघे घणा ज उत्साह भक्ति अने ठाठमाठथी पंन्यासजीनो प्रवेश कराव्यो हतो, त्यांना प्राचीन जैन मन्दिरमां श्रीअजितनाथ प्रभुना दर्शन करी उपाश्रये पधारी मंगलिक संभळावीने सं. १९८२ नुं चोत्रीसमुं चोमासुं पंन्यासजी

महाराजे ब्यारामां कर्युं, त्यांना उपाश्रयमां केटलीक अगवडता हती ते पंन्यासजी महाराजना उपदेशथी त्यांना श्रावकोए उपाश्रय सुधरावीने दूर करी, ब्यारा जेवा कस्बामां साधुओनो योग जवल्ले ज मळतो होवाथी ब्याराना तथा पर्युषण करवा आवेला आसपासना गामोना श्रावकोनो धर्मकरणीमां घणोज उत्साह हतो, पर्युषणमां १८ तो अट्ठाइ थइ हती ते सिवायनी तपस्या पण घणी थइ हती ते तपस्याना निमित्ते तपस्वीयो तरफथी ३६ तो स्वामिवत्सल थयां हतां साथे आंगी पूजा भावना रोशनाई वगेरे पण थतां होवाथी ब्यारामां सवा महिना सुधी उत्सव चाली रह्यो हतो, त्यार पछी पंन्यासजी महाराजना उपदेशथी वालोडवाळा शेठ मोतीजी राजाजी तथा घुहारीवाळा शेठ उत्तमचन्द वीरचन्द तरफथी आसो सुदी १० थी उपधान शरु थयां हतां तेमां घणां गामनां श्रावक श्राविकाओए प्रवेश कर्यो हतो, उपधान समाप्त थयां त्यारे अनेक प्रकारना सावेलाओथी सुशोभित तथा विविध जातिना वाजिंत्रोथी जोवा अने सांभळवा लायक माळनो वरघोडो नीकळ्यो हतो ते दिवसे षट्द्रव्य अने पंचास्तिकाय तथा जीवाजीवादि तत्त्वना जाणकार, वर्तमानमां महाविदेहक्षेत्रमां केवळज्ञानिपणामां विचरी रहेला अध्यात्मयोगी श्रीमद्देवचन्द्रजी कृत स्तवनोने अर्थ सहित गुरुगमथी भणनार, जेना पेसाबथी सुवर्ण थइ गयुं हतुं एवा सुवर्णसिद्धिनी प्राप्तिवाळा परमयोगी श्रीआनन्दघनजी कृत स्तवन अने पदोना रसीया अने जेओ ब्राह्मणोना सर्वशिरोमणि तीर्थधाम काशीमां विद्याभ्यास करी न्यायविशारद

थया हता तथा जैन संघे जेमने उपाध्याय पदवीथी अलंकृत कर्या हता, वळी जेमणे संस्कृत तथा गुर्जरगिरामां अनेक ग्रन्थो रची जैनसिद्धान्तनुं रहस्य उतार्युं हतुं एवा श्रीयशोविजयजी महाराज कृत ग्रन्थोनुं निरन्तर अध्ययन करनार शेठ केसरीचन्द कल्याणचन्द झवेरी सुरतथी आव्या हता तेमणे शेहरना श्रावको जेवो त्याराना श्रावकोनो धर्मोत्साह जोइने त्याराना श्रावकोने कह्युं के तमे घणा भाग्यवंत छो केमके जगत्पूज्य श्रीमोहनलालजी महाराजनी घणी ज सेवाभक्ति करीने तेओना आशिर्वादथी तेओश्रीना अनेक गुणोने प्राप्त करनार तेओना प्रशिष्य पंन्यासजी श्रीऋद्धिमुनिजी महाराजनुं चोमासुं तमारे त्यां थयुं जेथी आजे तमारा गाममां धर्मनो आवो उद्योत थइ रह्यो छे एम कहीने तेमणे उपधानवाळाओने श्रीफळ सहित एक एक रुपीयानी लाणी करी हती अने त्याराना संघ तरफथी महोत्सव शान्तिस्नात्र तथा संघजमण थयुं हतुं, ते चोमासामां कूल ४०००० रुपीया आसरे त्याराना संघे धर्ममार्गे वापर्या हता, त्यारामां उपधान करवा आवेला गाम टांकेलना श्रीमती लाडुबेन तथा श्रीमती सूरजबेन तथा पोताना भाईनी धर्मपत्नीने माळ पहेरावता आवेला शेठ काना राजाजी वगेरेए पंन्यासजी महाराजश्रीना पुण्यमताथे त्यारामां थयेलो धर्मनो उद्योत जोइने महाराजश्रीने विनति करीने जणाव्युं के अमारा गाम टांकेलमां ३० थी ३५ घर श्रावकोनां होवा छतां आप जेवा कोई महात्माना उपदेश विना हजी सुधी जैन मन्दिर तथा उपाश्रयनो पण अभाव छे तेथी त्यांना वधा जैनो लगभग धर्मथी

वंचित थइ आ संसारमां मोक्षमार्गनी प्राप्ति माटेनो सर्वोत्तम मनुष्यभव हारी जवा जेवी स्थितिमां छे तेथी आप साहेब कृपा करीने त्यां पधारो अने उपदेश आपी अमने बधाने कंई रस्ते चढावो एवी अमारी अरज छे, तेओनी विनतिने लक्ष्यमां राखीने चोमासा बाद ब्यारेथी विहार करीने मांडवी कडोद कठोर सायण सुरत नवसारी अने सीसोदरे थइने पंन्यासजी महाराजे टांकेल पधारी धर्मोपदेश आपी त्यांना श्रावकोने धर्मने रस्ते चढाव्या, महाराज साहेबना उपदेशथी त्यांनी श्राविका श्रीमती लाडुबेने पोताना द्रव्यनी व्यवस्था करनार शेठ काना राजाजीने हस्ते पोताना द्रव्यथी जैन मन्दिर तथा जैन उपाश्रय नवां तैयार कराव्यां, त्यार बाद टांकेलथी विहार करी गणदेवी खापरीया बीलीमोरा अने वलसाड थइने पंन्यासजी महाराज पारडी पधार्या त्यारे गाम अंबाचना शा॰ ताराचन्द जेताजी शा॰ कस्तूरचन्द प्रेमचन्द तथा शा॰ नेमचन्द्भाई वगेरेए पारडी आवी महाराजश्रीने कह्युं के आज सुधी कोई पण सारा साधु अमारा वगवाडा प्रगणाना गामे गाम विचर्या नथी तेम स्थिरता करीने अमने धर्मोपदेश आप्यो नथी तेथी अमारा प्रगणाना जैनो मोटे भागे नामना ज जैनो छे, जैनधर्मनुं स्वरूप के क्रियाकांड कांइ जाणता नथी तेथी आप श्रीने अमे विनति करीये छीये के कृपा करीने अमारा गामडाओमां विहार करीने अमने बधाने उपदेश आपी कांइक रस्ते चढावो, तेओना आग्रहथी पंन्यासजी महाराजे पारडीथी विहार करी परीया अंबाच कोपरली देहगाम अने रांता वगेरे नाना नाना गामोमां

थोडा थोडा दिवसनी स्थिरता करीने धर्मोपदेश आपी लोकोने धर्मने रस्ते चढाव्या, तप जप व्रत नियम दर्शन पूजा सामायिक वगेरे धर्मकरणीनुं स्वरूप समजावीने दरेक क्रियामां आदरवाळा कर्या ते वखते दरेक गामे महाराजजीनो सत्कार आंगी पूजा अने जमणवार थवा लाग्या, ए प्रमाणे गामे गाम फरता फरता महाराजश्री वापी पधार्या, वापीमां श्रावकना घर तो लगभग एकसो छे परन्तु कोई सद्गुरुना जोईये तेवा उपदेशना अभावे त्यांना श्रावको सामायिक देवपूजा अने प्रतिक्रमण जेवी रोजनी धर्मकरणीथी दूर भागता हता ते जोइने पंन्यासजी महाराजे विचार कर्यो के आवा सो घरनी वस्तीवाळा कस्बामां जिन मन्दिरनी सगवड छतां तथा मुंबईना विहारमार्गमां आ गाम आवेलुं होवाथी अवार नवार साधुओनो परिचय पण थया करे छे छतां आ गामने घणुं सुधारवा जेवुं छे, अने " सर्वे पदं हस्तिपदे निमग्नं " ए न्याये आ एक गाम सारी रीते सुधरीने धर्मकरणीमां उद्यमवंत थशे एटले एनी असर आखा वगवाडा प्रगणामां दरेक गामे थया करशे तेथी अहीं वधारे रोकाइने आ गामने खरेखरुं धर्मी बनाववुं जोइये, एवो विचार करीने वगवाडा प्रगणाना आगेवान धर्मचुस्त देहगामवाळा शेठ मोती पदमाजीना मकानमां चार महिना सुधी स्थिरता करीने सचोट धर्मोपदेश आपी आखा गामने धर्ममां जोडीने समस्त वगवाडा प्रगणामां धर्मकार्यमां पोते अग्रेसर थइ दरेक गामने पोतानुं अनुकरण करावे एवुं धर्मी गाम बनाव्युं, ए रीते आखा वगवाडा प्रगणा

उपर उपकार करनार आपणा चरित्रनायक उपर ए प्रदेशना बधा श्रावको घणा भक्तिवंत थया, ते वखते व्यवहारदक्ष धर्मश्रद्धालु साधुसेवाभिलाषी अच्छारी गामना शेठ रायचन्द गुलाबचन्दे आवीने पंन्यासजी महाराजने विनति करी के अमारे त्यां अमारी बेनना लग्न प्रसंग छे ते निमित्ते सांसारिकोत्सवनी साथे साथे धार्मिकोत्सव करवानो पण अमारो इरादो छे माटे कृपा करीने आप साहेब अच्छारी पधारो तो अमारो इरादो पार पाडवामां अमने घणो ज उत्साह आवे, ए प्रमाणे तेओए विनति करवाथी पंन्यासजी महाराज वापीथी अच्छारी जवा माटेनी तैयारी करता हता ते ज वखते महाराजश्रीने वांदवा माटे वगवाडा प्रगणानुं २०० माणस आवी पहोंच्युं, ते बधां माणसो पण महाराजश्रीनी साथे विहार करीने वापीथी अच्छारी गयां त्यां शेठ रायचन्दभाईये तेओनी साधर्मिभक्ति घणा प्रेमथी करी हती, त्यार बाद तेओनी बेनना लग्नने टांकणे पांच दिवसनो महोत्सव ठाठमाठथी कर्यो हतो, त्यार पछी अच्छारीथी विहार करी बोरडी घोलवड दाहाणुं वगेरे गामोमां उपदेश करता करता पंन्यासजी महाराज सायदा बन्दर पधार्या त्यां श्रावकोना आसरे २५ घर छे छतां जैन मन्दिर हतुं नहि तेथी धर्मनी लागणीवाळा सामटाना आगेवान शेठ गुलाबचन्दजी साहेबचन्दजी तथा शेठ चुन्नीलालजी वगेरे भाईयोए देरासरनी सगवड करीने महाराजश्रीने जणाव्युंके आप खरे टांकणे अत्रे पधार्या छो तो अहींना जैन मन्दिरनी प्रतिष्ठा करावी आपो तेथी

महाराजश्री त्यां रोकाया अने प्रतिष्ठाना कार्य संबंधी त्यांना श्रावकोने उपदेश आपी बधी जातनी तैयारी करावीने सं. १९८३ ना वैशाख महिनामां शुभ मुहूर्ते पंन्यासजी महाराजे पोताना वरद् हस्ते प्रतिष्ठा करावी आपी, आ प्रतिष्ठाना प्रसंग उपर सामटाना शेठ केसरीमलजीनी धर्मपत्नी ढूंढकमतनी परम श्राविका हती, जैनमन्दिरे दर्शन करवा जवामां पाप मानती हती, तेने पंन्यासजी महाराजे शास्त्रना दाखला सहित धर्मोपदेश आपी खूब समजावीने परम श्राविका बनावी तेथी ते नूतन श्राविकाए प्रतिष्ठाना दिवसोमां प्रतिमाजीने पधराववामां शान्तिस्नात्रमां अने संघजमण वगेरे कार्योमां रु. २००० आसरे वापर्या हता, प्रतिष्ठानुं कार्य रंगे चंगे समाप्त थया बाद पंन्यासजी महाराज सामटेथी विहार करी पालगढ थइने अगासी पधार्या त्यांनी यात्रा करीने बोरीवली, मलाड, अंधेरी, सान्टाक्रूझ, दादर अने भायखलामां मुकाम करीने मुंबईमां लालबागना उपाश्रयमां पधार्या अने सं. १९८३ तथा सं० १९८४ नां पांत्रीसमुं तथा छत्रीसमुं ए बे चोमासां पंन्यासजी महाराज श्रीऋद्धिमुनिजीए मुंबईमां कर्या त्यार पछी मुंबईथी विहार करी दादर माहीम वीलापारला अंधेरी मलाड बोरीवली भाइंदर थइने अगासी पधार्या त्यांनी यात्रा करीने पालगढ दाहाणुं थैने पंन्यासजी महाराज घोलवड पधार्या ते वखते तबीयत जरा नरम थवाथी त्यां रोकावुं पड्युं ते वखते घोलवडमां जैनमन्दिर तथा उपाश्रयनी जोइये तेवी सगवड न हती ते बाबत त्यांना आगेवानोने असरकारक उपदेश आपीने

वन्ने धर्मस्थानो सगवडवाळां कराव्यां, पछी त्यांथी विहार करीने बोरडी श्रीगाम अच्छारी वापी वगवाडा अने पारडी थइने पंन्यासजी महाराज वलसाड पधार्या, त्यांना संघ उपर अगाउ चोमासा करीने महाराजजीए घणो उपकार करेलो होवाथी वलसाडना जैनोनो पंन्यासजी महाराज उपर घणो भक्तिभाव हतो, तेओना आग्रहथी महाराजश्री वलसाडमां रोकाया हता ते अरसामां सुरतथी विहार करीने मुंबई तरफ जता आचार्य श्रीविजयदानसूरिजी आदि वलसाड पधार्या अने जे उपाश्रयमां पंन्यासजी महाराज श्रीऋद्धिमुनिजी बिराजता हता ते ज उपाश्रयमां उतर्या, एक ज उपाश्रयमां उतर्या होवाथी आचार्यश्री अने पंन्यासजीनुं परस्पर संमिलन थतां आचार्यश्रीए पंन्यासजीने जणाव्युं जे तमे दरेक रीते समजु अने सरल छो छतां तमारे हाथे एक मोटी भूल थइ गयेली छे ते सुधारी ल्यो तो बहु सारी वात छे, त्यारे पंन्यासजीए जवाब आप्यो के एवी कइ भूल छे ते बतावो तो खबर पडे, त्यारे सूरिजीए कह्युं के तमे सुरतमां उपधान कराव्यां अने ते उपधान संबंधी माळनी बोलीनी उपज थइ ते बधी श्रीमोहनलालजी जैन ज्ञान भंडार खाते लेवडावी तेमां तमारी मोटी भूल थयेली छे, तेना जवाबमां पंन्यासजीए जणाव्युं के खरेखर मारी भूल ज थयेली छे एम आप मने समजावी शकशो तो मारी भूल सुधारी लेवामां मने कांइ पण अडचण नथी, परन्तु ए तो जणावो के आप गुरुपरम्परामां मानो छो के नहि, त्यारे सूरिजीए जणाव्युं के हा, सारी रीते मानीये छीये, त्यारे

पंन्यासजीए जणाव्युं के जो मानता हो तो आपना वडील श्रीमणिविजयजी दादा तो व्याख्यान वांचती वखते मुहपत्ती बांधता हता तो पछी आप केम बांधता नथी, त्यारे सूरिजीए जणाव्युंके श्रीबुद्धिविजयजी महाराज ढूंढक पंथमांथी तपागच्छमां आव्या तेमणे व्याख्यान पूरती पण जो ढूंढकोनी पेठे मुखे मुहपत्ती बांधवामां आवे तो ढूंढकोने टोणो मारवानो मोको मळे तेथी तेमणे व्याख्यान आपती वखते मुखे मुहपत्ती बांधवानी परम्पराने छोडी दीधी अने त्यार पछी तो श्रीमूलचन्दजी श्रीवृद्धिचन्दजी अने श्रीआत्मारामजी वगेरे घणा साधुओ ढूंढक पंथनो त्याग करी करीने तपागच्छमां आव्या तेमणे व्याख्यान वखते मुहपत्ती नहि बांधवानी प्रवृत्ति चालूज राखी तेथी हवे अमे पण बांधता नथी, त्यार पछी पंन्यासजीए कह्युं के आप तो एकली परम्पराने ज मानीने व्याख्यान वखते मुखे मुहपत्ती बांधता नथी पण अमे तो परम्पराने तथा शास्त्रने मानीने उपधाननी माळानी उपज श्रीमोहनलालजी जैन ज्ञान भंडार खाते लइ जवानो ठराव करावेलो छे, त्यारे सूरिजीए कह्युं के शास्त्रनो दाखलो नूतन होय ते नहि चाले २०० वर्ष पहेलांनो होय तो बतावो, त्यारे पंन्यासजीए ३२५ वर्षनी जूनी प्रत बतावी त्यारे ते हस्त लिखित प्रतनो दाखलो जोइने सूरिजी बोल्या के में घणां शास्त्रो जोयां छे पण आ पाठ मारा जोवामां आव्यो न हतो। पछी पंन्यासजीए कह्युं के बोलो हवे आपनो शुं बचाव छे त्यारे सूरिजीए कह्युं के मुंबई गया पछी तमने जवाब आपीश एम

कहीने मुंबई गया परन्तु जे जवाब आपवानुं तेमणे कहेलुं ते जवाब तो तेओए आप्यो ज नहि । वळी कपडवंजनी पारी मीठाभाई कल्याणचन्दनी पेढी द्वारा स्वमानी उपजमांथी रु. ११७० नी मदद श्रीआनन्दसागरसूरिजीए आगमोदय समितिने अपावीने प्रज्ञापना सूत्र प्रगट कराव्युं छे ते दाखलो पण अमारा करावेला ठरावने पुष्टि करनारो छे । त्यार बाद नवसारी थइने सुरत पधारी सं. १९८५ नुं साडत्रीसमुं चोमासुं पंन्यासजी महाराजे सुरतमां गोपीपुरामां कर्युं । चोमासा पछी सुरत जिल्लाना गामडाओमां फरता फरता अनुक्रमे कठोर पधार्या, कठोरना श्रीसंघना अत्याग्रहथी पंन्यासजी महाराजे सं. १९८६ नुं आडत्रीसमुं चोमासुं कठोरमां कर्युं, कठोरमां पर्युषण करवा दरवर्षे आसपासना घणां माणसो आवे छे परन्तु आ साल पंन्यासजी महाराज विराजता होवाथी ठेठ दाहाणुं सुधीना लोको खास पर्युषण करवा आवेला हता कठोरना संघे तेओनी सुन्दर भक्ति करी हती, बहारगामथी पर्युषण प्रसंगे घणुं माणस आवेलुं होवाथी दरवर्षे करतां आ सालनां पर्युषण बहु सारां थयां हतां अने उपज पण घणी सारी थइ हती, पंन्यासजी महाराजे आ चोमासामां एक एक पारणाने आंतरे अनुक्रमे चार अने पांच उपवासनी कठिन तपस्या लगातार त्रण महिना सुधी करी हती । चोमासा बाद महाराजश्री कठोरथी विहार करी सायण पधार्या ते वखते सुरतमां नवेपुरे चोमासुं करीने शास्त्र विशारद जैनाचार्य श्रीविजयधर्मसूरिजीना शिष्य संस्कृत भाषानुं सुन्दर-

कवित्व धरावनार अनेक प्रकारना पुस्तकोना लेखक न्याय विशारद न्यायतीर्थ मुनि श्रीन्यायविजयजी पण सायण पधार्या हता, वधा मुनिओनुं सायणमां साथे ज रहेवानुं थयुं हतुं, हमेशां अनेक प्रकारनी धर्मचर्चा थती हती तेमां स्वामिवत्सल सुपात्र कुपात्र उपधानप्रवृत्ति पुनर्लग्न आस्तिक अने नास्तिक संबंधी अनेक दृष्टिए चर्चा थती होवाथी १० दिवस घणो ज आनन्द रह्यो हतो, एवी ज रीते जैन समाजमां जेओने परस्पर कोई बाबतमां मतभेद उभो थाय तेओ परस्पर मळीने ते ते बाबतमां एक बीजानी दृष्टिए समजवानो उद्यम करे तो प्रायः दरेक बाबतनी पीखापीखी थती अटकी जाय अने संतोष कारक निवेडो आवी जाय तेने बदले जैन समाजना कम भाग्ये हमणा हमणा मतभेदो वधता ज जाय छे अने बन्ने पक्षो भेगा थवाने बदले दूर रहीने ज पोतपोताना मन्तव्योने पुष्टि कारक दृष्टान्तो सुणे त्यांथेरथी शोधी शोधीने सामा पक्षवाळा उपर आक्षेपपूर्वक जनतामां प्रसिद्ध करी एक बीजाने उतारी पाडवानी प्रवृत्ति करता होवाथी सरवाळे जैन शासननी अव-हेलना तो थाय ज छे तदुपरांत ते बन्ने पक्षना अग्रेसरोनी स्थिति पण गामनी साम सामी दिशामां आवी उतरेला अने परस्पर एक बीजानी निन्दा करनारा पेला बावाओ जेवी थाय छे।

त्यार पछी महाराजश्री सायणथी सुरत पधार्या, ते वखते जैन साधुओ उपर अत्यन्त भक्ति राखनार धर्मचुस्त शेठ गुलाबचन्द लल्लुभाई भेस्तानवाळाए, महाराजश्री पासे

आवीने जणाव्युं जे अमारा गाममां सुरतना शेठियाओए उपाश्रय बंधाव्यो तो खरो परन्तु बांधकाम उपर देखरेखनी खामीने लीधे कारीगरोए काम काचुं करेलुं होवाथी दीवालोमां फाट पडी गइ छे अने दीवालो पडुं पडुं थइ रही छे माटे जो तेने तात्कालिक सुधारवामां नहि आवशे तो आ चोमासामां ज उपाश्रय बेसी जशे अने खरच करेलो बधो पैसो पाणीमां जशे तेथी हमणां जो रु० १००० खर्च करीने सुधारी लेवाय तो घणुं सारुं नहि तो चोमासा पछी रु० ५००० नुं काम उभुं थशे, ए प्रमाणे वात चालती हती ते वखते तप जप अने धर्मक्रियामां हमेशां तत्पर रहेनार पोतानी कमाइने सन्मार्गे वापरनार धर्मनिष्ठ कठोरना श्रावक झवेरभाई नगीनदास आवी पहोंच्या, तेमणे पंन्यासजी महाराजने जणाव्युं जे मारा जेवुं कांइ काम काज होय तो फरमावो, खरे टांकणे तेओनुं एवा प्रकारनुं वचन सांभळीने महाराजश्रीए भेस्ताननां उपाश्रयनी हकीकत जणावी ते सांभळीने तरत शेठ झवेरभाईये रु० १००० छोटुभाई वकीलने त्यां आप्या अने ते रुपीयाथी थोडा वखतमां भेस्ताननो उपाश्रय सुधारीने मजबूत करवामां आव्यो, त्यार पछी दाहाणुं बन्दरना आगेवान श्रावको पंन्यासजी महाराजने पोताने त्यां चातुर्मास करवानी विनति करवा आव्या तेओना आग्रहथी विनति स्वीकारीने सुरतथी विहार करी मरोली नवसारी अमलसाड बीलीमोरा गणदेवी वलसाड पारडी बगवाडा वापी श्रीगाम उम्बरगाम अने घोलवड थइने दाहाणुं पधारतां त्यांना संघे घणा उत्साह अने ठाठमाठथी

पंन्यासजीनो प्रवेश कराव्यो, ते सालनुं सं० १९८७ नुं ओगणचालीसमुं चोमासुं पंन्यासजीए दाहाणुंमां कर्युं, दाहाणुंना संघे पर्युषण करवा पधारवानी कुंकुमपत्रिका काढी आसपासना जैन भाईयोने निमंत्रण करवाथी बहारगामनुं घणुं माणस आव्युं हतुं तेओनी सेवाभक्ति करवा माटे दाहाणुंना संघे तरफथी रसोडुं खोलवामां आव्युं हतुं ते रसोडे १५ दिवस सुधी तो हमेशा १००० माणस जमतुं हतुं, पोताने आंगणे आवेला साधर्मि भाईबेनोनी भक्ति करवामां दाहाणुंना शेठ धनराजजी येवरचन्दजी वाफणा पूनमचन्दजी चुन्नीलालजी कर्णावट छगनमलजी मिश्रीमलजी चोरडीया नगरशेठ मिश्रीमलजी बोथरा फौजमलजी मोटाजी गुलाबचन्दजी बोथरा अने शेठ ताराचन्दजी वगेरेए आगेवानी भर्यो भाग लीधो हतो, पर्युषण बाद भाद्रवा सुदी ५ ना दिवसे सुन्दर सजावटवाळो वरघोडो ठाठमाठथी काढवामां आव्यो हतो तेथी जैनेतरोमां जैनधर्मनी घणी प्रशंसा थइ हती, कार्तिकी पूनमे दाहाणुं शहेरथी विहार करी पंन्यासजी महाराज दाहाणुं स्टेशने पधार्या त्यां सामटा वन्दरवाळा धर्मनिष्ठ शेठ हरखचन्दजी लक्ष्मीचन्दजी तरफथी मोटो मंडप तैयार करावी तेमां शत्रुंजय तीर्थनो नवीन सुन्दर पट बांधवामां आव्यो हतो, दाहाणुं प्रगणामां कार्तिकी पूर्णिमाए शत्रुंजयनो पट बांधवानी प्रवृत्ति हती नहि परन्तु पंन्यासजी महाराजे उपदेश आपीने ए प्रवृत्ति शरू करावी अने ए खबर आसपासना गामोमां अगाउथी आपवामां आवेली होवाथी तथा ए प्रसंगे पूज्य पंन्यासजी महारा-

जनी पधरामणी पण थवानी होवाथी पटना दर्शन करवा घणां माणसो आव्यां हतां, बपोरे ठाठमाठथी नवाणुं प्रकारी पूजा भणाववामां आवी हती अने सांजना शेठ हरखचन्दजी तरफथी स्वामिवत्सलना जमणथी पधारेला म्हेमानोनी सुन्दर भक्ति करवामां आवी हती, त्यार बाद त्यांथी विहार करी महाराजजी घोलवड पधार्या त्यांना शेठ पृथ्वीराजजी कस्तूरचन्दजी तरफथी पूजा भणावी स्वामिवत्सल करवामां आव्युं हतुं, पछी महाराजजी बोरडी पधार्या, त्यांना उपाश्रयनुं काम अटकी पडेलुं जोइने त्यांना आगेवानोने उपदेश करी पंन्यासजीए रु० २००० भेगा कराव्या तेथी ते उपाश्रयनुं काम पुरुं थयुं, पछी त्यांथी दवीयर सोलसंबा अने संजाण थइने महाराजश्री फणसा जता हता त्यां रस्तामां ज फणसावाळा धर्मनिष्ठ शेठ अमरचन्दजी खुबचन्दजी छाजेडनी वाडी आवी ते वाडीमां शेठे बंगलो बंधाववा मांडेलो ते तैयार थइ गयो होवाथी शेठे आग्रह करीने पंन्यासजी महाराजने त्यां रोकी लीधा अने गाममां खबर आपी बधा जैन भाईयोने निमंत्रण करी शेठ तरफथी बंगलामां बपोरे बार व्रतनी पूजा भणावी सांजना स्वामिवत्सल करवामां आव्युं हतुं, बीजे दिवसे सवारे फणसाना संघ तरफथी सामैयुं करी शेठ गंगारामजी चोपडाना मकानमां पंन्यासजीने उतार्या, हमेशां बे टाइम महाराजजीए व्याख्यान वांचवा मांड्युं तेनो लाभ त्यांना लोको घणा उत्साहथी लेवा लाग्या, फणसामां शेठ गंभीरमलजी छाजेडे पोताना मकानमां घरदेरासरनी जोगवाइ तो केटलाक वर्षथी

करी हती परन्तु उपाश्रयनी सगवड हती नहि तेथी महाराज साहेबे उपदेश आपीने उपाश्रयनी टीप शरु करावी ते वखते शेठ अमरचन्द्जी छाजेडने महाराजश्रीना उपदेशनी घणी सारी असर थवाथी तेमणे श्रीसंघने अरज करी के श्रीसंघ मने रजा आपे तो मारा तरफथी उपाश्रय बंधावीने श्रीसंघने अर्पण करवानी मारी इच्छा छे, श्रीसंघे तेमनी अरज स्वीकारी तेथी ते शेठे वे माळनुं सुन्दर मकान तैयार करावी श्रीसंघने अर्पण कर्यु, ते मकाननो भोंयतळीयानो भाग उपाश्रय तरीके राखी माळ-पर जैनमन्दिर करवामां आव्युं छे तेमां शेठ गंभीरमलजीना घरमन्दिरमां रहेली प्रतिमा लावीने पधराववामां आवी छे, ए प्रमाणे पूज्य पंन्यासजी महाराजना दाहाणुं तथा वगवाडा प्रगणाना गामोमा विहार अने उपदेशथी घणा गामोमां धर्म-स्थानोनां मंडाण तथा धर्मक्रियानी प्रवृत्तिमां वधारो थयो छे, त्यार पछी महाराजजीए वापी तरफ विहार कर्यो त्यारे फणसाना आगेवान श्रावको वापी सुधी पहोंचाडवा गया हता तेमज वापीना श्रावको सामे लेवा आव्या हता, वापीना शेठ मगनीरामजी रामसुखजीनी तबीयत नरम रह्या करती हती, गया चोमासामां पंन्यासजी महाराज पासे दाहाणुंमां पर्युषण करवा तेओ गयेला त्यारे तेमणे महाराजश्रीने कहेलुं के मने कोई एवी तपस्या बतावो के जेथी मारा तन अने मननी आधि अने व्याधि टळी जाय अने मने शान्तिनो अनुभव थाय, जवाबमां महाराजश्रीए जणावेलुं के मारा वचन उपर तमने श्रद्धा होय तो तमे जो लगातार ८१ आयंबीलनी तपस्या

करो तो तमारी धारणा सफळ थशे "पुरुषविश्वासे वचन-विश्वासः" ए उक्ति अनुसार पंन्यासजी महाराज उपर तेओनी पूर्ण श्रद्धा होवाथी तेमनुं वचन तेमने अत्यन्त रुचिकर थइ पड्युं तेथी पोताने घेर जइने तुरत उपर कहेली उग्र तपस्या शरु करी दीधी हती अने हमणा ज्यारे पंन्यासजी महाराज वापीमां पधार्या त्यारे ते तपस्या पुरी थवा आवी हती तेथी पोतानी तपस्यानुं पारणुं थाय त्यां सुधी वापीमां स्थिरता करवानी पंन्यासजी महाराजने तेमणे भावपूर्वक विनति करवाथी महाराजश्री वापीमां रोकाया हता, ते प्रसंगे वापीमां मने थयेलो अनुभव जाणवा योग्य होवाथी अत्रे जणाववामां आवे छे।

मूळ अमदावादनो पण धंधार्थे वापीमां आवी रहेला मास्तर हीरालाल वापीनी जैन पाठशाळामां भणावता हता तेओ पोते सोसायटीपक्षमां भळेला होवाथी सोसायटीपक्षमां भळेला साधु सिवाय बीजा कोई पण साधुने साधु तरीके मानवाथी के आदर सत्कार करवाथी श्रावकत्व टकी शकतुं नथी एवी तेमनी मान्यता होय तेम तेमना आचरण उपरथी समजातुं हतुं।

तेरापंथमां भळेला श्रावको तेओना पूज्यना उपदेशानुसार ते पूज्यनी आज्ञामां विचरनार साधु सिवाय कोई पण जैन साधुने आहारादि आपवाथी तथा आदर सत्कार करवाथी जेम समकितथी भ्रष्ट थवानुं माने छे तेम आ सोसायटीपक्षने दोरनार साधुओना उपदेशथी सोसायटीमां भळेला श्रावको पण मानता होय एवुं तेमना वर्तन उपरथी जणाय छे।

विचक्षण पुरुषो तो सोसायटीनी स्थापना थइ त्यारथी ज

भविष्यमां ते केवुं स्वरूप लेशे ते समजीने सोसायटीने नव गज दूरथी ज नमस्कार ! करता हता, त्यार बाद सुरतमां पूज्य श्रीविजयवल्लभसूरिजीनो अपूर्व आडम्बरथी थयेलो प्रवेश महोत्सव जोइने श्रीरामविजयजीनो सन्देशो पहोंचाडवा गयेला श्रावकोना श्रीविजयवल्लभसूरिजी प्रतिना वर्तनथी, श्रीविजयनेमिसूरिजीना खंभातना छेल्ला प्रवेश वखते त्यांनी जैनशाळाना कार्यवाहको शेठ कस्तूरभाई वगेरेना श्रीनेमिसूरिजी प्रतिना आगळा अने ते वखतना वर्तनथी, श्रीविजयलावण्यसूरिजिनी खंभातनी हाजरी दर्म्यान उपस्थित थयेला साध्वीप्रकरणथी अने छेल्ले छेल्ले तिथिचर्चाने अंगे पूनेथी जामनगर करायला तारोमां श्रीसागरानन्दसूरिजी प्रतिनी श्रावक केशवलालनी शब्दरचना जोवाथी सोसायटीपक्षना दृष्टिरागी सिवायना आखा जैनसमाजने आ सोसायटीपक्ष ते एक प्रकारे तेरापंथनो सगो भाई तो नहि परन्तु सावको भाई जणावा लाग्यो होय एम मारा परिचयमां आवनारा श्रावकोना कथनथी तथा सं. १९९२ ना चोमासामां मुंबईना लालबाग सिवायना जे जे उपाश्रयमां सोसायटीपक्षना साधुओ हता तेओना थयेला हालहवालथी चोक्खुं जणाइ आवे छे । सोसायटीपक्षना घणाखरा श्रावको तो हवे प्रतिक्रमणादिकमां जैनतत्त्वथी भरेलां तथा जैनधर्मना अभ्यासको माटे परीक्षामां रखायेलां परमयोगी श्रीआनन्दघनजी तथा-द्रव्यानुयोगनिष्णात श्रीमद्देवचन्द्रजीना स्तवनोनो अनादर करी आधुनिक नाटकीया स्तवनोनो आदर करवा लाग्या छे, पोताने

घेर सोसायटीपक्ष सिपायना कोई मूर्तिपूजक संप्रदायना जैन साधु गोचरी आदि निमित्ते आवी चढे तो ते साधु प्रति अन्य-दर्शनी जेवुं आचरण करे छे, तदुपरांत सोसायटीपक्षमां केटलाक एवा नररत्नो पण जोवामां आवे छे के जेओ पोताना पक्षना साधु सिवाय कोई पण मूर्तिपूजक जैन संप्रदायना साधु पासे कोई भावुक दीक्षा लेवा तैयार थयो होय तो ते दीक्षाना कार्यमां पण विघ्न उभुं करवामां धर्म समझे छे । एवा सोसायटी-पक्षना उपरोक्त मास्तर हीरालाले वापीना संघमां पोतानी मान्यतानो प्रचार करेलो हतो तेमां पंन्यासजी महाराजनी स्थिरताथी विघ्न आवेलुं जाणीने ते मास्तर पंन्यासजी महाराजनी बाबतमां मनफावती वात पण फेलाव्या करता हता ।

गया चोमासामां वापीना श्रीजैन युवक मंडले प्रगट करेली पर्युषणा साहित्य संग्रह नामनी एक चोपडी दाहाणुंमां पंन्यासजी महाराज उपर आवेली हती, ते चोपडीमां छपावेली केटलीक शास्त्रविरुद्ध बाबतोना खुलासा माटे वापीना श्रीजैन युवक मंडलने पत्र लखमां आवेलो परन्तु ते मंडले अमारा पत्रनो खुलासो करवानी अशक्तिने लीधे कंइ पण जवाब आप्यो नहि ।

त्यार बाद श्रीविजयदानसूरिजी मुंबईना लालबागमां चोमासुं रहेला हता तेओने नीचे मुजबनो रजीष्टर कवरमां पत्र लखी पंन्यासजी महाराजे केटलाक प्रश्नो पुछ्या हता ।

दाहाणुं ता. २-८-३१

दाहाणुं बन्दरथी ली. पंन्यासजी श्रीऋद्धिमुनिजी आदि

ठाणा—मुंबई बन्दरमध्ये आचार्य श्रीदानविजयसूरिजी सुख-साता वांचसो । जत लखवानुं के नीचे लखेला प्रश्नोना उत्तरो आपशो ।

प्रश्न १—आप कया कया शास्त्रोना प्रमाण मानो छो अने कया कया शास्त्रो नथी मानता तेना नामो जणावशो । शास्त्रने अनुसारे जे माणस वर्तन करे ते भगवाननी आज्ञामां गणाय परन्तु शास्त्रमां चोक्खो पाठ जोया छतां शुद्ध मरूपणा नहि करे तो तेने भगवाननी आज्ञामां कहेवुं के आज्ञा बाहेर तेनो उधर आपसो ।

प्रश्न २—स्वधर्ममांथी (एटले जतीपणामांथी) नीकळे ते पुरुषे अवश्य गुरु धारण करवा जोइये के केम तेनो उत्तर आपशो जो कदाच गुरु नहिं करे तो तेनो परिवार आज्ञामां कहेवाय के आज्ञा बाहेर कहेवाय ।

प्रश्न ३—पूर्वना परंपराना आचार्योनी आज्ञा नहि माने तो तेने समकीती कहेवो के मिथ्यात्वी कहेवो ।

प्रश्न ४—तमे वलसाडमां सवा त्रणसो वर्षनी लखेली जूनी प्रतनी अन्दर छती वस्तु जोइने कबूलात करी हती के हजु सुधी आ मत मारा जोवामां आवी नथी तो तमो जाणी बुझीने तमारी करेली खोटी मरूपणा हजु तमोए जनताने केम जणावी नथी तेमज लोकोने समजाव्या नथी, तमारा

भक्तो देवद्रव्य देवद्रव्य एम पोकारो करे छे अने लोकोने खोटा भ्रममां नांखे छे, जो तमारी शुद्ध प्ररूपणा शास्त्र अनुसार होय तो तमे शुद्ध प्ररूपणा शाने माटे प्रगट करता नथी अने तमारी भूल हजु सुधी छापामां केम वहार पाडी नथी, हजु पण तमारी शुद्ध प्ररूपणा होय तो तमे जल्दी छापा द्वारा वहार पाडशो, गौतमस्वामीजी महाराज जेवाए पण आनन्द श्रावकनी साथे अवधिज्ञान संबंधी पोतानी भूल मालूम पडवाथी आनन्द श्रावक पासे मिच्छामि दुक्कडं करेल छे तेम तमे पण तमारी भूल कबूल करी जनतानो भ्रम दूर थाय तेम करशो अने प्रश्नोनो जवाब शास्त्रने आधारे आपशो अमारो हेतु द्वेष भावथी पुछवानो नथी, अमारा तरफथी तो अमे शास्त्रनो चोक्खो पाठ जैन पत्रद्वारा जनतानी जाण माटे वाहेर पाडी दीधो छे छतां तमारा अन्धभक्तो हजु सुधी खोटी वात पकडी बेठा छे अने लोकोमां खोटो भ्रम पेदा करे छे तेने लीधे आ वात तमने लखी छे माटे आ वातनी चोखवट तमारा तरफथी थाय ए माटे आ पत्र लखाणो छे एज । पंन्यासजी महाराज तर्फथी कवर आवेलुं जाणीने वलसाडनो अनुभव याद करी जवाब आपवामांथी पर्ची

जवा माटे आ रजीष्टर कवर तेओए लीधुं ज नहि तेथी ते कवर पंन्यासजी महाराज पासे पाछुं आव्युं हतुं।

त्यार पछी एक्याशी आयंबीलनी तपस्या करनार शेठ मगनीरामजीए पोताना पारणाने दिवसे पंन्यासजी महाराजने निमंत्रण करी पोताने घेर वहोरवा लइ जइने साधुने कल्पती चीजो आहार पाणी कपडां कांबली वगेरे उत्कृष्ट भावथी पोताने हाथे वहोरावीने पोते पारणुं कर्युं तथा जैनमन्दिरमां वगेरे तेओना तरफथी बारव्रतनी पूजा ठाठमाठथी भणाववामां आवी तथा आंगी रचाववामां आवी हती। त्यार पछी देहेगामवाळा शेठ गुलाबचन्दजी मकनजी तथा कस्तूरचन्द-भाई वगेरेनी विनतिथी महाराजजी देहेगाम पधार्या, त्यां शेठ गुलाबचन्दजी तथा शेठ कस्तूरचन्दभाई तरफथी पूजाओ भणाववामां आवी हती अने बहारगामथी आवेला भाईयोनी भक्ति करवामां आवी हती, त्यांथी गाम दादरावाळाओनी विनतिथी महाराजजीनुं दादरे पधारवुं थयुं त्यांना शेठ नेमिचन्दजी तथा फूलचन्दजी वगेरे तरफथी पूजाओ भणाववामां आवी हती अने स्वामिवत्सलो पण करवामां आव्यां हतां।

महाराजजीना व्याख्यानमां जैनो तथा जैनेतरो पण आवता हता, एक दिवसे फीरंगी लोकोना धर्मगुरु पोताना समुदाय साथे पंन्यासजी महाराज पासे धर्मचर्चा करवा आव्या हता एक कलाक सुधी जैन धर्म संबंधी अनेक तरेहना प्रश्नो पुछी जैनधर्मनी माहिती मेळवी खुश थइने गया हता, त्यार पछी

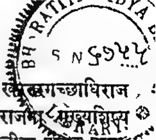
सुरत जील्लाना गाम अंभेटीना शेठ चीमनलाल नानचन्द तथा शेठ केशवलाल अने मरोलीवाळा शेठ चीमनाजी वगेरेए दादरे आवी पंन्यासजीने जणाव्युं के मरोली स्टेशन उपर जैनमन्दिर तथा उपाश्रय कराववानो अमारा वधानो विचार छे माटे आपसाहेब कृपा करीने त्यां पधारो तो आपनो उपदेश मळवाथी अमारुं कार्य सराणे चढे, लाभनुं कारण जाणीने दादरेथी विहार करीने वापी वगवाडा पारडी वलसाड डूंगरी बीलीमोरा गणदेवी अने नवसारी थइने पंन्यासजी महाराजश्री जल्दी मरोली पधार्या अने असर कारक धर्मोपदेश आपीने एक टीप शरु करावी दरेकनी स्थिति अनुसार सारी रकम भरावी, उपाश्रयमाटे अगाउ जमीन खरीदेली ते नानी पडे एम होवाथी महाराजजीना उपदेशथी अंभेटीवाळा शेठ चीमनलाले पोताना जीननी जग्यामांथी थोडी जग्या मफत आपी, पछी ते जग्या उपर बे माळनुं सुन्दर मकान तैयार कराववामां आव्युं तेनो भोंयतळीयानो भाग उपाश्रय तरीके राखवामां आव्यो छे तेनो खर्च आसरे रु. ६००० थयो हतो ते नडोदवाळा शेठ पानाचन्द खेताजीए एकलाए ज पोतानी उदारताथी आप्यो छे बाकीनो वधो खर्च टीपमांथी करवामां आव्यो छे, माळपर हालमां जिनप्रतिमाने परोणा तरीके पधराव्या छे, पंन्यासजी महाराजना उपदेशथी मरोलीना श्रावकोने धर्मस्थानोनी अवगडता हती तेमज सुरतथी मुंबईना रस्तामां मरोली आवतुं होवा थी साधु साध्वीओनुं आवागमन विशेष थतुं होइने उपाश्रय विना घणी अडचण आव्या करती हती ते हवे दूर

थइ गइ छे, जैनमन्दिर अने उपाश्रय थया पछी वस्तीमां वधारो थतां थतां हालमां मरोलीमां ६०–६५ दुकानो श्रावकोनी छे अने ते बधा भाईयो धर्मना प्रतापे सुखी छे । त्यार बाद पंन्यासजी महाराज मरोलीथी सुरत पधार्या ते वखते खंभातथी शेठ भोगीलाल मगनलाल नाणावटी वगेरे ओसवाल समुदायना आगेवानोए सुरत आवीने जणाव्युं जे आप साहेबना सदुपदेशथी जूदा जूदा श्रावकोनी तरफथी रु० ३०००० नी मदद मळवाथी खंभातनी जीर्ण शीर्ण थइ गयेली दादावाडीनो तथा वडा दादा श्रीजिनकुशलसूरिजी मणिधारी श्रीजिनचन्द्रसूरिजी श्रीजिनकुशलसूरिजी तथा श्रीजिनचन्द्रसूरिजी ए चारे दादा साहेबोनी देरीयोनो जीर्णोद्धार थइ गयो छे, हवे आप साहेब पधारो तो प्रतिष्ठानुं काम बाकी छे ते आपना उपदेशथी थइ जाय । तेओनी विनति स्वीकारीने सुरतथी विहार करी भरुच समनी जम्बूसर अने कावी तीर्थनी यात्रा करी सारोदने आरे थइ पंन्यासजी महाराज राळज पधार्या, खंभातनी पांचे ज्ञातिनो समुदाय त्यां हाजर थयो हतो तेओमांथी शेठ भोगीलाल नाणावटी तरफथी त्यां पूजा भणावी स्वामिवत्सल करवामां आव्युं हतुं, बीजे दिवसे शक्करपुरामां दर्शन करीने शेठ भोगीलाल नाणावटी तरफथी आडम्बर पूर्वक पंन्यासजी महाराजनो नगर प्रवेश थयो हतो, सामैयामां खंभातनी पांचे ज्ञातिना आगेवानोनी हाजरीथी सामैयुं घणुं ज दीपी रह्युं हतुं, बजारमां सामैयुं पहोंचतां श्रीचिन्तामणि पार्श्वनाथना दर्शन करी माणेकचोकना उपाश्रये पंन्यासजी महा-

राजनी पधरामणी थइ त्यां मांगलिक संभळाव्या वाद शेठ भोगीलाल नाणावटी तरफथी प्रभावना करवामां आवी हती, पछी दररोज पंन्यासजी महाराजनुं व्याख्यान चालतुं हतुं। महाराजश्रीना उपदेशथी शेठ छोटालाल मगनलाल नाणावटी तरफथी सं० १९८८ ना जेठ सुदी १ थी अठ्ठाइ महोत्सव शरू करवामां आव्यो जळयात्रा वगेरेना वरघोडा घणा ठाठमाठथी सुन्दर काढवामां आव्या हता, दररोज विविध प्रकारनी भणाती पूजाओमां तथा रात्रे फूललाइट साथे थती भावनाओमां गुरुगमथी संगीत शिखेला उस्ताद गवैयाओनी हाजरीथी महोत्सवनी शोभा तथा उपज घणी ज सारी थइ हती, महोत्सवने छेल्ले दिवसे दादावाडीमां जगद्विख्यात कलिकाल कल्पतरु जगतमां जागती ज्योतसमा भक्तजनोने हाजराहजूर चारे दादा साहेबोनी चरणपादुकानी प्रतिष्ठा करी नीचे मुजबनो शिलालेख चोढवामां आव्यो छे।

श्रीस्तम्भनतीर्थे वन्दे वीरकुशलम्।

वि० सं० १९८८ ना ज्येष्ठ शुक्लाष्टमीदिने वडा दादाना नामथी प्रसिद्ध चोरासीगच्छ शृंगारहार जंगम युगप्रधान भट्टारक श्रीजिनदत्तसूरीश्वरजी, मणिमंडितभाल क्षेत्रपालसंसेवित श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वरजी तथा कलिकालसातिशय श्रीजिनकुशलसूरीश्वरजी वगेरे पूर्वाचार्योनी चरणपादुकाओ कटारीयागोत्रीय गुरुभक्त पारेख शेठ छोटालाल मगनलाल नाणावटीए उदारदिलथी पोतानी लक्ष्मीनो सदुपयोग करी नवीन सुन्दर देरी बंधावीने खंभातनी पांचे ज्ञातिना संघ



समक्ष घणा आडम्बर अने उत्साहथी खरतरगच्छाधिराज, जगत्पूज्य महात्मा श्रीमोहनलालजी महाराजना मुख्यशिष्य बालब्रह्मचारी उग्रतपस्वी श्रीजिनयशः सूरिजीना पट्टधर पंन्यासजी श्रीऋद्धिमुनिजी महाराजना उपदेशथी विधिपूर्वक प्रतिष्ठा करावी पोतानो जन्म सफल कर्यो छे।

महोत्सवने छेल्ले दिवसे शेठ छोटालाल तथा भोगीलाल ए बन्ने नाणावटी भाईयो तरफथी संघजमण करवामां आव्युं हतुं, त्यार बाद श्रीसंघना घणा आग्रहथी पंन्यासजी महाराजनुं सं. १९८८ नी सालनुं चालीशमुं चोमासुं खंभातमां ज माणेकचोकना उपाश्रयमां थयुं।

चोमासा बाद खेडा जिल्लाना मातर गाममां साचा देव तरीकेनी ख्याति पामेला श्रीसुमतिनाथ भगवानना बावन जिनालयनी यात्राए जवानो पंन्यासजी महाराजनो विचार थयो तेथी खंभातथी विहार करी खंभातना श्रावक श्राविकाना वहोळा समुदाय सहित मातरनी यात्रा करी त्यांथी पाछा वळतां महाराज साहेब सोजित्रे पधार्या अने जे उपाश्रयमां पोते उतर्या ते उपाश्रयमां पूर्वाचार्यना हस्ते बावन वीरमां मुख्य गणाता शासनरक्षक श्रीमाणिभद्र वीरनी स्थापना थयेली हती, त्यां एक दिवसे पंन्यासजी महाराज काउस्सगध्यानमां हता त्यारे तेओए गेबी अवाज सांभळ्यो के "तमे विहार करीने खंभात पधारो अने त्यां माणेकचोकना उपाश्रयमां उतरजो ते उपाश्रयमां चमत्कारि श्रीमाणिभद्रवीरनी देरी छे ते जीर्ण थइ गयेली छे तेनो जीर्णोद्धार तमारा उपदेशथी थशे " एवो

दैवी अवाज संभळावाथी पंन्यासजी महाराज सोजित्रेथी विहार करीने पाछा खंभात पधार्या अने माणेकचोकना उपाश्रयमां उतर्या ।

खंभातना माणेकचोकनो उपाश्रय कलिकालसर्वज्ञ श्रीहेमचन्द्राचार्य महाराजना वखतमां बनेलो घणो जूनो कहेवाय छे, वृद्धपुरुषो कहे छे के ए उपाश्रयना एक ओरडामां भोंयरुं छे तेनुं बीजुं द्वार ठेठ कावीगामनी बजारमां पडे छे, ए उपाश्रयमां पार्श्वचन्द्रगच्छीय श्रीभ्रातृचन्द्रसूरिजीनां त्रण चार चोमासां थयां छे, घणी मजबूत बांधणी होवा छतां पण घणो जूनो थवाथी ए उपाश्रयनी हालत जीर्ण शीर्ण थइ गयेली हती। श्रीजैन श्वेताम्बर संघना रक्षक, धर्मनिष्ठ श्रद्धालु पुरुषोनां संकट हरनार, शासनोन्नतिना दरेक कार्योमां सहायक थनार अने बावनवीरमां शिरोमणि वडवीरनुं बिरुदधारक श्रीमाणिभद्रवीरनी आल्हादकारक सुन्दर दर्शनीय मूर्तिनी स्थापना ए उपाश्रयनी मध्यमां पूर्वाचार्यना हाथे थयेली छे, पंन्यासजी महाराजना उपदेशद्वारा अनेक शेठियाओ तरफथी मदद मळवाथी खंभातना नवाब साहेबना प्रेमपात्र नगरशेठ चन्दुलाल बापुलालभाई द्वारा ए उपाश्रयनो जीर्णोद्धार करावी उपाश्रयने बारणे एक फूटने आठ इंचना आरसपाषाणना चोरसामां जीर्णोद्धार संबंधी नीचे मुजबनो लेख लखवामां आव्यो छे,

जगत्पूज्य महात्मा श्रीमान् मोहनलालजी महाराजना सशिष्य पंन्यासजी श्रीऋद्धिमुनिजीना सदुपदेशथी आ उपा-

श्रयनां जीर्णोद्धारमां नीचेना गृहस्थोए उदार दिलथी मदद आपी छे ।

१—खंभातना नगरशेठ श्रीयुत चन्दुलाल बापुलाल ।

२—अच्छारीना शेठ श्रीयुत रायचन्द गुलाबचन्द ।

३—सुरतना झवेरी श्रीयुत कुसुमचन्द लल्लुभाई ।

४—खजवाना (मारवाड) ना शेठ श्रीयुत किसनचन्द पूनमचन्द ।

५—फणसाना शेठ श्रीयुत अमरचन्द खूबचन्द वगेरे ।

सं. १९८९ ना फागण सुदी १ ने वार शनैश्चर ।

ए उपाश्रयना जीर्णोद्धारनुं काम चार मास सुधी चालेलुं तेनी देखरेख अने हिसाब राखवामाटे मददगारो तरफथी आवेला दाहाणुं प्रगणाना दवीयर गामना लूंकडगोत्रीय वीसा-ओसवाल धर्मनिष्ठ श्रावक श्रीयुत मानमलजीने पंन्यासजी महाराजना परिचय अने उपदेशथी भागवती दीक्षा लेवानी भावना थइ तेथी जीर्णोद्धारना कामनी देखरेख तथा हिसाब राखवानी साथे साथे प्रतिक्रमणना सूत्रोनो अभ्यास करवा लाग्या, पछी तेओनी योग्यता जोइने पंन्यासजी महाराजे सं. १९८९ ना कार्तिक सुदी १५ ना दिवसे खंभातमां श्रीसंघ समक्ष पोताना वरद हस्ते दीक्षा आपी श्रीगुलाब-मुनिजीना शिष्य तरीके श्रीमहोदयमुनि नाम स्थापन कर्युं, त्यार बाद खंभातथी विहार करी महाराजजी सायमे पधार्यां त्यां महाराजश्रीना दर्शन करवा तथा वाणी सांभळवा खंभातनी पांचे ज्ञातिना आगेवानो उपरांत खंभातना

नवाब साहेबना मामा तथा मसीयाई भाई पण पोतपोताना जनाना साथे महाराजश्रीना दर्शन करवा आव्या हता, सायमामां खंभातना शेठ भोगीलाल नाणावटी तरफथी स्वामिवत्सल करी दरेक आगन्तुकोनी सुन्दर भक्ति करवामां आवी हती। त्यांथी महाराजश्री तारापुर पधार्या त्यां शिखरबंधी मोटुं जैनमन्दिर मुंबईवाळा शेठ मोतीशानुं बंधावेलुं छे हालमां त्यां श्रावकोनां पांचेक घर साधारण स्थितिवाळां छे, त्यांथी महाराजजी सोजीत्रे पधार्या त्यां वीसेक घर श्रावकोनां छे अने घणावर्षनी बांधणीनुं जुनुं जैनमन्दिर छे, गाममां पाटीदार तथा हुंमड दिगम्बरोनी वस्ती सारी छे, त्यांथी महाराजजी डभोउ पधार्या त्यां श्रावकनां १५ घर छे तेमां एक बे घर सुखी छे, जैनमन्दिर तथा उपाश्रय एकठां छे ते जीर्ण थइ गयां होवाथी तेने सुधराववानो धर्मानुरागी शेठ चतुरभाईना धर्मपत्नी श्रीमती मणीबेनने उपदेश आपवाथी तेमणे तुरत उदारदिलथी रु० ५०० खरचीने सुधराव्यां। पछी त्यांथी विहार करी खांधली थइने मातर पधार्या, मातरमां साचादेव तरीकेनी प्रसिद्धि पामेला श्रीसुमतिनाथप्रभुनुं प्राचीन जैनमन्दिर तीर्थ तरीके गणाय छे, ते बावन जिनालनुं घणुं मोटुं मन्दिर जुनुं थवाथी जीर्णोद्धार करावबा लायक जोइने जगतपूज्य महाप्रभावक श्रीमोहनलालजी महाराजना विद्वान् प्रशिष्य मातरमां चोमासुं करनार श्रीकल्याणमुनिजी महाराज जेओ गृहस्थावासमां पेथापुरना रहेवासी तथा पोरवाडज्ञातिना हता तेमणे पोरवाडज्ञातिना धर्मचुस्त सखावतीनर अमदावादना शेठ

जमनाभाई भगुभाईने मातरना मन्दिरनो जीर्णोद्धार करावता माटे सदुपदेश आप्यो, ते उपदेशनी शेठ साहेबने एवी सरस असर थइ के तेमणे अत्यन्त उदारताथी रु० त्रण लाख खरचीने मन्दिरने सर्वांग सुन्दर करावी दीधुं छे ।

मातरनी यात्रा करीने पंन्यासजी महाराज खेडे पधार्या अने भावसारज्ञातिना आगेवान गृहस्थ श्रीयुत दामोदरदास विठ्ठलदासे पोताना तरफथी रु० ३५००० खरचीने परामां नदीने किनारे जैनमन्दिरनी नजीकमां ज सुन्दर आलिशान जैनधर्मशाळा तथा उपाश्रय तैयार करावेलां छे, ते शेठनी धर्मपत्नी श्रीमती मणीबेनना आग्रहथी तेमना उपाश्रयमां उतर्या; ते श्राविका देवगुरुनी भक्तिमां तथा धर्मक्रियामां अनुरक्त होइ बनता प्रयत्ने विनति करीने पोताना उपाश्रयमां साधुसाध्वीनुं चोमासुं करावी पोताना ज्ञातिभाईयोने धर्ममार्गे जोडे छे, तेमना आग्रहथी त्यां १५ दिवस महाराजजी रोकाया अने व्याख्यान संभळाव्युं। खेडामां जैनोनी वस्ती सारी छे परन्तु तेओमां कुसंप घणो छे, खेडामां सुमतिरत्नसूरि जैन लायब्रेरी सारा पाया उपर चाले छे तेमां पुस्तकोनो संग्रह सारो होवा उपरांत वर्तमान पत्रो पण घणां आवे छे, लायब्रेरीना संचालकोनो लायब्रेरीनी उन्नतिमाटेनो निरन्तर सारो प्रयास चालु रहेतो होवाथी दिन प्रतिदिन लायब्रेरी उन्नत अवस्थाने प्राप्त करती जाय छे तेथी तेना वांचननो लाभ लेनाराओनी संख्या पण उत्तरोत्तर वधती जाय छे । ते अरसामां पोताना उपदेश द्वारा जैनोना त्रणे फिरकाना वृद्ध दुःखी अनाथ अपंग अने अशक्त माणसोने खानपान तथा

वस्त्रादिकनी मदद करी धर्मने रस्ते चडाववा माटे वटवा जैनाश्रमना 'संस्थापक विद्वद्वर्य महाराज श्रीमाणेकमुनिजी विहार करीने खेडे पधारी पंन्यासजी महाराज साथे रह्या, त्यार बाद वधा साधुओ साथे विहार करीने महेमदावाद अने बारेजडी थइने वटवा जैनाश्रममां पधारी बे दिवस रह्या त्यार पछी त्यांथी विहार करीने पंन्यासजी महाराज मणिनगर थइ अमदावादमां प्रवेश करी रायपुरमां आवेला श्रीचिन्तामणी पार्श्वनाथना दर्शन करी झवेरीवाडानी कोठारीपोळमां आवेला वखतशाहनी हवेलीना नामथी मशहूर थयेला श्रीखरतरगच्छीय जैन उपाश्रयमां उतर्या । व्याख्यान हमेशां चालु कर्युं तेनो लाभ जनता सारा प्रमाणमां लेवा लागी । एक दिवसे क्षेत्रपाळनी पोळमां श्रीमती मणीबेननी देखरेखमां चालती जैन कन्याशाळानी परीक्षा लेवा माटे श्रीमती मणीबेने पंन्यासजी महाराजने विनती करवाथी पंन्यासजी महाराज पोताना समुदाय साथे कन्याशाळामां पधार्या । ते कन्याशाळामां लगभग ७०० जैन बाळाओ भरतगुंथण संगीत तथा धार्मिक शिक्षण लेती हती तेमनी परीक्षा पंन्यासजीनी हाजरीमां श्रीमाणेकमुनिजीए लीधी ते वखते पंन्यासजी महाराजना उपदेशथी केटलाक श्रावको तरफथी कन्याशाळामां अभ्यास करती दरेक बाळाओने इनाम आपवामां आव्युं हतुं । थोडा दिवस बाद खंभातवाळा शेठ वाडीलाल छोटालाले अमदावाद आवी पंन्यासजी महाराजने जणाव्युं जे अमारा तरफथी खंभातना जीर्ण थइ गयेला श्रीकंसारी पार्श्वनाथना जैनमन्दिरनो जीर्णोद्धार थइ गयो छे, हवे फरीथी

प्रतिष्ठा करवानी छे ते माटे आपने खंभात पधारवानी विनति करवा आव्या छीए, तेओनी आग्रहभरी विनति स्वीकारीने अमदावादथी विहार करी वटवा जैनाश्रम खेडा मातर वगेरे गामोए थइने पंन्यासजी महाराज ज्यारे खंभात नजीक सायमे पधार्या त्यारे खंभातनी पांचे ज्ञातिनां घणां माणसो महाराजश्रीने वांदवा आव्या हतां ते वधानी स्वामिभक्ति खंभातना शेठ वाडीलाल छोटालाले स्वामिवत्सल द्वारा करी हती, बीजे दिवसे ते ज शेठ तरफथी धामधूमथी पंन्यासजी महाराजने शहेरमां प्रवेश करावी माणेकचोकना उपाश्रयमां उतार्या। त्यार बाद मुहूर्त जोवडावीने आंगी पूजा अने भावना पूर्वक प्रतिष्ठाना कार्यनी शरुआत करवामां आवी, खंभातनी ओसवालज्ञातिना आगेवान शेठ वाडीलाल छोटालाले भगवानने गादीए बेसाडवानो आदेश मेळवी प्रतिष्ठाने दिवसे पोते कंसारी पार्श्वनाथने गादीए विराजमान करी शान्तिस्नात्र भणावीने स्वामिवत्सल कर्युं हतुं। प्रतिष्ठानुं कार्य समाप्त थयुं एटले तरत पंन्यासजीए खंभातथी विहार करी पेलो मुकाम सायमे कर्यो, आ वखते पण पंन्यासजीने वन्दन करवा आवनार माणसोनी भक्तिनो लाभ शेठ वाडीलाल छोटालाले स्वामिवत्सल करीने लीधो हतो। बीजे दिवसे सायमेथी विहार करी अनुक्रमे तारापुर सोजीत्रा डभोउ अने खांधली थइने मातर पधार्या, त्यां महाराजजीनी तबीयत एकदम नरम थइ गइ, शरुआतमां ताव तथा शरदीए आक्रमण कर्युं अने पछी न्यूमोनीयानो हुमलो थयो, जोतजोतामां

मांदगीए उग्र रूप लीधुं परन्तु मातरना नगरशेठ श्रीयुत गोपाळजीभाई पोते वैष्णव होवा छतां पूज्य पंन्यासजी महाराजना सहवासथी सुसंस्कारवाळा अने जैन साधुना अनुरागी थयेला तेथी पंन्यासजी महाराजनी सेवा शुश्रूषामां रात दिन प्रयत्न करता हता तथा सरकारी दवाखानाना डॉक्टर पण सेवाभावी होवाथी कोई पण प्रकारनी फी लीधा वगर हमेशां तबीयत जोइ तपासीने दवा आपता हता तेथी एकवीस दिवसे महाराजजीनी तबीयत सुधरी हती। ते वखते मातरना साचा देव श्रीसुमतिनाथप्रभुनी यात्राए निकळेलो अमदावादनो ५००० माणसनो संघ तथा खंभात नजीक आवेला वडवा आश्रमथी आवेलो कवि राजचन्द्रना अनुयायिओनो २००० माणसोनो संघ पण एक ज दिवसे मातरमां आवी पहोंच्यो तेथी मातरनी बधी धर्मशाळाओ चिकार भराइ गइ। ते समये आसरे अढारेक ठाणा सहित सोसायटीपक्षमां आगेवान गणाता अने "जैन साधुओए मुंबईमां जइ चोमासुं करवुं अनुचित छे" एवा प्रकारनी पोताना गुरुनी मान्यता उपर तेओना स्वर्गवास पछी पाणी फेरवीने मुंबई चोमासुं करी आवेला श्रीविजयलब्धिसूरिजीनुं आगमन पण मातरमां थयुं, चेलाओ साथे सूरिजी पोते धर्मशाळे धर्मशाळे फर्या परन्तु "मसीद नानी अने मुसल्लाओ घणा" ए कहेवत मुजब जग्या थोडी अने यात्राळुओ एकसाथे घणां आवी चढ्या एटले यात्राळुओने पोताने ज स्थान मेळववाना फांफां मारवा पडतां होय एवी दशामां तेओ सूरिजीने क्यांथी स्थान आपी

शके ? तेथी फरता फरता थाकीने सूरिजी पोताना शिष्यो सहित न छुटके ज्यां पंन्यासजी महाराज उतर्या हता त्यां आव्या। पंन्यासजीनी तबीयत हजी अशक्तिवाळी हती छतां सूरिजीने माथे आवी पडेली आफतनी वात पंन्यासजी महाराजना जाणवामां आवतां तेओने माटे स्थाननी सगवड करावानो विचार करता हता एटलामां तो शिष्यो सहित सूरिजीने पोताना स्थानपर पधारी चुकेला जोइने पंन्यासजीए तरत पोताना साधुओने जणाव्युं के आपणा महेमान तुल्य आवेला आ बधा साधुओने आपणा स्थानमां सगवड करी आपो, तेप्रमाणे सगवड करी आपतां बधा साधुओ त्यां उतर्या। बपोरना टाइमे सूरिजीए अने पंन्यासजीए एक बीजानां दिल खोलीने अनेक प्रकारनो वार्तालाप करी आनन्द अनुभव्यो हतो, ते दिवसे मातरमां साधु साध्वीनां ठाणां आसरे पचासेक एकत्र थयां हतां। पन्यासजी महाराजनी तबीयत नरम होवाना समाचार जाणीने अच्छारीवाळा गुरुभक्त शेठ रायचन्द गुलाबचन्द महाराजश्रीने वन्दना करवा तथा जोइती सहाय आपवा मातर आव्या हता तेओ मातरनी यात्रा करीने श्रीस्तंभनपार्श्वनाथनी यात्रा करवा खंभात गया हता। त्यार बाद तबीयत बरोबर सुधरी जवाथी मातरथी विहार करी खेडा महेमदावाद तथा वटवा जैनाश्रम थइने शासननायक श्रीमहावीर प्रभुना केवळज्ञान कल्याणक (वैशाख सुदी १०) ना दिवसे पंन्यासजी महाराज अमदावादमां प्रवेश करी झवेरीवाडामां खरतरगच्छीय उपाश्रये पधार्या अने व्याख्यान चालु कर्युं।

असाड सुदी ११ ना दिवसे जगतमां मोटा दादा तरीके प्रसिद्ध थयेला श्रीजिनदत्तसूरिजीनी जयन्तीनो मेळावडो पंन्यासजी महाराज साहेबना प्रमुखपणा नीचे करवामां आव्यो हतो तेमां शरुआतमां क्षेत्रपालनी पोळनी जैन कन्याशाळानी बाळाओए मधुर कंठे संगीत साथे दादासाहेबना गुणोनी स्तुतिओ तथा गरबा गाइने सभाजनोने दादासाहेबना गुणोथी परिचित कर्या हता, पछी श्रीमाणेकमुनिजीए दादासाहेबनो प्रत्यक्ष परचो जोयेलो ते जणावीने आस्तिकशब्द उपर विवेचन कर्युं हतुं, पछी पंन्यासजी श्रीरंगविमळजीए विवेचन कर्युं हतुं अने त्यार पछी बीजा बे वक्ताओना विवेचन थइ गया पछी छेल्ले प्रमुखश्रीए दादासाहेबना जीवनना मुख्य मुख्य मुद्दाओ जणावीने मांगलिक संभळावी सभानी समाप्ति करी हती, ते वखते सभाजनोने श्रीफळनी प्रभावना उपरांत जैनशाळानी बाळाओने धार्मिक पुस्तकोनी लाणी करवामां आवी हती, आ जयन्तीनो कुल खर्च मातरना नगरशेठ गोपाळजीभाई वैष्णव तरफथी करवामां आव्यो हतो, बपोरना टाइमे ठाठमाठथी दादासाहेबनी पूजा भणाववामां आवी हती तेमां घणां माणसोए उत्साहथी भाग लीधो हतो, जयन्तीना दरेक कार्यमां कोठारी चन्दुलाल मोहनलाले आगेवानीभर्यो भाग लीधो हतो। आ चोमासामां एक एक पारणाने आंतरे अट्ठम अट्ठमनी उग्र तपस्या लगातार चार महिना सुधी पंन्यासजीए करी हती, तपस्या चालु होवा छतां पोते व्याख्यान पण वांचता हता। दादासाहेबनी पोळमां प्राचीन पूर्वाचार्य श्रीजिनदत्तसूरिजी

श्रीजिनकुशळसूरिजी श्रीजिनचन्द्रसूरिजी तथा श्रीजिनलाभसूरिजी अने अर्वाचीन महात्मा मुनि श्रीमोहनलालजी महाराजनी चरणपादुका तथा मूर्तिवाळा दादासाहेबना मन्दिर तरीके प्रसिद्ध पामेला जैन मन्दिरने रंग रोगान अने रीपेरींग कराव्याने घणां वर्षो वीति गयां होवाथी फरीथी कराववानी जरूरत हती तेथी पंन्यासजी महाराजे पोताना श्रीमंत भक्तो पासेथी द्रव्यनी मदद अपावी अने कोठारी चन्दुलाळभाईये पोतानी जाति देखरेखमां बधुं काम सुन्दर करावी दादासाहेबना मन्दिरनी आखी रोनक फेरवी नांखी, अजाण्या यात्रीने एम ज लागे के आ मन्दिर हमणा नवुं तैयार थयुं हशे। वटवा जैनाश्रमने पण पंन्यासजी महाराजे पोताना भक्तोने उपदेश करी रु. ४५० रोकडा तथा अंग्रेजीओ अने कामळीओनी मदद अपावी हती । ए रीते सं. १९८९ नुं एकताळीसमुं चोमासुं पंन्यासजी महाराजनुं अमदावादमां थयुं। चोमासा बाद अमदावादथी विहार करी वटवा जैनाश्रम अने महेमदावाद थइने खेडे गया त्यां भावसार दामोदरदासभाईये जे उपाश्रय बंधाव्यो हतो ते नदीने कांठे आवेलो होवाथी तथा गया चोमासामां पाणीनो मारो घणो लागवाथी दिवालोमां फाट पडी गइ हती ते जल्दी सुधारवा माटे दामोदरदासभाईनी धर्मपत्नी श्रीमती मणीबेनने पंन्यासजी महाराजे उपदेश आपवाथी तेमणे तरत रु. ७०० खरचीने उपाश्रय दुरुस्त कराव्यो। पछी खेडेथी विहार करी मातर थइने खांधली गया, त्यां उपाश्रय तो हतो परन्तु तेमां केटलीक अगवड हती ते पंन्या-

सजी महाराजे अमदावादेनी एक श्राविकाने उपदेश करी रु. ५०० नी मदद अपावी मातरवाळा शेठ श्रीयुत खीमचन्द-भाई मार्फत उपाश्रय सुधरावीने सगवड करावी, पछी तारापुर अने मोरज थइने ईसरवाडे पधार्या, त्यां साधुसाध्वीओने उतरवानी घणी तकलीफ पडती हती, खंभात वडोदरा भरुच सुरत अने मुंबई तरफथी पालीताणे जतां ए गाम रस्तामां आवतुं होवाथी साधु साध्वीनुं आवागमन विशेष थतुं होवा छतां कोइये पण उपाश्रयनी सगवड करावबा तरफ लक्ष्य आप्युं न हतुं, पंन्यासजी महाराजे ते अगवड दूर करावबा माटे उपदेश आपीने टीप शरु करावी पछी ते रुपीयाथी उपाश्रय करावबामां आव्यो छे। त्यार बाद ईसरवाडेथी विहार करी खंभात राळज सारोद कावी जम्बूसर आमोद समनी भरुच अंकलेश्वर अने सायण वगेरे गामोए थइने पंन्यासजी महाराज सुरत पधार्या त्यां थोडा दिवसनी स्थिरता कर्या बाद भेस्तान गया, त्यांना शेठ गुलाबचन्दभाईये घणो ज आग्रह करीने आठ दिवस सुधी पंन्यासजीने रोकी राख्या अने गामना दरेक धर्मना लोकोने प्रेमपूर्वक समजावीने महाराजश्री पासे जेओ दिवसे नहि आवी शके तेओने रात्रिए पण तेडी लावीने तेओने महाराजश्रीनो उपदेश संभळाव्यो तेथी आखुं गाम धर्मना संस्कारवाळुं थयुं परिणामे गामना घणा लोकोए रात्रिभोजन मांस मदिरा परस्त्रीगमन वगेरेना त्यागना यथाशक्ति नियमो लीधा। पछी त्यांथी मरोली नवसारी कालीयावाडी सीसोदरा अने गणदेवी

थइने टांकेल पधार्या, त्यां मन्दिर तैयार थइ गयेलुं होवाथी त्यांना श्रावकोने प्रतिष्ठा करावी लेवा माटेनो उपदेश आपवाथी त्यांना संघे एकत्र थइने प्रतिष्ठानुं मुहूर्त कढावी तैयारी करवा मांडी, तेर तो नवकारसी पण नोंधाइ गई, खर्चनी वीजी वधी व्यवस्था थइ गइ परन्तु प्रतिष्ठानि क्रिया सारी रीते करावनारनो योग घणी महेनत अने तपास करवा छतां पण नहि मलि शकवाथी ते वर्षे प्रतिष्ठा थइ शकी नहि। पंन्यासजी महाराजे घणो प्रयत्न कर्यो परन्तु त्यांना संघनी पुण्यनी खामीने लीधे कहेवत छे के "अणी चुक्यो सो वर्ष जीवे" ते मुजब हजी सुधी त्यांना मन्दिरनी प्रतिष्ठा थइ शकी नथी।

त्यार पंछी गाम दवीयरना शेठ पृथ्वीराजजी शेठ छगनमलजी तथा शेठ नवलमलजीए टांकेल आवीने पंन्यासजी महाराजने जणाव्युं जे अमारा गामना शा० मानमलजीए आपनी पासे दीक्षा लीधी ते अगाउ तेमणे पोतानुं घर तथा जमीन जैनमन्दिर अने उपाश्रयना काममां लेवा श्रीसंघने अर्पण कर्यां हतां, ते जमीन उपर अमारा संघे नवीन मन्दिर बंधावी तैयार कराव्युं छे ते मन्दिर माटे श्रीविमलनाथप्रभुनी प्रतिमा जोइनी हती तेने माटे खंभात अमदावाद शेरीसा कलोल तथा मारवाडना घणा गामोमां तपास करी छतां पेली मुसाफरीमां जोइये तेवी प्रतिमा नहि मळी शकवाथी हताश नहि थतां वीजीवारनी मुसाफरी शरु करी अमदावाद गया, त्यां शेठ आणंदजी कल्याणजीनी पेढीना कार्यवाहको शेठ भगुभाई सुतरीया वगेरेए तथा त्यां बिराजता आचार्य श्रीविजयनीति-

सूरिजीने तथा आचार्य श्रीविजयवल्लभसूरिजीने मळीने जणाव्युं जे आ राजनगरमां आटआटली प्रतिमाओ होवा छतां अमारा गामना लोकोने दर्शन पूजा निमित्ते अमारा गामनी राशिने अनुकूळ आवे एवी एक प्रतिमा अमने अहींथी मळी शकती नथी, तेथी आप साहेबो कांइक कृपा करो तो अमारो प्रयत्न सफळ थाय एवी आशा छे। अमारी विनतिनी असरथी ते बन्ने सूरिपुंगवोए प्रेरणा अने प्रयत्न करीने शेठ आणंदजी कल्याणजीनी पेढी हस्तकना श्रीअजितनाथप्रभुना मन्दिरमांथी प्राचीन भव्य प्रतिमा अपावी, तेथी पांच पांच महिनाथी प्रतिमाजी मेळववा माटेनो करातो अमारो प्रयत्न सफळ थयो। ते प्रतिमाजीने अमदावादथी दवीयर लइ जइ मन्दिरमां प्रवेश कराववानुं मुहूर्त सं० १९९० ना वैशाख सुदी ६ नुं नीकळ्युं हतुं, ते प्रतिमाजीनो प्रवेश आपणा चरित्रनायकना वरदहस्ते ज थाय एवी दवीयरगामना संघनी इच्छा होवाथी त्यांना आगेवानो टांकेल आव्या अने बधी हकीकत पंन्यासजी महाराजने जणावी दवीयर पधारवानी आग्रहपूर्वक विनति करी। जवाबमां महाराजजीए जणाव्युं के पंथ लांबो छे अने दिवसो थोडा छे तेथी माराथी पहोंची शकाय एम नथी, परन्तु दवीयरना आगेवानोए तो हठ लइने जाहेर कर्युं के जो आ अवसरे आप नहि ज पधारी शको तो भले अमारुं ए मुहूर्त जाय, ज्यारे आप दवीयर पधारशो त्यारे आपने हस्ते ज अमे बिम्बप्रवेश करावी शुं। एवो तेओनो निश्चय जाणीने महाराजजीए दवीयर पहोंचवानी हाम भीडी तरतज विहार करी

बीलीमोरा वलसाड पारडी वगवाडा वापी अने संजाण थइ उम्बरगामने स्टेशने पधार्या, ते ज दिवसे प्रतिमाजी पण त्यां आवी गया होवाथी त्यांना बजारमां सारे ठेकाणे पधरावी ठाठमाठथी नवपदजीनी पूजा भणावी, पूजामां जैनो करतां जैनेतरोनी हाजरी विशेष हती ते बधाने प्रभावना आपवामां आवी हती, ते वखते जैनेतरोए जैनलोकोनी प्रभुभक्तिनी घणी प्रशंसा करी हती। बीजे दिवसे दवीयर घोलवड तथा दाहाणुंना आगेवानो उपरांत अम्बाचना शेठ ताराचन्द जेताजी श्रीमहोदयमुनिजीना संसारी अवस्थाना मसीयात भाई अच्छारीवाळा शेठ रायचन्दभाई, फणसाना शेठ मेघराजजी अने सोलसम्बाना शेठ गुलाबचन्दजी संचेती तथा काठीयावाडी भाविक शेठ मोहनलालभाई वगेरे घणा श्रावको उम्बरगाम स्टेशने हाजर थइ गया, पछी श्रीविमलनाथ प्रभुने सुन्दर सजावटवाळी पालखीमां पधरावी गाजते वाजते दवीयर लइ जवानो वरघोडो काढ्यो तेमां पूज्य पंन्यासजी महाराज पण पधार्या। श्रावकोना जयजयारव अने श्राविकाओना सुमधुर कंठथी गवातां गीतो सहित ज्यारे वरघोडो दवीयरगामनी समीप जइ पहोंच्यो त्यारे दवीयरनी आमजनता वरघोडानी सामे आवी पहोंची तेमां दवीयरनी दरेक कोमनां माणसो हतां ते वखते दवीयरनी दरेक उचकोमनी कन्याओ तथा सधवा स्त्रियो सुन्दर वस्त्र अने अलंकारोथी सुभूषित थइ मस्तकपर पाणीना कळशो लइ आवी पहोंची हती तेमणे घणा उमंगथी भगवानने वधाव्या हता ते वखते दवीयरनो देखाव घणो ज

सुन्दर देखातो हतो। आ प्रसंग उपर पंन्यासजी महाराजने पधारेला जोइने लोको घणा ज खुशी थया हता। पछी वरघोडो गाममां पहोंच्यो अने श्रीविमलनाथप्रभुने सं० १९९० ना वैशाख सुदी ६ ना शुभ मुहूर्ते अच्छारीवाळा शेठ रायचन्द गुलाबचन्दे ४० मण घीनी बोलीथी आदेश लइने जैनमन्दिरमां प्रवेश कराव्यो ते दिवसे दवीपरना संघ तरफथी संघजमण करवामां आव्युं हतुं। त्यार बाद त्यांथी विहार करी बोरडी थइने महाराजश्री घोलवड पधार्या, त्यांना शेठ पृथ्वीराजजी कस्तुरचन्दजी उमेदमलजी छोगमलजी रतनचन्दजी अने फुलचन्दजी वगेरे आगेवानोए घोलवडमां चोमासुं करवानी विनति करी, त्यारे पंन्यासजीए जणाव्युं के तमारी बधानी भावना छे तो हुं विचार करीश हाल तो आगळ जवानो भाव छे। पछी त्यांथी चीखला थइ दाहाणुं पधारतां त्यांना संघे ठाठमाठथी प्रवेश कराव्यो, पंन्यासजी महाराजे त्यांनी जनताने एक महिनो धर्मोपदेश संभळाव्यो हतो ते दरम्यान घोलवडना आगेवानो पाछा विनति करवा आव्या हता तेओने आशाजनक उत्तर आपी दाहाणुंथी विहार करी महाराजश्री चीखला पधार्या त्यां घोलवडना घणां माणसो पंन्यासजीने वांदवा तथा विनति करवा आव्यां हतां ते बधानी भक्ति चीखलाना श्रावकोए प्रेमपूर्वक करी हती। बीजे दिवसे घोलवडना संघे पंन्यासजी महाराजनो प्रवेश घणा ठाठमाठथी कराव्यो हतो। ते साल्नुं सं० १९९० नुं बेंतालीसमुं चोमासुं पंन्यासजीए घोलवडमां कर्युं। ते सालमां पर्युषण प्रसंगे १५

दिवस सुधी दाहाणुंना तथा वगवाडा प्रगणाना जैन भाई बेनोए घोलवडमां रहीने दरेक धर्मकार्योमां सुन्दर लाभ लीधो हतो। घोलवडमां जैनोनी वस्ती झाझी नथी छतां बहारना घणां माणसो पर्युषण करवा आवेलां तेथी पर्युषणमां स्वप्नां वगेरेनी उपज रूपया २००० उपरांत थइ हती। घोलवडना शा. पृथ्वीराजजी जसराजजी चन्दनमलजी तथा खिवराजजी आदि चारे भाइयोए पर्युषणमां बहारगामना आवेला लगभग १००० माणसोनी सेवाभक्ति रातदिन खडे पगे रहीने उत्तम प्रकारे बजावी हती, तेओनी सेवाभक्ति करवानी धगश जोइने बीजा जैन भाईयो तेओनी खानदानीनी घणी प्रशंसा करता हता। आ चोमासामां श्रीमहोदयमुनिजीए तथा दाहाणुं स्टेशनवाळा शा. तलकचन्दजी भेराजीना मातुश्रीए मासक्षपणनी तपस्या करेली तेमज अट्ठाइ वगेरे तपस्या पण घणी ज सारी थइ हती, भाद्रवा सुदी ५ ना दिवसे पंन्यासजी महाराजना प्रमुखपणामां मळेली जैनोनी २००० माणसोनी सभामां अच्छारीवाळा धर्मचुस्त शेठ रायचन्दभाईये उभा थइने जणाव्युं जे दाहाणुं प्रगणाना आपणा जैन बाळकोने व्यावहारिक शिक्षणनी साथे धार्मिक शिक्षण पण आपे एवी कोइ संस्था नथी तेथी आपणी परंपरामां धर्मना संस्कारोनी ओछाश थती जाय छे तेथी तेवी कांइ संस्था स्थापवा माटे अत्रे बिराजेला पंन्यासजी महाराज साहेब तरफथी मळेला उपदेशनी असरथी मारी भावना थइ छे के आप बधा भाईयो जो पोतपोतानी शक्ति अनुसार ए काममां सुन्दर साथ आपो तो

आपणे एक जैन बोर्डींग खोलीए अने ते बोर्डींगनी साथे मारा स्वर्गस्थ पूज्य पिताश्रीनुं नाम जोडवानी शरते हुं रु. २१००० आपुं अने आखा दाहाणुं प्रगणामांथी आप बधा भाईयोए मळीने रु. ४०००० भेगा करवा ए प्रमाणेनी शेठ रायचन्दभाईनी उदारता भरेली वाणी सांभळीने सर्वे घणा खुशी थया अने घोलवड दाहाणुं तथा सामटाना शेठिया-ओमांथी वारा फरती अकेकजणे उभा थइने शेठ रायचन्द-भाईनी उदारताने वधावी लइ तेमना कथनने पोतपोतानी अनुमति आपी । पछी ते कार्यने मूर्तस्वरूप आपवा माटे बोरडीगामे कमीटी भेगी थइ ते वखते त्यां बिराजता पंन्यासजी महाराजे वटवा जैनाश्रमना संस्थापक श्रीमाणेक-मुनिजीए तथा श्रीविजयेन्द्रसूरिजीए पण ते कमीटीना मेम्बरोने उपदेश दइ खंत अने उदारतापूर्वक आरंभेला कार्यने पार पाडवाने माटे प्रोत्साहित कर्या हता, तेथी कमीटीए ते ज वखते दाहाणुं प्रगणामांथी रु. ४०००० भेगा करवा माटेनी टीपनी शरुआत करी दीधी । टीप भरावतां भरावतां कोइये पोताने रु० भरवा पडशे ते कारणथी, कोइये ए संस्था खोलाववानो साधुनो धर्म नथी एवी पोतानी समजथी अने कोइये ए संस्था स्थापवी ते उत्तम छे एम समज्या छतां ते संस्था स्थपाववानो जश पंन्यासजी श्रीऋद्धिमुनिजीने पण मळतो होवाथी संस्थानी टीपमां विघ्नो नांखवा मांड्यां, परन्तु पूज्य पंन्यासजी महाराजे दाहाणुं प्रगणाना नाना मोटा दरेक गामोए विहार करी घणो परिश्रम वेठी. असरकारक उपदेश

आपीने तथा घणाखरा गामोमां कमीटीना मेम्बरोने पोतानी हाजरीमां बोलावीने ते ते गामना श्रावको पासे सारी सारी रकमो टीपमां भरावीने रु. ४०००० पुरा करावी आप्या। ए टीप भरावताना उपदेश माटे पंन्यासजी महाराज ज्यारे वापीमां हता त्यारे मुंबईथी पायधुनी उपर आवेला श्रीमहावीर जैन-मन्दिरना कार्यवाहक शेठ मूलचन्द हीराचन्द भगत मुंबईना खरतरगच्छीय संघ तरफथी मुंबई पधारवानी विनंति करवा आवेला तेओनी विनंतिथी अने मोटा महाराज श्रीमोहन-लालजी महाराजना नामथी अंकित थयेली जैन सेंट्रल लाय-ब्रेरी अने जैन संस्कृत पाठशाला संबंधी केटलुंक काम होवाथी पंन्यासजी महाराजे मुंबई तरफ विहार कर्यो। अनुक्रमे श्रीगाम घोलवड अने दाहाणुं थइने सामटा पधार्या, त्यां दश दिवसनी स्थिरता करी ते दर्म्यान बोर्डींगनी कमीटीना दरेक मेम्बरो सामटे आवी गया, ते दरेक मेम्बरने योग्य उप-देश तथा बोर्डींगना कार्य माटे सूचनाओ आपीने जणाव्युं जे टीप पुरी भराववामां मारी जरूरत हती तेथी आज सुधी आ प्रगणामां ज हुं रोकायो अने तमारुं टीपनुं काम पुरुं करावी आप्युं, हवे योग्य धारा धोरण करीने बोर्डींगने सारा पाया उपर चलाववी ए काममां मारी कंइ जरूरत नथी, त्यारे अच्छारीवाळा शेठ रायचन्दभाईये तथा कमीटीना बीजा मेम्बरोए जणाव्युं जे मोटामां मोटुं काम टीपमां रु. ४०००० भरावी आपवानुं जे हतुं ते आपे पूर्ण परिश्रम करीने पार पाडी अमारो रस्तो सरळ करी आप्यो छे अर्थात् रसोइनी

बधी सामग्री आपे मेळवी आपी छे हवे तो रसोइ करीने जमवा सरखुं नानुं काम करवानुं बाकी रह्युं छे ते काम आप साहेबनी कृपादृष्टिथी अमे थोडा ज दिवसोमां पुरुं करीशुं। पछी सामटेथी विहार करी पालगढ अने वीरार थइ अगासीमां श्रीमुनिसुव्रतस्वामीनी यात्रा करी भाइंदर बोरीवली मलाड अंधेरी अने दादर वगेरेमां मुकामो करता करता भायखले थइने भींडीबजारने नाके श्रीशान्तिनाथ जैनमन्दिरे पधार्या, त्यांथी मुंबईना खरतरगच्छीय संघे सुन्दर सामैयुं करीने महावीर जैनमन्दिरनी पाछळना उपाश्रये उतार्या। थोडा दिवस बाद श्रीमोहनलालजी महाराजनी जयन्तीनो दिवस आवतो होवाथी ते साल मोटा पाया उपर श्रीमोहनलालजी महाराजनी जयन्ती उजववानो प्रयत्न पंन्यासजी महाराजे कर्यो तेथी सं. १९९१ ना चैत्र वद १२ ने रोज खूब धामधुमथी जयन्ती उजववामां आवी हती। ते जयन्तीनो हेवाल मुंबई समाचारना ता. २-५-१९३५ना अंकमां तथा सांजवर्तमानना ता. १-५-३५ ना अंकमां विस्तारथी छपायो हतो तेमांथी सार भाग अत्रे आपवामां आवे छे। मुम्बईना जैनो उपर महान उपकार करनार स्वर्गवासी प्रसिद्ध मुनि श्रीमोहनलालजी महाराजनी जयन्ती निमित्ते ता. ३०-४-३५ ने दिने सवारे ८ वागे रथयात्रानो वरघोडो काढवामां आव्यो हतो तेमां जूदी जूदी शाळाओ तथा बोर्डींगोनां २०० बालक बालिकाओ मुनिश्रीनां गुणगान करतां हतां, जैन स्वयंसेवक मंडल तथा मांगरोळ जैन युवक मंडळनां बेन्ड वागतां हतां, वरघोडो फरी आव्या बाद आदीश्वरजीनी धर्मशाळामां श्री-

विजयवल्लभसूरिजीना प्रमुखपणामां मोटो मेळावडो थयो हतो तेमां सूरिजीए जणावेलुं जे.सं. १९४७ मां पहेल वहेला श्रीमोहनलालजी महाराजे मुंबई पधारी साधुओने माटे मुंबईना द्वार खुल्लां मुक्यां ते वखते लोर्ड रीपनने मोतीना तोरणथी जेवो आवकार मळ्यो हतो तेवो ज आवकार श्रीमोहनलालजी महाराजने जैनो तरफथी मळ्यो हतो, बीजा कोइ पण मुनिने एवो आवकार मळ्यो नथी। तेओश्रीनी जयन्ती आजे जेवी ठाठथी उजवाइ छे तेवी अगाउ कदी उजवाइ नथी। पछी मास्तर मावजी दामजी शाहे खास आ जयन्ती निमित्ते पोते रचेली कविता गाइ संभळावी हती अने तेओना फोटाने घणा दुकानदारो पूज्यबुद्धिथी पोतानी दुकानमां राखीने हमेशा वन्दन करे छे एम जणाव्युं हतुं। त्यार बाद श्रीचरण-विजयजीए पूज्यपाद श्रीआत्मारामजी महाराज तथा आ जयन्तीनायकने परस्पर केवो प्रेमभाव हतो ते दर्शावनार प्रसंगनुं विवेचन करतां जणाव्युं जे बेरीस्टर वीरचन्द राघवजी गांधी अमेरीकाना चिकागो शहेरमां जैन धर्मनो डंको वगाडी मुंबई आव्या त्यारे तेओने संघवहार मुकवानी हिलचाल मुंबईमां थइ हती, ते बाबत मुंबईना संघे श्रीमोहनलालजी महाराजनी सलाह मांगी त्यारे तेओए ए बाबतमां श्रीआत्मा-रामजी महाराजनी सलाह लेवानुं जणाव्युं, संघे तेओश्रीने पंजाब पत्र लखी पुछावतां तेओए ए बाबतमां श्रीमोहनलालजी महाराज कहे तेम करवानुं जणाव्युं, ए प्रमाणे श्रीआत्मारामजी महाराज अने श्रीमोहनलालजी महाराज परस्पर एक बीजाने

महत्त्व आपता हता, एवो ज प्रेम दरेक साधुओमां खीले तो जैनशासननी घणी उन्नति थाय, आखेरे संघवहारनी वात तो उडी ज गइ अने स्नात्रपूजा भणावी शत्रुंजयतीर्थनी यात्रा करी आववानुं जणाववामां आव्युं हतुं। त्यार बाद पं. श्रीऋद्धिमुनिजीए मुनिश्रीना जुदा जुदा जीवन प्रसंगो वर्णव्या हता। पछी शेठ जीवतलाल प्रतापशीनो आजनी जयन्ती प्रति सहानुभूति जणावनारो पत्र वांचवामां आव्यो हतो। अन्तमां आचार्यश्रीए उपसंहार करतां जणाव्युं जे श्रीमोहनलालजी महाराजना प्रयत्नथी आ मुंबई जेवा मोटा शहेरमां बाबू पन्नालाल जैन हायस्कूल स्थपाइ छे परन्तु एटलेथी सन्तोष नहि मानतां बाबू साहेबना वारसो जैन हायस्कूलने जैन कॉलेज बनावी देवा तरफ लक्ष्य आपशे एवी हुं आशा राखुं छुं, ते वखते बाबू साहेबना सुपुत्र शेठ भगवानलालजीए खुलासो कर्यो के बाबू पन्नालाल जैन चेरीटीझना कार्यवाहको एक जैन कॉलेज स्थापवा माटे विचार करी रह्या छे। ते खुलासो सांभळी जैन जनताने घणो आनन्द थयो हतो। जयन्तीनो मेळावडो बार वागे समाप्त थया बाद श्रीमहावीरस्वामीने मन्दिरे पूजा भणावी आंगी रचावी हती अने रात्रे भावना बेसाडी हती।

त्यार बाद पंन्यासजी श्रीकेसरमुनिजी आदि ठाणा ३ ने श्रीमहावीर जैनमन्दिरने उपाश्रये राखीने पंन्यासजी श्रीऋद्धिमुनिजी आदि ठाणा ३ कच्छी वीसा ओसवाल समुदायनी विनतिथी मांडवी उपर पालागलीमां आवेली तेओनी वाडीमां पधार्या अने सं. १९९१ नी सालनुं तेंतालीसमुं चोमासुं त्यां

कर्युं । ते चोमासामां महाराजश्रीना उपदेशथी श्रीवर्धमान तप आयंबील खातुं शेठ हंसराजभाई कुंवरजीए खोली पोते एकलाए उदारताथी त्रण वर्ष सुधी चलावीने रु. १०००० नी मदद आपी कच्छी वीसा ओसवाल महाजनने सोंपी दीधुं छे, महाजन तरफथी हालमां उत्तम व्यवस्थापूर्वक ते खातुं चाली रह्युं छे तेनो लाभ ते लत्तामां रहेनार कच्छीभाईयो उपरांत मारवाडी अने गुजरातीयो पण लइ रह्या छे।

त्यार बाद कच्छी वीसा ओसवाल जैन स्कूलना विद्यार्थिओनी तथा पुरबाई जैन कन्याशाळानी बालिकाओनी धार्मिक परीक्षा पंन्यासजी महाराजे लीधी हती अने शेठियाओने उपदेश करी तेओने सारां धार्मिक पुस्तक वगेरेनां इनामो अपाव्यां हतां। पर्युषणमां आठे दिवसना ६४ पहोरी पौषध घणा भाईयोए कर्या हता, पर्युषण प्रसंगे बहारगामथी आवेला भाईयोनी खानपानादि दरेक प्रकारनी भक्ति शा. लधाभाई मावजी शा. पुनसी मोणसी तथा तेमना भागीदार शा. जेठाभाई अने थोडा वखत पर दीक्षित थयेला शा. गांगजीभाई वगेरेए उत्तम प्रकारे करी हती। कच्छी वीसा ओसवाल तथा दसा ओसवालनो पर्युषण प्रसंगे रथयात्रानो वरघोडो दरसाल अलग अलग नीकळतो हतो तथा पर्युषण बाद बन्ने समाजना जमण पण अलग अलग थतां हतां ते बाबत बन्ने पक्षना आगेवानोने पंन्यासजी महाराजे उपदेश आपीने बन्ने समाजनो रथयात्रानो वरघोडो भेगो काढवानुं अने जमण पण भेगुं करवानुं शरू कराव्युं, त्यारथी हवे दरसाल ते ज प्रमाणे एक साथे वरघोडो

काढवानुं तथा जमण करवानुं चालु रह्युं छे। त्यार पछी चोमासुं पुरुं थतां कार्तिकी पूर्णिमाए कच्छी-वीसा ओसवालनी वाडीएथी श्रीशत्रुंजय तीर्थनो पट मोटरमां पधरावी अनेक साबेलाओ तथा बेन्डवाजा साथे वरघोडो काढवामां आव्यो हतो ते भातबजार मांडवी झवेरी बजार मारवाडी बजार पायधुनी गुलालवाडी नळबजार अने सातरस्ते थइने, खरतरगच्छमां जैनधर्मनी उन्नतिना कार्यो करनारा अनेक शेठियाओ थइ गया छे तेओमां जेमणे शत्रुंजय पहाड उपर मोटो खाडो हतो ते लाखो रुपीया खर्चीने पुरावी ते जग्या उपर सेंकडों मन्दिरोवाळी एक टूंक बंधावी जे हालमां शेठ मोतीशानी टूंक तरीके ओळखाय छे, ते मोतीशा शेठे मुंबईमां कोटमां जैनमन्दिर पायधुनी पर गोडीजीनुं मन्दिर तथा अगासीमां पण जैनमन्दिर बंधाव्युं छे, पांजरापोळमां लालबाग जैन उपाश्रयवाळी विशाळ जग्या संघने आपेली छे, पशुओने माटे पांजरापोळनी विशाळ जग्या पण धर्मादा आपेली छे अने अनेक जग्याए धर्मशाळाओ बंधावेली छे, एवा ए अत्यन्त दयाळु शेठ मोतीशानी गाडी कोइने फांसीनी सजा थइने फांसी देवाती होय ते रस्ते आवी पडे तो तेनी फांसीनी सजा सरकार तरफथी रद करवामां आवती हती एटलुं बधुं गवर्नमेन्ट सरकारमां तेमनुं मान हतुं, ते मोतीशा शेठे आलीशान गगनचुम्बी विशाळ बंधावेला जैनमन्दिरना दर्शन करवा भायखले गयो हतो, त्यां शेठ मोतीशाना जैनमन्दिरमां दर्शन करी बहारना मंडपमां बांधेला शत्रुंजयना पटनी यात्रा करी पूज्य पंन्यासजी महाराज श्रीऋद्धिमुनिजी

तथा पंन्यासजी श्रीकेसरमुनिजी आदि ७ ठाणा पाछा कच्छी वीसा ओसवालनी वाडीए पधार्या हता त्यारे मारवाडी शेठ जीताजी खुमाजी तरफथी प्रभावना करवामां आवी हती। पछी कार्तिक वदी २ ने दिवसे पंन्यासजी महाराज पायधुनी उपर आवेला महावीर जैनमन्दिरने उपाश्रये पधार्या हता अने मागसर सुदी ३ ना दिवसे पोताना परमगुरु जैनाचार्य श्रीजिनयशःसूरिजीनी जयन्ती ठाठमाठथी उजवी हती तेना समाचार मुंबई समाचारना ता. २२-१२-१९३६ ना अंकमां नीचे मुजब छपाया हता।

शासन प्रभावक जैनाचार्य श्रीजिनयशःसूरीश्वरजीनी मुंबईमां उजवायेली जयन्ती। मुंबईमां पायधुनी उपर आवेला श्रीमहावीर जैनमन्दिरनी पाछळना उपाश्रयमां मागसर सुदी ३ ना रोज जैनाचार्य श्रीजिनयशःसूरिजीनी जयन्ती पंन्यासजी श्रीऋद्धिमुनिजीना प्रमुखपणामां उजववामां आवी हती ते प्रसंगे श्रीयुत बुद्धिमुनिजी श्रीगुलाबमुनिजी तथा श्रीदर्शनमुनिजी आदि मुनिवरो तथा जैनोनो सारो समुदाय हाजर हतो, शरुआतमां प्रमुखश्रीए मंगलाचरण करी सूरिजीना जीवनसंबंधी टुंक विवेचन कर्युं हतुं त्यारबाद श्रीबुद्धिमुनिजीए जणाव्युं के पूज्य आचार्यश्रीनो जन्म सं. १९१२ मां जोधपुर शहेरमां सांड गोत्रीय ओसवालने घेर थयो हतो, पितानुं नाम पूनमचन्दजी अने मातानुं नाम मांगीबाई हतुं। श्रीमोहनलालजी महाराजे तेओने सं. १९४० मां जोधपुरमां ज दीक्षा आपी हती, तेओए टुंक वखतमां सारो अभ्यास करी लेवार्थी गुरु महाराजे तेओने

दीक्षा लीधा बाद त्रीजा वर्षथी ज जूदा जूदा स्थळे चोमासां करवानी रजा आपी हती । अमदावादमां सं. १९५६ मां पंन्यासजी श्रीदयाविमलजीए तेओने योगोद्वहन करावी पंन्यास पदवी आपी हती । तेओश्रीना उपदेशथी उपधान उजमणा दीक्षामहोत्सवो वगेरे धार्मिक कार्यो घणां थयां हतां, सं. १९५८ मां श्रीहर्षमुनिजीने मुंबईमां अने सं. १९६६ मां श्रीगुमानमुनिजी श्रीऋद्धिमुनिजी तथा श्रीकेशरमुनिजीने लश्करग्वालीयरमां पंन्यास पदवी आपी हती अने श्रीरत्नमुनिजी तथा श्रीभावमुनिजीने गणी पदवी आपी हती । पछी तेओए कानपुर तथा बनारस थइने श्रीसमेतशिखरजीनी यात्रा करी कलकत्ते थइने मुर्शिदाबाद पधारी बालुचर तथा अजीमगंजमां चोमासां कर्यां हतां, त्यां जगतशेठ आदि जैन संघे ठाठमाठथी तेओने आचार्य पदवी आपी हती । पछी त्यांथी विहार करी छेल्लुं चोमासुं तेमणे पावापुरीतीर्थमां कर्युं हतुं, त्यां ५३ उपवासनी कठिन तपस्या करी हती अने सं. १९७० ना मागसर सुदी ३ नी मध्यरात्रिए समाधि पूर्वक स्वर्गवासी थया हता । तेओश्री बहु ज विनीत हता, गुरु महाराजश्रीनी आज्ञा तेओए अखंडित पाळी हती, गृहस्थपणामां पण तेओए ५१ उपवास कर्या हता वगेरे तेओना उत्तम गुणो प्राप्त करवा आपणे पण प्रयत्न करवो जोइये । अन्तमां यतिवर्य श्रीरावतमलजीना टुंक विवचन बाद मेळावडो विसर्जन थयो हतो ।

पंन्यासजी महाराज ज्यारे पायधुनी उपरना खरतरगच्छना उपाश्रयमां बिराजता हता त्यारे स्थानकवासी समाजना 'जैन-

प्रकाश ' नामना पेपरमां संतबाल मुनि श्रीसौभाग्यचन्दजीना श्रीहरिभद्रसूरिजी श्रीहेमचन्द्राचार्यजी आदि समर्थ श्वेताम्बराचार्योनी निन्दा करनारा लेखो आववा लाग्या, ते लेखो लइने शा. रतिलाल भीखाभाईए मुंबईमां ते वखते विराजता साधुओने लालबागमां तथा गोडीजीमां जइने वांची संभळाव्या अने संतबालने जवाब आपवानी आपे तस्दी लेवी जोइये एम पण जणाव्युं, त्यारे जवाब मळ्यो के एवा हठीला ढूंढकोनी साथे माथाफोड करवा कोइ नवरो नथी । तेथी निराश थइने एक दिवसे ते रतिलालभाई पंन्यासजी श्रीऋद्धिमुनिजी पासे आवी चड्या अने संतबालजीना लेखो संबंधी वात करी ते संबंधमां घटतुं करवामाटे करेली विनतिनो लालबाग तथा गोडीजीमां विराजता साधुओए आपेलो जवाब पण कही संभळाव्यो । ते वखते पंन्यासजीनी तबीयत नरम रहेती हती छतां संतबालजी साथे चर्चा करवानी पोते तैयारी बतावी अने नीचे मुजबनी संतबालने चेलेंज आपी ते कार्यनी शरुआत करी ।

श्रीसंतबालजीने सूचना ।

जैन आगमोमां मूर्तिपूजानुं विधान आवे छे ते बाबत शास्त्रना पाठो बतलावी मूर्तिपूजा सिद्ध करी आपवा हुं तैयार छुं. माटे आपने जणाववानुं के हालमां आप मुंबई पधार्या छो । तो मारी आ चेलेंज स्वीकारीने मूर्तिपूजाना वादविवाद माटे मुंबईना मध्यवर्ती स्थल माधवबागमां आप जे दिवसे जे टाइमे पधारी शको एम हो ते पत्र लखीने जणावशो जेथी ते बाबतनी घटती तैयारी करवामां आवे । दा. पं. ऋद्धिमुनि । ठि.

पायधुनी महावीर जैन मन्दिरनो उपाश्रय। ता- १३-१-१९३६।

उपरनी चर्चा मुंबई समाचार तथा सांजवर्तमान पेपर द्वारा दोढेक मास चाल्या बाद श्रीसंतबालजीने तथा तेमना गुरु श्रीनानचन्द्रजीने मुंबईना तेमना संप्रदायना आगेवानोए चर्चा बंध करवानी विनति करवाथी तेमज स्थानकवासी तथा मूर्तिपूजक संप्रदायना आगेवानोए पंन्यासजी महाराज श्रीऋद्धिमुनिजीने पण चर्चा बंध करवानी विनति करवाथी चर्चा बंध करवामां आवी हती। त्यार बाद श्रीयुत रतिलाल भीखाभाई शाहे १९३८ ना जून मासमां सांजवर्तमानमां तथा जैन पत्रमां श्रीमूर्तिपूजा पुराणना हेडिंग नीचे श्रीसंतबालजीने जवाब आप्यो हतो तेमां जादुइ मूर्तिपूजा अने असली मूर्तिपूजा संबंधी स्पष्ट रीते घणुं विवेचन कर्युं हतुं।

· त्यार बाद पायधुनीथी विहार करी लालवाडी अने दादर थइने पंन्यासजी महाराज कूरले पधार्या, त्यां लालवाडीना जैनमन्दिरना महेताजीने शेठ मेघजीभाई सोजपाळे मोकलीने जणाव्युं जे आवतुं चोमासुं करवा आप लालवाडी पधारशो एवी मारी विनति छे। महाराजजीए जवाब आप्यो के तमारी भावनानो अमे विचार करीशुं हाल तो घाटकोपर जइये छीये, घाटकोपर गया पछी हमेशा पंन्यासजीनुं व्याख्यान चालतुं हतुं तेनो लाभ त्यांना कच्छी गुजराती वगेरे जैन भाईयोए सारा प्रमाणमां लीधो हतो। पछी शेठ मेघजीभाईना अत्यन्त आग्रहथी घाटकोपरथी विहार करी लालवाडी पधार्या अने सं. १९९२ नुं चुम्मालीसमुं चोमासुं पंन्यासजी महाराजे

लालवाडीं (मुंबई) मां कर्युं ।

लालवाडीना उपाश्रयमां असाड सुदी ११ ना दिवसे दादा साहेब श्रीजिनदत्तसूरिजीनी जयन्ती पंन्यासजी महाराजना प्रमुखपणामां उजववामां आवी हती, ते प्रसंगे महाराजजीना वैष्णवभक्त शेठ महादेवजी पोद्दार मारवाडी तरफथी मोदकनी प्रभावना करवामां आवी हती तथा लालवाडीना मारवाडी समाज तरफथी पूजा भणावी आंगी रचावी गायन मंडली बोलावीने रात्रे भावना बेसाडी हती। आ चोमासामां बे भाद्रवा होवाथी पंन्यासजी महाराजे पोताना गच्छनी परंपरानुसार पोते खरतरगच्छ अने अंचलगच्छवाळाओनी साथे पहेला भाद्र-वामां पर्युषणपर्वनुं आराधन कर्युं हतुं। त्यारबाद तपागच्छना पर्युषणनी आराधना करावबा माटे दादरना आगेवानोए महा-राजश्रीने विनति करी, ते वखते महाराजश्रीनी तबीयत लीवरना दर्दथी नरम रहेती हती तेथी पोताना शिष्य गुलाब-मुनिने दादर मोकल्या. तेमणे दादरमां १२ दिवस सुधी रोकाइने त्यांना जैन भाईयोने शान्तिपूर्वक पर्युषणपर्वनी आरा-धना करावी तेमां माहीम माटूंगा वगेरे नजीकना पराना बीजा भाईयोए पण भाग लीधो हतो। गुलाबमुनिना दादर गया पछी लालवाडीना तपागच्छवाळाओए पंन्यासजीने जणाव्युं जे हवे अमने पर्युषणपर्वनी आराधना करावो, त्यारे पंन्यासजीए जणाव्युं के मारी तबीयत नरम रहे छे ते तो तमे जुओ छो, तमे पेलां बोल्या नहि अने दादरवाळा आवीने गुलाबमुनिने लइ गया छतां तमारो आग्रह छे तो हुं तमने पर्युषणनां व्याख्यानो

संभळावीश । एम कहीने पोताना शरीरमां अशक्ति हती छतां मारवाडीभाईयोने आठे दिवस व्याख्यान संभळाव्युं हतुं ।

आ चोमासाना चारे महिना पंन्यासजी महाराजनी तबीयत नरम रहेली तेथी त्यांना धर्मीष्ठ शेठ मेघजीभाई जेओ हमेशा ४ वागे उठीने शुद्ध थइ पोताना मकानमां घरमन्दिर जेवो एक रुम काढीने तेमां श्रीपार्श्वनाथ भगवाननो सुन्दर फोटो तथा चिन्तामणियंत्र वगेरे हमेशा दर्शन करवा राख्यां छे, तेनी सन्मुख बेसी आठ वाग्या सुधी नवकारमंत्रनो जाप करी हमेशा एकासणुं करे छे तेमणे भक्तिपूर्वक चारे महिना डोक्टर वैद्य अने दवाईमां पोतानो पुष्कळ पैसो वापरी घणुं पुण्य बांध्युं हतुं । तेओनी धर्मप्रवृत्ति जोइने त्यांना बीजा कच्छीभाइयो पण धर्मप्रवृत्तिमां जोडाया छे । चोमासुं पुरुं थवा आव्युं तेवामां पोताना गुरुभाई पंन्यासजी श्रीकेशरमुनिजी पोताना परिवार साथे पायधुनी उपर आवेला श्रीमहावीर जैनमन्दिरनी पाछळना उपाश्रयमां चोमासुं रहेला हता, तेओ ज्ञानपंचमीनो उपवास करी सं. १९९३ ना कार्तिक सुदी ६ ना रोज पारणुं कर्या बाद गोचरी करीने वातचित करतां करतां एकदम हार्टफेल थइ जवाथी बपोरना बे वागे स्वर्गवासी थइ गया, ते समाचार टेलीफोनथी लालवाडी आव्या, पंन्यासजी महाराजने ते दिवसे चोविहारो छठ्ठ हतो दिवस टुंको हतो अने अधुरामां पुरुं ते टाइमे मुंबईमां सख्त कोमी हुल्लड चाली रह्युं हतुं, हिन्दु अने मुसलमानो एक बीजानी साथे उन्दर बिलाडीनी अथवा वाघ बकरीनी रमत रमी रह्या हता, तेमांथी बचीने पायधुनी जवाय एवो

कोई पण रस्तो हतो नहि छतां पोलीसोने साथे राखी तुरत विहार करी जाननुं जोखम वेठीने पण पायधुनी पहोंची गया अने स्वर्गवासी गुरुभाईनी पाछळ करवा योग्य दरेक कार्यो पोते अग्रेसर थइने कराव्यां तथा तेओना शिष्य श्रीबुद्धिमुनिजी वगेरेने खरा टाइमे दिलासो आप्यो। बीजे दिवसे स्वर्गस्थ पंन्यासजीना मृत देहने अग्नि संस्कार करायो त्यारे पंन्यासजी महाराजना उपदेशथी कवराडावाळा शेठ जीताजी खुमाजी तरफथी रु. १००० जीवदया मंडलने आपवामां आव्या तथा शेठ मेघजीभाई सोजपाळ अने शेठ माणेकलाल मनसुखभाई तरफथी एकावन एकावन रु. ना जीवो छोडाव्या हता। त्यार बाद पंन्यासजी महाराज श्रीऋद्धिमुनिजीना उपदेशथी टीप करीने श्रीमहावीरस्वामीने देरे अठ्ठाइ महोत्सव तथा शान्तिस्नात्र थयां हतां, ते टीपमां पण शेठ मेघजीभाई तथा शेठ माणेकलालभाई तरफथी एकावन एकावन रु. भरवामां आव्या हता।

त्यार बाद जयपूर निवासी श्रावक नथमलजी दीक्षाना अभिलाषी होई श्रीबुद्धिमुनिजी पासे अभ्यास करी रह्या हता तेने दीक्षा आपवाने दिवसे, पंन्यासजी महाराजना उपदेशथी शेठ मेघजीभाई सोजपाळ तरफथी दीक्षानो कुल खर्च आपवा उपरांत दीक्षा निमित्ते सुन्दर वरघोडो काढवामां आव्यो हतो अने आदीश्वरजीनी धर्मशाळामां पंन्यासजी महाराजना वरद हस्ते ते मुमुक्षुने दीक्षा आपी श्रीबुद्धिमुनिजीना शिष्य तरीके नन्दनमुनि नाम राखवामां आव्युं हतुं। त्यार बाद महामासमां

पायधुनीथी विहार करी महाराज साहेब दादर पधार्या, त्यां उपाश्रयनुं साधन न होवाथी राव साहेब शेठ रवजीभाई सोजपाळ जे० पी० ना आग्रहथी शेठ पालणभाई सोजपाळनी चालीमां उतर्या । ते वखते व्याख्यानमां तेमज दिवसना बीजा टाइममां पण शेठ रवजीभाईना आखा कुटुम्बने पंन्यासजी महाराजना संसर्गथी धर्मनो उपदेश मळवा लाग्यो, ते वखते शेठ रवजीभाईये पंन्यासजी महाराजने दादरमां चोमासुं करवानी विनंति करतां जणाव्युं जे आप जो अत्रे चोमासुं करवानी कृपा करशो तो अत्रेना जैन भाईयोने अनेक प्रकारनो लाभ तो मळशे ज परन्तु अहींना मारवाडी भाईयोए शिखरबन्ध मन्दिर तैयार करावीने श्रीशान्तिनाथप्रभुने १०–११ वर्षथी परोणा तरीके ज बेसाडी राख्या छे, केटलीक वखत प्रतिष्ठानां मुहूर्तो कढाव्यां खरां परन्तु मांहोमांहेना कांइक मतभेदोने लीधे हजी सुधी प्रतिष्ठा करावी शक्या नथी, तेथी ते लोकोने आपश्रीनो सतत उपदेश मळे अने ते उपदेशना प्रतापे तेओनो जे कंइ मतभेद होय ते टळी जइ प्रतिष्ठानुं कार्य थइ जाय तो ते बहु मोटो लाभ थशे । पंन्यासजी श्रीऋद्धिमुनिजीए शेठ रवजीभाईने कह्युं के तमारी ए बधी वात तो खरी परन्तु अत्रे उपाश्रयनो ज अभाव होवाथी अमे अथवा बीजा कोई पण साधुओ चोमासुं शी रीते रही शके । त्यारे शेठ रवजीभाई बोल्या के आपने रहेवा लायक स्थान तथा व्याख्यान माटेना होलनी सगवड थइ जशे, त्यारे पंन्यासजीए जणाव्युं जे जो तेवी सगवड थइ जशे तो खास करीने आ प्रतिष्ठानुं कार्य

पार पडाववा माटे अमने अत्रे चोमासुं करवामां कांइ पण हरकत नथी। त्यार बाद दादरथी विहार करी माहीम थइने सान्टाक्रूझमां भावनगरवाळा शेठ अमरचन्द जशराजना सुपुत्रो शेठ क्षान्तिलालभाई तथा भानुचन्द्रभाईना आग्रहथी तेमने बंगले महाराजश्री पधार्या, त्यां बे दिवस रोकाइ राधनपुरवाळा शेठ गिरधरलाल त्रिकमलालनी विनतिथी तेमने बंगले पधारी व्याख्यान चालु कर्युं, तेमां त्यांना आगेवानोने उद्देशीने महाराजश्रीए जणाव्युं के भाईयो तमारामांना केटलाएक तो पूर्वे करेला पुण्यना उदयथी द्रव्य प्राप्त करी पोतपोताना वाडी बंगला बंधावीने अत्रे वसो छो, ए रीते पोताने माटे तथा पोताना कुटुम्बने माटे तो पोते एकलाए वाडी बंगला बंधाववानी उदारता अथवा हिम्मत करी छतां तमे बधा भेगा मळीने पण जैन भाईयोने माटे धर्मकरणी करवानां एक जैन मन्दिर अने बीजो जैन उपाश्रय ए बे साधनो हजी सुधी करी शक्या नथी ते बहु विचारवानी वात छे। महाराजश्रीना एवा प्रकारना उपदेशथी त्यांना श्रावकोने तात्कालिक असर थवाथी उपरोक्त बन्ने कार्यो माटे अगाउ टीप थइने अटकी पडेली तेनुं काम उत्साह लावीने आगळ चलाव्युं, तेमां पंन्यासजी श्रीऋद्धिमुनिजीना उपदेशथी शेठ गिरधरलालभाईये उदारताथी रु. ५०० भरी आप्या, त्यार पछी महाराजश्री विहार करी गया तेमनी पाछळ सान्ताक्रूझना श्रावकोए पोताना उत्साहने पण विहार करावी दीधो होय एम जणाय छे कारण के ए वातने त्रण वर्ष लगभग समय वीति गया छतां ते बन्ने कार्योनो हजी

सुधी प्रारंभ थयो जणातो नथी । सान्ताक्रूझमां शेठ शान्ति-लालभाई तरफथी सत्तरभेदी पूजा भणावी श्रीफळनी प्रभावना करवामां आवी हती । पछी त्यांथी विहार करीने महाराजश्री वीलेपारले पधार्या त्यां सागरशाखाना उत्तम क्रियापात्र श्रीरवि-सागरजीना शिष्य शान्तमूर्ति श्रीसुखसागरजीना विद्वान पट्टधर, सेंकडो पुस्तकोना लेखक तथा खरतर गच्छीय परमयोगी अध्यात्मप्रेमी श्रीमद्देवचन्द्रजीना गुणानुरागी, अने ते महात्माना रचेला अनेक आध्यात्मिक ग्रन्थोने अत्यन्त परिश्रम वेठी प्रगट करावी सस्ती किंमते फेलावो करावनार, योगनिष्ठ जैनाचार्य श्रीबुद्धिसागरसूरिजीना सदुपदेशथी मेसाणावाळा शेठ घेलाभाई करमचन्द खांडवाळाए बंधावेला अने मरुधर देशोद्धारक श्रीविजयललितसूरिजीने हाथे खुल्लुं मुकावेला जैन सेनेटरीयममां उतर्या । ए सेनेटरीयममां जैनोने सस्ते भाडेथी रहेवाने माटे रुम तथा दरेक प्रकारनी सगवड मळे छे तथा त्यां पुस्तकालयनी स्थापना करेली होवाथी वांचननो लाभ पण मळे छे । भावनगरवाळा धर्मप्रेमी शेठ झवेरचन्द भाईचन्दना सुपुत्रो शेठ अनुपचन्दभाई तथा चीमनलालभाईना आग्रहथी महाराजश्री त्यां दस दिवस रोकाया अने व्याख्यान संभळाव्युं, शेठ अनुपचन्दभाई तरफथी एक दिवसे नवपद्जीनी पूजा भणाववामां आवी हती । त्यांथी विहार करी महाराज साहेब अंधेरी पधार्या । अंधेरीमां जैन मन्दिर तथा उपाश्रयनी सगवड मुंबई शहेरना महोपकारी गुरुवर्य श्रीमोहन-लालजी महाराज साहेबना उपदेशथी घणां वर्षोथी थयेली छे,

ते उपाश्रयमां पंन्यासजीए व्याख्यान शरु कर्युं तेनो लाभ सर्वे जैन भाईयो लेवा लाग्या। अंधेरीमां कोई कारणथी कच्छी भाईयोमां घणा वखतथी कुसंप चालतो हतो तेमज मारवाडी साथमां पण बे तड पडेलां हतां, अंधेरीना जैनोनी एवी स्थिति जाणीने पंन्यासजी महाराज व्याख्यानमां खास करीने परस्परना संपथी केवां उत्तम कामो थइ शके छे तेमज कुसंपथी दरेक कामो केवां बगडी जाय छे ते बाबत दृष्टान्तो दइ दइने संपनी महत्ता वर्णववा लाग्या। केटलेक दिवसे महाराजजीना व्याख्याननी असर थइ तेथी कच्छीभाईयोमां आगेवान गणाता शेठ लालजीभाई तथा देवराजभाईए पोताना कच्छी समाजने एकत्र करीने जणाव्युं जे आपणा पुण्योदयथी पूज्य पंन्यासजी महाराज अत्रे पधारेला छे, तेओ आपणामां रहेला कुसंपने जाणीने संप कराववा माटे खरी लागणीथी दररोज आपणने उपदेश आपी रह्या छे, माटे अमे बन्ने आपणा कच्छी समाजने जणावीये छीये के आपणामांना गमे तेनी गमे ते नानी के मोटी कसूर थयेली होय ते अमे अमारे माथे लइये छीये अने ते बदल आप बधा भाईयो जे कहो ते दंड आपवा तैयार छीये परन्तु हवे गमे तेम करीने आपणा समाजमां संप थवो ज जोईये। एवी रीतनी नम्रता भरेली वाणी सांभळीने बधा भाईयोना दिल साफ थइ गयां अने संप थइ गयो, कच्छी समाजमां संप थइ गयेलो जाणीने मारवाडी साथना मन पण कुणां थयां तेथी तेओमांना आगेवान शेठ वनेचन्दजी मुकादम, शेठ सागरमलजी तथा शेठ मूलतान-

मलजीना प्रयासथी मारवाडी समाजमां पण संपनुं साम्राज्य थइ गयुं । त्यार बाद महाराज साहेबे विहार करवानी वात काढी एटले अंधेरीना सर्वे भाईयोए जणाव्युं जे हवे चैत्र महिनानी शाश्वती आयंबीलनी ओळी नजीक आवी छे माटे कृपा करीने अमने ओळीपर्वनी आराधना कराववा माटे आप अत्रे ज स्थिरता करो एवी अमारी विनति छे, तेथी महाराजजीए रहेवानुं कबूल कर्युं । पछी मारवाडी साथमांथी शेठ सागरमलजी फौजमलजीनी धर्मपत्नी श्रीमती पेपीबाई तरफथी नवपदजीनी ओळी करवा माटेनी आमंत्रण पत्रिका काढवामां आवी हती तेथी आसपासना पराना केटलाक भाईयो पण ओळी करवा अंधेरी पधार्या हता । ओळी करवावाळाने माटे तथा छुटक आयंबील करवावाळाने माटे उत्तम प्रकारनी सगवड करवामां आवी हती, नवे दिवस जूदा जूदा गृहस्थो तरफथी विविध प्रकारनी पूजाओ भणावी प्रभावना कराती हती, चैत्र सुदी १३ ने रोज आसन्नोपकारी चरम तीर्थंकर श्रीमहावीर प्रभुनी जयन्ती उजववामां आवी हती, चैत्री पूनमना रोज मुंबईना सोनाचांदी बजारवाळा भाईयोमांथी एक श्रावके मोटरबसमां परानो संघ काढेलो ते संघे अंधेरीमां नवाणुं प्रकारी पूजा घणा ठाठथी भणावीने संघजमण कर्युं हतुं तेमां लगभग ५००० माणसो जम्यां हतां, संघनी सेवा करवामां अंधेरीना मारवाडी साथना मुकादम शेठ चनेचन्दजी वगेरेए भाग लईने दरेक प्रकारनी सगवड करी आपी हती । त्यार बाद पंन्यासजी महाराज विहार करीने मलाड पधार्या त्यां दानवीर

शेठ देवकरण, मूळजीना जमाइ शा० मनसुखलाल ताराचन्द तथा शेठ रणछोडभाई अने मारवाडी साथवाळाए एकत्र थइने सामैयुं करी शेठ देवकरणभाईनी वाडीने उपाश्रये उतार्या, थोडा दिवस बाद मलाडगामना शेठ केसरीमलजी गणेशमलजी विनति करीने पोताने बंगले पंन्यासजी महाराजने लइ गया अने नवपदजीनी पूजा भणावी व्याख्यान वंचाव्युं तथा श्रीफळनी प्रभावना करी, ते वखते गामना मारवाडी संघे तथा गुजराती संघे थोडा दिवस रोकाइने व्याख्याननो लाभ आपवानी महाराजजीने विनति करी, त्यारे महाराजजीए जणाव्युं के आ तमारा मलाडमां ज्यारे मन्दिर के उपाश्रयनुं साधन न हतुं त्यारे जगत्पूज्य श्रीमोहनलालजी महाराजे शेठ देवकरणभाईने उपदेश करीने जैनमन्दिर तथा उपाश्रयनी सगवड करावी आपी छे तेथी तमने सर्वने धर्मकरणी करवानो लाभ मळे छे, ते उपगारी गुरु महाराजनी स्वर्गारोहण तिथि चैत्र वद १२ नजीक आवे छे ते प्रसंगे गुरुमहाराजनी जयन्ती ठाठमाठथी उजववानो तमारो भाव होय तो अमे रोकावानो विचार करीये, ते सांभळीने ते ज वखते व्याख्यानमां हाजर रहेला मारवाडी संघना आगेवानोए जणाव्युं जे आपनी अत्रे हाजरी हशे तो अमारा परम उपकारी गुरुमहाराजनी जयन्ती घणा ठाठमाठ अने उत्साहथी उजवीशुं । ए प्रमाणेना तेमना आग्रहथी महाराजजी मलाडमां रोकाया अने चैत्र वद १२ ना रोज पंन्यासजी महाराज श्रीऋद्धिमुनिजीना प्रमुखपणा नीचे श्रीमोहनलालजी महाराज साहेबनी जयन्ती सारी रीते उजववामां आवी हती,

ते समये घाटकोपरवाळा मास्तर मावजी दामजी शाहे थोडा ज वखतमां लखीने तैयार करेली अने झवेरी मूलचन्द हीराचन्द भगते छपावीने बहार पाडेली *" मुनि श्रीमोहनलालजी "* नामनी चोपडी वहेंचवामां आवी हती, जयन्ती प्रसंगनी आमंत्रण पत्रिका बहार पाडेली होवाथी पराना तेमज मुंबईना पण केटलाक भाईयो जयन्ती प्रसंगे मलाड पधार्या हता, ते दिवसे मलाडना मारवाडी समाज तरफथी पूजा प्रभावना तथा संघजमण थयां हतां। त्यार बाद त्यांथी विहार करी गोरे-गाम थइ पाछा वळतां अंधेरी पारला वगेरे थइने दादर पधारी शेठ पालण सोजपाळनी चालीमां उतर्या, त्यां राव साहेब शेठ रवजीभाई सोजपाळ जे० पी० ना सुपुत्र शेठ रामजीभाईये आवीने पंन्यासजी महाराजने जणाव्युं के बापाजी आबूजीनी यात्राए गया छे त्यांथी आजेज तेमनो पत्र आव्यो छे तेमां लखे छे के पंन्यासजी महाराज दादर पधारे त्यारे आग्रह करीने चोमासुं करवा रोकजो हुं थोडा दिवसमां आवी पहोंचीश। महा-राजजीए जणाव्युं के तमारो भाव सारो छे परन्तु अहीं उपाश्रय नथी तेनुं शुं, पछी ४–५ दिवस रोकाइने मुंबईमां पायधुनी उपर आवेला श्रीमहावीर जैन मन्दिरनी पाछळना उपाश्रये पधार्या, ते समये मुंबईना खरतरगच्छीय आगेवानोए आ चोमासुं श्रीमहावीर जैनमन्दिरना उपाश्रयमां करवानी विनती करी, एटलामां दादरथी शेठ रामजीभाई आव्या अने जणाव्युं जे आबूजीथी अमारा पिताश्री तार द्वारा जणावे छे के उपाश्रय वगेरेनी सगवड करावी पंन्यासजीने चोमासुं करवा रोको हुं

पालीताणानी यात्रा करीने जल्दी आवुं छुं। उपरांत रामजी-भाई बोल्या के आ चोमासुं आप दादर करशो तो दादरना मारवाडीसाथने आपनो उपदेश मळवाथी तेओमां थोडो कुसंप छे ते दूर थइ जशे अने मोटुं काम प्रतिष्ठानुं केटला वर्षथी अटकी रहेलुं छे ते पार पडी जशे माटे दादरमां चोमासुं करवानी कृपा करो। एवो तेमनो आग्रह तथा लाभनुं कारण जाणीने असाड सुदी ११ ना रोज दादा साहेब श्रीजिनदत्त सूरिजीनी जयन्ती मुंबईमां उजव्या बाद पोताना शिष्य श्रीगुलाबमुनिने मुंबई राखी पोते बे ठाणाथी दादर चोमासुं करवा पधार्या। दादरमां असाड सुदी १५ ना रोज पंन्यासजी महाराजना उपदेशथी दादरना संघ तरफथी श्रीवर्धमान तप आयंबील खातुं खोलवामां आव्युं ते राणीगामवाळा शेठ जेरूपचन्दजी तथा शेठ छजमलजी वगेरेना प्रयासथी उत्तरोत्तर तरक्कीपर आवतुं जाय छे। त्यार पछी महाराज साहेबना उपदेशथी दादर जैन मित्रमंडळनी स्थापना करवामां आवी, हालमां दादरमां जैन भाईयोनी वस्ती सारा प्रमाणमां होवा छतां जैन बालक बालिकाओने धार्मिक शिक्षण मेळववानुं कांइ पण साधन हतुं नहि, तेथी दादर जैन मित्र मंडळे प्रयास करीने विजयादशमी जेवा शुभ दिवसे शेठ रवजीभाई सोजपाळने शुभ हस्ते जैन पाठशाळा खूल्ली मुकावी तेमां मूर्ति-पूजक संप्रदायना दरेक साथना बालक बालिकाओ हाल सुधी जैनधर्मनुं शिक्षण लइ रह्यां छे, जैन मित्र मंडळना मेंबरो पैकी श्रीयुत बेचरभाई वेणीलाल संघवी, दलीचन्दभाई, दीपचन्द-

भाई अने मणिलालभाई वगेरे जैन पाठशाळानी उन्नति माटे सारो प्रयत्न करी रह्या छे । राव साहिब शेठ रवजीभाई सोजपाळनो अत्यन्त आग्रह थवाथी दादरमां साधु मुनिराजनुं आ प्रथम ज चोमासुं थयुं होवाथी पराना घणा भाईयो पर्युषण करवा पधार्या हता, तेमां एक मारवाडीभाईए मासक्षपण कर्युं हतुं अने मलाडथी आवेला शेठ देवकरण मूळजीना जमाइ शेठ मनसुखलाले अट्ठाइनी तपस्या करी हती ते सिवाय नानी तपस्या घणी थइ हती । माहीम माटुंगा वांद्रा सान्ताक्रूझ पारला अन्धेरी तथा लालवाडीना घणाभाईयोए दादरमां कल्पसूत्रनुं व्याख्यान सांभळ्युं हतुं अने प्रतिक्रमणादि धर्मक्रिया करी हती । ए रीते सं० १९९३ नुं पीस्तालीसमुं चोमासुं पंन्यासजी महाराजे दादर (मुंबई) मां कर्युं । आ चोमासामां पूज्य पंन्यासजी श्रीऋद्धिमुनिजीना उपदेश अने संसर्गथी हमेशा सेंकडो बीडी पीनार अने व्रत पचखाणथी दूर भागनार शेठ रवजीभाई बीडीनो सर्वथा त्याग करीने हमेशा पोरसी चोवीसणुं करवा लाग्या, शेठनी धर्मप्रवृत्तिनी असर शेठना वडील पुत्र श्रीयुत रामजीभाईने थवाथी रात्रिभोजन तथा कन्दमूलादि अभक्ष्य वस्तुनो त्याग करी हमेशा जिनपूजा अने चोविहार करवा लाग्या, ए रीते शेठजीना आखा कुटुम्बमां देवदर्शन पूजा सामायिकादि धर्मक्रिया, नवकारसी पोरसी तिविहार चोविहार वगेरे व्रत पचखाणनो आदर तथा रात्रिभोजन अने कन्दमूलादि अभक्ष्य भक्षणनो अनादर थवा लाग्यो छे । वळी शेठ रवजीभाई तथा शेठ रामजीभाई दयाळुदिलवाळा होइ

पोताना सहवासमां आवी चढेला मददना अभिलाषीने पोताने रसोडे जमाडी बनती मदद कर्या विना रहेता नथी । कार्तिकी पूनमे दादरना संघ सहित गाजते वाजते पंन्यासजी महाराज माहिम पधार्या, त्यां जैन मन्दिरना तथा श्रीशत्रुंजयतीर्थना पटना दर्शन करी पाछा दादर पधारी श्रीवर्धमान तप आयंबील खाताना मकानमां मुकाम करीने मंगलिक संभळाव्युं ते वखते शेठ नानकजी रायचन्दजीनी पेढीना मालिक शेठ जेरूपचन्दजी तरफथी मोदकनी प्रभावना करवामां आवी हती अने बपोरे पूजा भणाववामां आवी हती । पछी दादरथी विहार करी पंन्यासजी महाराज मुंबई पायधुनी उपर श्रीमहावीर जैनमन्दिरने उपाश्रये पधार्या अने मागसर सुदी ३ ना रोज गोडीजीना उपाश्रयमां चालती कन्याशाळानी बालिकाओनी परीक्षा लइ बालिकाओने इनाम वहेंचाव्युं हतुं । थोडा दिवस बाद दादरना जैन मन्दिरना कार्यवाहकोना हुकमथी मन्दिरना महेताजी मंगळदास त्रिकमदास झवेरीये आवीने महाराजजीने जणाव्युं के आगरतडना आगेवानो दादरना जैनमन्दिरनी प्रतिष्ठा करावश तैयार थया छे, ते संबंधी दरेक कार्यमां आप साहेबनी हाजरीनी तेमज सलाहनी जरूरत होवाथी मने विनति करवा मोकल्यो छे माटे कृपा करीने आप दादर पधारो अने प्रतिष्ठानुं कार्य पार पडावी आपो, तेथी महाराजजी कच्छी वीसानी वाडी भायखला अने लालवाडी मुकाम करीने दादर पधार्या, त्यारे आगरतडना आगेवानोए भेगा थइने प्रतिष्ठा कराववानो निश्चय करी पंन्यासजी महाराजने जणाव्युं के, प्रतिष्ठा माटेनुं

सारामां सारुं मुहूर्त कढावी आपो, त्यारे पंन्यासजीए सारा ज्योतिषीने बोलावीने सं. १९९४ ना वैशाख सुदी ६ नुं मुहूर्त कढावी आप्युं, ते मुहूर्त पोताने दरेक रीते अनुकूळ छे एम शेठ मेघजीभाई सोजपाळनी हाजरीमां जाहेर करी आगरतडना आगेवानोए वधावी लीधुं, त्यार बाद आगरतडना आगेवानोने भेगा करी महाराजश्रीए जणाव्युं जे तमोए काम तो मोटुं उपाड्युं छे माटे हवे काममां ढीलाश राखवी नहि पालवे, दरेक कामनो निकाल करवा मांडो, प्रतिष्ठाना दिवसो नजीक आवता जाय छे माटे सौथी पहेलां प्रतिष्ठाने अंगे थनारा खर्चने पहोंची वळवा टीपनी शरुआत करो। त्यार पछी आगरतडना आगेवानोनी मीटींगो मळवा लागी, दरेक मीटींग रातना मळती अने उजागरा करी करीने कांइ पण संगीन काम कर्या वगर सौ विखराइ जता हता, ते वात पंन्यासजीए जाण्या बाद आगरतडना आगेवान मुकादमने बोलावीने महाराजश्रीए जणाव्युं के तमोए रातना टाइमे केटलीक मीटींगो भरी खरी पण हजी सुधी कांइ संगीन काम थयुं नथी माटे हवे दिवसना टाइमे मारी हाजरीमां मीटींग भरी सर्वेने बोलावो। मुकादमे महाराजश्रीना कहेवा मुजब मीटींग भरी ते वखते पंन्यासजी महाराजे असरकारक उपदेश आपीने बधाने समजाव्युं के आजे तमारे आंगणे एक मोटामां मोटो सुन्दर अवसर आव्यो छे ते अवसर तमे बधा सलाह संपथी पोतपोताथी बनी शके ते प्रमाणे एकबीजाने मदद करी तन मन अने धनथी उजवशो तो तमारी शोभा वधशे, तेथी आ कार्यमां खर्च करवा माटे

सौथी पहेलां सारा पाया उपर एक टीप भरवानुं आजे ज शरु करो, महाराजजीना आग्रहथी तरत ज टीपनी शरुआत करी तेमां पंन्यासजी महाराजना उपदेशथी एक्के तडाके अडधा कलाकमां रु. ६००० भराई गया अने छेवट जतां ते टीपमां रु. १३००० भराया हता । पछी पंन्यासजीए जणाव्युं के टीपनुं काम चालू राखी प्रतिष्ठाने अंगेना दरेक कार्यो माटे जूदी जूदी कमीटी नीमी दरेक कार्य शरु करी दो हुं थोडा दिवस घाटकोपर अने ठाणे फरी आवुं। एम कहीने विहार करी कुरला थइने चीमोड आव्या, त्यां मारवाडी तथा कच्छी भाई-योना १५ घर धर्मनी लागणीवाळा छे तेओना आग्रहथी १५ दिवसनी स्थिरता करी, दररोज सवारना अने बपोरना व्याख्यान सांभळवा दरेक भाईयो उत्साहथी आवता हता । देवदर्शन माटे हमेशा कुरला अथवा घाटकोपर जवुं पडतुं हतुं, चीमोडना हवा पाणी सारां छे तेमज साधुसंत उपर भक्ति धरावनार बीदडावाळा देशी डॉक्टर शा. रतनशीभाई घणा अनुभवी होइ साधु महाराजनी सेवा सारी करे छे । पंन्यासजी महाराज चीमोडमां हता त्यारे स्थानकवासी लघु शतावधानी संतवाल श्रीसौभाग्यचन्द्रजी पण त्यां हता तेओ मौन-पणुं धारण करीने हमेशा पंन्यासजी महाराज पासे आवता अने घणो विनय देखाडता । पंन्यासजीए तेओने कहेलुं के तमे विद्वान तर्कबुद्धिवाला अने शतावधानी थइने मारी चेलेंज स्वीकार्या छतां चर्चाना मेदानमां तो आव्या ज नहि, तमे चर्चामां उतर्या होत तो जैन सूत्रोमां मूर्तिपूजा छे के नहि ते

बाबतनी माहिती सारी आलमने मळी शकते, अमे तो तमने चर्चामां भाग लेवाडवा घणो प्रयत्न कर्यो छतां तमे "नाचवुं नहि तेनुं आंगणुं वांकुं" ए कहेवत मुजब कंइ ने कंइ बहानुं काढी चर्चामां उतर्या ज नहि वगेरे प्रेमपूर्वक घणी वातो संभळावता ते बधी वात सांभळता खरा पण कांइ जवाब आपता नहि । पछी चीमोडथी विहार करी घाटकोपर महाराजजी पधार्या अने व्याख्यान चालु कर्युं तेमां दरेक जैनो भाग लेवा लाग्या, ते अरसामां काशीवाळा विद्वान यति श्रीहीराचन्द्रजी घाटकोपर आवेला तेमणे महाराजजीनी आज्ञाथी व्याख्यान दर्म्यान असरकारक एक भाषण आप्युं हतुं, त्यार बाद थाणा तरफथी विहार करीने श्रीविजयरामचन्द्रसूरिजीना शिष्य श्रीधर्मविजयजी आदि साधुओ घाटकोपर पधार्या अने पंन्यासजीनी आज्ञा मागीने ते ज उपाश्रयमां उतर्या, बीजे दिवसे पंन्यासजीए श्रीधर्मविजयजीने व्याख्यान वांचवानुं जणावतां तेमणे व्याख्यान वांच्युं हतुं, १० दिवस सुधी साथे रहेवानुं थयुं ते दर्म्यान तेओनी साथे प्रभु महावीरना ६ कल्याणक, व्याख्यान समये मुहपत्ति बांधवानी प्रवृत्ति, उपधाननी माळानी उपज कया खातामां जाय, चौद स्वप्ननी उपज कया खातामां जाय अने सोसायटीपक्षना श्रावको सोसायटीनी वाह वाह करनारा साधुओ सिवायना बीजा साधुओने वांदता नथी तेमज आहारपाणी वहोराववामां संकोचवृत्ति धारण करे छे वगेरे बाबतोनी चर्चा चालती हती, पंन्यासजीए दरेक बाबतना खुलासा शास्त्रना पाठ सहित करवानुं जणावेलुं परन्तु

ते प्रमाणे खुलासा नहि करतां तेमणे जणावेलुं के जे श्रावको जे साधुना रागी होय ते साधुना कहेला वचनने ज आगमनुं वचन मानीने, ते वचन शास्त्रने अनुकूल छे के प्रतिकूल ते बाबतनी तपास कर्या वगर ते श्रावको ते वचनने शास्त्रथी विरुद्ध जाहेर करनार साधुना द्वेषी थइ जाय छे तेथी परम्पराए साधुओमां तथा श्रावकोमां छिन्नभिन्नता वधती जाय छे। त्यार पछी पंन्यासजी महाराज घाटकोपरथी विहार करी भांडुप थइने मुलुंद पधार्या, त्यां शेठ झवेरभाई रामजी तथा भावनगरवाळा शेठ अमरचन्द घेलाभाई गांधी तरफथी जैनमन्दिर बंधावेलुं छे तेनी नजीकमां आवेला नानकडा उपाश्रयमां उतर्या। मुलुंदमां कच्छी अने काठियावाडी जैन भाइयोना आसरे ६० घर छे, उपाश्रयना कबाटोमां पुस्तकोनो सारो संग्रह करीने राखेलो छे, त्यां रहेता बूकसेलर मेघजी हीरजीनी भाणेज श्रीमती राणबेने सारो अभ्यास करेलो होवाथी पोते मुलुंदनी बाइयोने हृदयनी लागणी अने खंतथी धार्मिक शिक्षण आपे छे तेनो लाभ आसरे ५०—६० बेनो लइ रही छे। मुलुंदना जैन-मन्दिर तथा उपाश्रयनो वहीवट शेठ हरगोविन्ददास रामजी भाईना हाथमां छे, तेओ संस्कृत प्राकृत गुजराती बंगाली अने मराठी भाषाना सारा अभ्यासी, ज्योतिषशास्त्रमां सारा प्रवीण अने ज्ञानना रसीया होइ दरेक भाषाना उत्तमोत्तम पुस्तकोनो सारो संग्रह तेओए पोताना घरमां राखेलो छे, हालमां तेओ मुलुंदथी माटूंगे रहेवा गया छे। मुलुंदमां उपा-श्रयने लगती घणी जमीन खुल्ली पडी रहेली छे, मुलुंदनी जैन

वस्तीना प्रमाणमां उपाश्रय घणो ज नानो पडे छे छतां न.मालूम शा कारणथी तेओ उपाश्रयने मोटो सारी सगवडवाळो करावी शके एम होवा छतां तेओना ध्यानमां ए वात उतरती नथी। पछी त्यांथी विहार करी महाराज साहेब ठाणे पधार्या, ठाणामां जैन भाईयोना आसरे १०० घर छे, पूर्वे हृदयना उल्लासथी नवपदजीनी सर्व श्रेष्ठ आराधना करवाथी नवमे भवे मोक्ष मेळवनार श्रीपाल महाराजने पगले पगले सांपडती अनेक प्रकारनी ऋद्धिने जोइने तेवी ऋद्धि प्राप्त करवा माटे तेना जेवुं पुण्यकार्य करवाने बदले, श्रीपाल महाराजनी उपर अत्यन्त ईर्ष्या धारण करनार धवलशेठे रत्नद्वीपथी पोतानी साथे वहाणमां मुसाफरी करता श्रीपाल महाराजने विश्वासघात करी समुद्रमां पाडी नांख्या हता, परन्तु समुद्रमां पडतां ज नवपदजीनुं एकाग्र चित्ते स्मरण करनार श्रीपाल महाराजने प्राप्त थयेली जलतरणी औषधीना प्रभावे तेओ मोटा मगरमच्छनी पीठ पर बेसी कोंकणदेशमां आवेला आ ठाणा नगरनी समीपे समुद्रथी बहार नीकळ्या हता, तेओने लागेला थाकथी समुद्रने कांठे आवेला चम्पकवृक्षनी छायामां आराम करतां करतां निद्रा आवी गई, घणो टाइम थइ गयो छतां पण तेमना पुण्यप्रभावथी वृक्षनी छाया जेमनी तेम तेमना उपर स्थिर थइने रही हती। ज्यारे श्रीपाल महाराज जाग्या त्यारे ठाणा नगरना वसु नामना राजाए पोताने निमित्तियाए कहेला वचनानुसार पोताना खास विश्वासु माणसोने एक उत्तम अश्वरत्नने लइ समुद्रने कांठे श्रीपाल महाराजनी

पासे मोकलेला हता तेओने पोतानी नजीकमां आवीने उभेला जोया । ते सुभटोए श्रीपाल महाराजने घणी नम्रताथी जणाव्युं जे आ अश्वरत्न आपने माटे तैयार छे माटे आप एना उपर बेसी शहेरमां पधारो अहींना राजाना हुकमथी अमे आपने तेडवा आव्या छीये, एवुं तेमनुं कथन सांभळीने श्रीपाल महाराजे अश्वारूढ थइने शहेर तरफ प्रयाण कर्युं, ते समाचार दूते जल्दी जइने राजाने आप्या एटले वसुराजाए घणा उत्साह अने ठाठमाठथी श्रीपाल महाराजने नगर प्रवेश करावी सारा मुहूर्ते पोतानी मदनमंजरी नामनी राजकन्या परणावीने पोताना राजदरबारमां स्थगीधर करीने स्थाप्या । थोडा वखत पछी पेलो लोभी धवलशेठ पण ठाणा बन्दरे आवी पहोंच्यो अने भेटणुं लइने राजदरबारमां आवी राजानी आगळ भेटणुं धर्युं, त्यां बेठेला श्रीपाल महाराजने जोइने अने तेओ आ राजानी सुन्दर कन्याने परण्या छे ते वात जाणीने धवलशेठनी ईर्ष्याग्निमां घी होमायुं एटले ईर्ष्याग्निए जोर पकडयुं । पछी धवलशेठे ते ईर्ष्याग्निने शान्त करवा माटे डूम्बजातिना केटलाक लोकोने लालच आपी श्रीपाल महाराजने डूम्बपणानुं कलंक अपाव्युं, परन्तु श्रीपाल महाराजाए पोताना भुजबळथी पोतानुं उत्तम कुळ साबीत करी बताव्युं त्यारे राजाए पेला डूम्बोने तथा तेओने लालच आपी उंधे रस्ते चढावनार धवलशेठने शिक्षा करवानो विचार कर्यो, तथापि श्रीपाल महाराजे दया लावीने तेओने छोडाव्या अने पोतानी उपर धवलशेठे करेला अपकारने भूली जइ उपकारने याद करी धवलशेठने

पोतानी पासे राख्यो। श्रीपाल महाराज तो धवलशेठनी साथे प्रेमपूर्वक वर्तन करवा लाग्या परन्तु नाममात्रथी धवल अने हृदयथी अत्यन्त मलिन धवलशेठ तो रात दिन श्रीपाल महाराजनो घाट घडवाना विचारोमां ज मश्गूल हतो, तेमां तेने बीजो कोई उपाय नहि जडवाथी छेवटे महेलने सातमे माळे ज्यां श्रीपाल महाराज सुता हता त्यां जाते जइने मारी नांखवानो विचार कर्यो, अने एक दिवसे अडधी रातने समये हाथमां कटारी लइने महेलने पाछले भागेथी पाटलाघोना आधारे धीमे धीमे महेल उपर चढतो हतो, ते वखते तेना करेलां पापो परिपक्व थइ उदयमां आवी जवाथी पेली पाटलाघो भींतेथी छटकी गइ, परिणामे पाटलाघोनी साथे पोते नीचे पडतां पोतानी ज कटारी पोताने वागी जवाथी तत्काळ धवलशेठना राम रमी गया अने मरीने सातमी नरके पहोंच्यो, ते ज आ ठाणा नगर छे।

एवा अति प्राचीन आ ठाणा नगरमां सं. १९५२ नी सालमां मुंबई नगरीना परमोपकारी परमपूज्य श्रीमोहनलालजी महाराज पधारेला, त्यारे ठाणाना संघे घणा ठाठमाठथी आठ दिवसनो महोत्सव करेलो अने ते परमपुरुषना वरद हस्ते ठाणाना जैनमन्दिरने पेले माळे श्रीआदीश्वर भगवाननी प्रतिष्ठा करावी हती, तेमज बीजे माळे केसरीयानाथजी तरीके प्रसिद्ध श्रीआदीश्वर भगवाननी प्रतिष्ठा पण पूज्य श्रीमोहनलालजी महाराज साहेबना वरद हस्ते ज सं. १९६२ मां धामधूमथी ठाणाना संघे करावेली छे, त्यारथी ठाणाना जैन संघनी दरेक रीते

उत्तरोत्तर आबादी थती आवेली जणाय छे।

ए ठाणा नगरमां वीसमी सदीमां स्थानकवासी सम्प्रदायमांथी एकीसाथे १९ साधुना समुदायथी नीकळीने मूर्तिपूजक सम्प्रदायमां प्रवेश करी स्थानकवासी समाजने सज्जड फटको लगावनार, वीसमी सदीना महान् जैनाचार्य श्रीविजयानन्दसूरि महाराजना रेलविहारी शिष्य न्यायरत्न विद्यासागर श्रीशान्तिविजयजीए, बार वर्ष सुधी रहीने ठाणाना जैनोने धर्मोपदेश आपी नवपदजी तथा श्रीपाळ महाराजाना प्रसंगोने उद्देशीने ठाणा नगरने प्राचीन तीर्थ तरीकेनी प्रसिद्धिमां लाववा माटे, नवपदजीना मंडलवाळुं तथा श्रीपाळ महाराजाना प्रसंगो ने दर्शावतुं नवुं जैनमन्दिर कराववा माटे तनतोड प्रयास करीने जमीन लेवडावी कामनो प्रारंभ कराव्यो हतो। केटलुंक काम थया पछी ठाणाना जैन भाईयोमां कोइ नजीवी बाबतने अंगे मतभेद उभो थवाथी बार वर्षथी ते काम झोलां खातुं हतुं, एवामां सं० १९९४ ना महा महिनामां पंन्यासजी महाराज श्रीऋद्धिमुनिजी मुम्बईथी विहार करी नासिक जवा माटे ठाणामां पधार्या अने व्याख्यान चालु कर्युं ते सांभळवा ठाणाना जैन भाईयो सारी संख्यामां आववा लाग्या। थोडा दिवस बाद महाराजजीए नासिक तरफ विहार करवानो विचार जणाव्यो, त्यारे ठाणाना संघे जणाव्युं के साहेब! अत्रे अमारा जैन भाईयोमां तड पडेलां छे तेथी करीने आ नवा मन्दिरनुं काम बार बार वर्षथी अटकी पडीने हवा खाया करे छे, माटे आप साहेब अत्रे स्थिरता करीने अमारो कुसंप दूर करावी आ

देरासर पुरुं करावबानो प्रयत्न करो एवी अमारी नम्र विनति छे। तेओनी विनति उपरथी लाभनुं कारण जाणीने विहार करवानो विचार बन्ध राखी व्याख्यानमां संप संबंधी अनेक दृष्टान्तो आपी महाराज साहेब संपनी महत्ता जणाववा लाग्या, अने ठाणामां तड पडवानुं खरुं कारण जाणी लइने बन्ने तडना अग्रेसरोने एकबीजाथी अलग पोतानी पासे बोलावीने खूब समजाववा लाग्या, परिणामे आगेवानोनां दिल साफ थवा लाग्यां अने सुलेह संप करवा माटे बन्ने पक्षो भेगा थइ वाटाघाट करवा लाग्या। ए अरसामां दादरना संघना आगेवानो पंन्यासजी श्रीऋद्धिमुनिजी महाराजने दादरना जैन मन्दिरनी प्रतिष्ठा उपर दादर पधारवानी विनति करवा ठाणे आव्या, ते प्रसंगे ठाणाना बन्ने तडना आगेवानोए विचार करीने व्याख्यानमां जाहेर कर्युं के अमारा ठाणामां पोतानो पगदंडो जमावीने धर्मनां कार्योमां अनेक विघ्नो उभा करनार कुसंपने, पूज्य पंन्यासजी महाराजना उपदेशथी जेम बने तेम जल्दी हवे अहींथी देशवटो देवानो अमारो विचार थयो छे। अमारा बन्ने तडनी हकीकत जाणी लइने न्याय करवा माटे कोई त्रीजा पक्षनी जरुरीयात होवाथी आ तके आवी चढेला दादरना संघना आगेवानो अत्रे मोजूद छे तेओ अमारी तकरारनो अंत लावी संप करावी आपे एवी अमारी भावना छे। ठाणाना संघनी ए दरखास्त उपर ध्यान देवानुं पंन्यासजी महाराजे सूचन करवाथी दादरना पंच तरफथी आवेला शा. फौजमलजी तथा शा. वीरचन्दजी वगेरेए बन्ने तडवाळा भाईयोने कह्युं के तमे बन्ने पक्षना आगे-

वानो अमोने लखी आपो तो अमे आ काममां वचमां पडीने निकाल लावीए। त्यारे ठाणाना बन्ने तडना आगेवानोए लखी आप्युं के अत्रे पधारेला दादरना पंचना आगेवानो लवाद तरीके जे चुकादो आपे ते अमारे बन्ने पक्षवाळाने कबूल मंजूर छे। ए प्रमाणे लखी तो आप्युं परन्तु पाछळथी बन्ने पक्षवाळाना दिलमां शंका आवी के दादरना आगेवानोने आपणे लवाद बनाव्या तो खरा पण तेओ आपणी उपर दंडनो मोटो बोजो मुक्या वगर रहेशे नहि, तेथी करीने लवाद तरीके नीमायला शा. फौजमलजी तथा शा. वीरचन्दजीए बेउ पक्षनी तकरारो सांभळवा अने चुकादो आपवा घणो प्रयास कर्यो परन्तु बेउ तडना आगेवानोए सहकार ज आप्यो नहि, तेथी छेवटे कंटाळीने दादरना आगेवानो पोताने घेर चाल्या गया अने पंन्यासजी महाराज पण पोताने पांच उपवासनी तपस्यानो त्रीजो उपवास हतो छतां विहार करीने मुलुंद चाली गया। उपरनी बधी हकीकत ठाणाना जैनेतरोमां पण प्रसरी गयेली होवाथी ठाणाना जैनेतरोमां जैनोना कुसंपनी वात घणी चर्चाणी, तेथी ठाणाना जैन आगेवानोने वजनदार गणाता केटलाक जैनेतरोए घणो ठपको आप्यो, तेथी ठाणाना बेउ पक्षना आगेवानो तुरत भेगा थया अने परस्पर सलाह करी ते ज राते ठाणाना ७५ माणसोए मुलुंद जइने पंन्यासजी महाराजने जणाव्युं जे आपने तपस्या चाले छे तेनो त्रीजो उपवास हतो छतां आप विहार करी चाल्या आव्या, परन्तु अमारी नम्र अरज छे के आप पाछा ठाणे पधारो आपनी तपस्यानुं

पारणुं तो ठाणामां ज थवुं जोइये । महाराज साहेबे ठाणाना बधा भाईयोने दिल खोलीने खुल्लेखुल्लुं जणावी दीधुं के ज्यां सुधी तमे ठाणाना बन्ने पक्षो सलाह संप करी एकत्र थाओ नहि त्यां सुधी कोई पण हिसाबे ठाणे आववानी मारी मरजी नथी । त्यार बाद बधा भाईयो पाछा ठाणे गया अने मोडुं थइ गयुं हतुं छतां राते ने राते ठाणानो संघ भेगो थयो अने नक्की विचार करी सवारमां पाछा ठाणाना घणा भाईयो मुलुंद आव्या अने महाराज साहेबने जणाव्युं जे आप जेम कहेशो तेम करवाने अमे बधा कबूल करीये छीये माटे आप कृपा करीने जरुर ठाणे पधारो । त्यारे महाराजजीए कह्युं के जो तमारो एवो खरेखरो निश्चय होय तो तेनी खातरी माटे तमे बन्ने पक्षना आगेवानो अहीं साथे बेसी भोजन करो तो मने तमारी वात साची लागे, तेथी १०–११ वर्षथी तकरारने लइने जेओ कोइ पण प्रसंगे साथे बेसी जमता न हता तेओ पोतानी हठ छोडीने मुलुंदमां साथे बेसी जम्या अने संपनो पायो नांख्यो । पछी महाराजजी मुलुंदथी विहार करी पाछा ठाणे पधार्या त्यारे त्यांना संघे वाजते गाजते प्रवेश कराव्यो । महाराजश्रीनी देशना सांभळी प्रभावना लइ महाराज साहेबना पुनरागमनथी सर्वे खुश थता थता पोताने घेर गया पछी पांच उपवासनुं पारणुं सुखशान्तिथी महाराजजीए कर्युं । ठाणाना संघमां संप थवाना समाचार ता. ९–३–१९३८ बुधवारना मुंबई समाचारमां नीचे मुजबना छपाया हता ।

वयोवृद्ध तपस्वी पंन्यासजी श्रीऋद्धिमुनिजी महाराजे ठाणाना जैनसंघमां वार वर्षे करावेलो संप ।

ते प्रसंगे दादरना आगरतडना आगेवानोए लवाद तरीके बजावेली सेवा ।

परिणामे ठाणाना जैन संघमां प्रवर्तेलो आनन्द ।

दादरना जैन मन्दिरनी प्रतिष्ठानुं काम घणा वखतथी अटकी पडेलुं ते माटे अत्यत प्रयास करी प्रतिष्ठानुं मुहूर्त सं. १९९४ ना वैशाख सुद ६ नुं कढावी आपी प्रतिष्ठाना कार्यनो प्रारंभ करावीने पंन्यासजी महाराज श्रीऋद्धिमुनिजी नासिक जवा माटे विहार करता करता ठाणे पधार्या अने त्यांना संघना आग्रहथी ठाणामां रोकाया हता, ते वखते दादरना जैनमन्दिरना वहीवटदारोनुं एक डेप्युटेशन दादरनी प्रतिष्ठा प्रसंगे पंन्यासजी महाराजने दादर पधारवानी विनति करवा ठाणे गयुं हतुं । तेओनी विनति स्वीकारीने महाराज साहेबे तेओने जणाव्युं के तमे दादरना मारवाडीसाथना आगेवानो आजे अहीं आवी चढेला छो तो आजनो दिवस अहीं रोकाइने अहींना संघमां वे तड पडेलां छे ते बन्ने तडना वांधाओ समजी लइने योग्य चुकादो आपी बन्ने पक्षने एकत्र करी आपवानो प्रयत्न करो । ठाणाना बन्ने तडना आगेवानोए पण महाराज साहेबना वचनने शिरोमान्य गणी दादरथी आवेला

शेठ फौजमलजी तथा शेठ वीरचन्दजीने लवाद तरीके स्वीकारी तेओ जे फेंसलो आपे ते स्वीकारी लेवानुं कबूल करी सही करी आपी । ते दिवसे आखी रातनो उजागरो करी लवाद तरीके निमायेला बन्ने शेठोए बन्ने पक्षनी परस्परनी फरीयादो सांभळीने सवारना चार वागे फेंसलो तैयार करी लखीने पंन्यासजी महाराजने सोंपीने तेओ दादर रवाना थइ गया । आजे व्याख्याननें टाइमे महाराजश्री फेंसलो संभळाववाना होवाथी ठाणाना संघनां लगभग सर्व माणसो हाजर थयां हतां, ते वखते महाराजश्रीए फेंसलो वांची सुणाव्यो । ते सांभळीने सकळ संघ खुशी थइने बन्ने तडना भाईयोने योग्य इन्साफ आपनार लवादोनो तथा अगाउ बन्ने तडने एकत्र करवाना अनेक प्रयत्न थयेला ते निष्फळ गयेला छतां आ वखते प्रभावशाळी पंन्यासजी महाराजे घणो प्रयास करी बन्ने तडने एकत्र करावी आप्यां ते बदल पंन्यासजी महाराजनो उपकार मान्यो तथा ते बाबतनी खुशालीना प्रदर्शन निमित्ते श्रीफळनी प्रभावना करवामां आवी हती । ए पंन्यासजी महाराजे गयुं चोमासुं दादरमां रहीने त्यां जैन पाठशाळा, जैन मित्र मंडळ तथा वर्धमान तप आयंबील खातुं शरु करावेल छे, ते त्रणे संस्था आज पर्यन्त उत्तरोत्तर प्रगति करी रहेल छे अने दादरनो श्रीसंघ पंन्यासजी महाराजे करेला उपकारने हजी पण याद कर्या करे छे ।

त्यार बाद फागण सुदी ११ ने रोज ठाणेथी विहार करीने घाटकोपर मुकाम करी बीजे दिवसे दादरमां ससत्कार प्रवेश

कर्यो ते हकीकत मुंबई समाचारमां ता. १४-३-१९३८ ना अंकमां नीचे मुजब प्रगट थइ हती ।

पंन्यासजी महाराज श्रीऋद्धिमुनिजीनी दादरमां थयेली पधरामणी ।

दादरना संघे ते प्रसंगे करेलुं सुन्दर स्वागत ।

फागण सुदी १२ ना रोज सवारमां ८॥ वागे पंन्यासजी महाराज श्रीऋद्धिमुनिजी आदि ठाणां ४ पधारवाना समाचार अगाउथी जाहेर थयेला होवाथी, जैन पाठशाळाना बालक बालिकाओ तथा संघना भाई बहेनो देरासरनी आगळ बांधेला व्याख्यान मंडपमां हाजर थइने बधा साथे मळी पंन्यासजी महाराजनी सामे जता हता, त्यारे तिलकब्रीज उपर महाराजजी सामे मळ्या, त्यां तेओश्रीने वन्दन करीने विविध रंग-रंगित प्रसंगोचित चित्रविचित्र वस्त्रोथी विभूषित तेमज अनेक-विध अलंकारोथी अलंकृत बेनोए सुमधुर कंठथी स्वागत गीत गावानुं शरु कर्युं, त्यार बाद पंन्यासजी महाराज साहेबनी साथे सकळ संघ जैनमन्दिरे पधार्यो त्यां हाजर रहेला श्रावक श्राविकाना समुदाये श्रीशान्तिनाथ प्रभुनी जय बोलावी पंन्यासजी महाराजने वधाव्या, पछी श्रीशान्तिनाथ प्रभुना दर्शन करी व्याख्यान मंडपमां पधारी महाराजश्रीए मंगलिक संभळाव्युं त्यार पछी प्रभावना लइ सहुए विदाय लीधी हती ।

त्यार पछी चैत्र सुदी १३ ना रोज दादरना जैन मित्र मंडळ तरफथी पंन्यासजी महाराजनी अध्यक्षतामां श्रीमहा-

वीर जयन्ती उजववामां आवी हती । ते प्रसंगे प्रारंभमां जैन पाठशाळाना बालकोए अने बालिकाओए मास्तर मावजी दामजी शाह तथा मास्तर विजयचन्द मोहनलाल शाह रचित स्तुतिओ वाजिंत्रो सहित गाइ संभळावी हती, त्यार बाद दादरनी जैन पाठशाळाना मास्तर विजयचन्द मोहनलाल शाहे पोते रचेली श्रीमहावीर स्तुति गाइ संभळावी हती, तदनन्तर काशीनिवासी जैनशास्त्रज्ञ विद्वान स्वर्गस्थ मंडलाचार्य श्रीबालचन्द्राचार्यजीना विद्वान प्रशिष्य प्रसिद्धवक्ता विद्यालंकार यतिवर्य श्रीहीराचन्दजीए श्रीमहावीरप्रभुना अनेक गुणो उपर विवेचन करी ते गुणो प्राप्त करवा माटे प्रयास करवानुं सभाजनोने जणाव्युं हतुं । त्यार पछी जैनोनी अनेक संस्थामां आत्मभोग आपनार, अनेक गहन ग्रन्थो उपर सुन्दर विवेचन लखनार तेमज स्वतंत्र पुस्तको रचनार सोलीसीटर श्रीयुत मोतीचन्दभाई कापडीयाए श्रीमहावीर अने गौतम संबंधी एक दृष्टान्त आपी जैनोनी विशाळ भावना उपर विस्तृत विवेचन करी, आजना जैनोनी संकुचित भावनाथी प्राप्त थयेली शक्तिहीनताने लइने आपणाथी जैनशासननुं कोइ पण महत्कार्य थइ शकतुं नथी ते बाबत आबेहूब वर्णवी हती । त्यार पछी धरमपुरराज्यना राजकवि भोगीलालभाईए पोतानी शीघ्रकवित्वशक्तिना प्रतापे 'महावीर' ए चार अक्षरोने अनुलक्षीने करेला कवितामय भाषणथी आखी सभा मुग्ध थइ गइ हती, श्रोताजनोना आग्रहथी कवि भोगीलालभाईना प्रसंगोचित कवितामय बीजां भाषणे टाइम वधु लेवाथी मोडुं थइ जवाथी छेवटे प्रमुख

श्रीए श्रीमहावीर जीवन पर टूंक विवेचन करी दादरना श्रीसंघने आंगणे आवी पहोंचेला प्रतिष्ठा जेवा महत्कार्यमां सर्वेने यथाशक्ति तन मन अने धनथी सहायक थवानी सूचना करी हती, तेमज दादरना जैनमन्दिरना मेहताजी मंगळदास त्रिकमदास झवेरीये प्रतिष्ठानी कार्यवाही संबंधी केटलीक वीना जणाव्या बाद सभानी समाप्ति करवामां आवी हती ।

दादरना जैन मन्दिरनो थयेलो भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव ।

त्यार बाद पंन्यासजी महाराजना अत्यन्त परिश्रम अने सतत उपदेशथी दादरना संघे करवा धारेली जैनमन्दिरनी प्रतिष्ठाना दिवसो नजीक आवी पहोंच्या । दादरमां स्टेशनथी पांच मिनिटना रस्ता उपर सुन्दर बजार अने विशाळ चोगाननी सन्मुख आवेला शिखरबंध जैनमन्दिरमां चैत्र वदी १३ थी प्रतिष्ठा महोत्सवनी शरुआत करवामां आवी । उंची नीची जग्या होवाथी पाटीयां गोठवीने सुन्दर बेठक बनावी ते उपर मोटो मंडप बांधी तेने अनेक प्रकारे शणगारी चित्रविचित्र रंगवाळी इलेक्ट्रीक लाइटथी मनोहर बनाव्यो हतो । प्रतिष्ठा प्रसंगे जूदा जूदा आकर्षक चार वरघोडा सोना चांदीना रथो सहित काढवामां आव्या हता । आगरतडना संघ तरफथी बे अने लाठारावाळा शेठ फूआजी भीखाजी छत्रीवाळा तरफथी एक मळी त्रण संघजमण करवामां आव्यां हतां । प्रतिष्ठाने छेल्ले दिवसे आकाशमांथी विमानद्वारा पुष्पवृष्टि कराववामां

आवी हती अने अष्टोत्तरी स्नात्र भणाववामां आव्युं हतुं प्रतिष्ठा प्रसंगे थयेली उपजमां मुख्य उपज नीचे मुजब थयेली हती ।

२५०१—मूलनायक श्रीशान्तिनाथप्रभुने गादी पर बिराजमान करवाना शेठ नेनमलजी सरूपजी जूनी परेलवाळाना ।

१६०१—माळ उपरना गभारामां मूलनायक श्रीशान्तिनाथप्रभुने गादीपर बिराजमान करवाना शेठ रवजीभाई सोजपाळ जे. पी. तथा शेठ पालणभाई सोजपाळ दादरवाळाना ।

१५०१—श्रीशान्तिनाथप्रभुना शिखर उपर इंडु चढाववाना शेठ गुलाबचन्दजी केसरीमलजी दादरवाळाना ।

२८५१—श्रीशान्तिनाथप्रभुना शिखर उपर धजा चढाववाना शेठ भगाजी रामाजी नायगामवाळाना ।

११७५—श्रीशान्तिनाथप्रभुना शिखर उपर दंड चढाववाना शेठ फोजमलजी कस्तूरचन्दजी परेलवाळाना ।

१८०१—डावी बाजुना शिखर उपर धजा चढाववाना शेठ मोहनलालजी हेमराजजी दादरवाळाना ।

११०१—जमणी बाजुना शिखर उपर धजा चढाववाना शेठ जीवराजजी उदेराजजी पोयबावडीवाळाना ।

७७५—मूलगभारामां श्रीशामळा पार्श्वनाथप्रभुने गादी पर बिराजमान करवाना शेठ मादाजी जीताजी पोय-

वावडीवाळाना ।

७५१—मूलगभारामां श्रीपार्श्वनाथप्रभुने गादी पर विराजमान करवाना शेठ ताराचन्दजी तिलोकचन्दजी भोयवाडीवाळाना ।

६५१—डाबी बाजुना शिखर उपर दंड चढाववाना शेठ भगवानजी थानाजी भोयवाडीवाळाना ।

६५१—जमणी बाजुना शिखर उपर दंड चढाववाना शेठ चांदमलजी धूलाजी पोयवावडीवाळाना ।

६५१—डाबी बाजुना शिखर उपर इंडु चढाववाना शेठ पूनमचन्दजी हजारीमलजी पोयवावडीवाळाना ।

पंन्यासजी महाराजे गयुं चोमासुं दादरमां रही करेला सदुपदेशना प्रतापे प्रतिष्ठाना दिवसोमां निकळेला वरघोडामां तथा संघजमणमां स्वयंसेवकोए बजावेली सेवाथी, तेमज दादरथी ठेठ लालबाडी सुधीना मारवाडी अने कच्छीभाईयोए वरघोडाने दिवसे पोतपोतानी दुकानो बंध राखी वरघोडामां भाग लेवाथी दादरना संघनुं संगठन तथा सेवाभावना प्रत्यक्ष देखाइ आवतां हतां । त्यार बाद वैशाख सुदी १२ ने दिवसे दादरथी विहार करीने राव साहेब शेठ रवजीभाई सोजपाळना अत्याग्रहथी माटूंगामां किंग्सर्कलरोड उपर आवेला नवा तैयार करावेला तेमना शान्तिनिकेतनमां पंन्यासजी महाराज श्रीऋद्धिमुनिजी पधार्या, ते वखते शेठ रवजीभाईये पोताना शान्तिनिकेतननी अगासीमां जैनमन्दिर माटे तथा जैन उपाश्रय माटे बे होल तैयार करावेला हता तेमांना एक होलमां धातुना प्रतिमाजीनी

पधरामणी करी पूजा भणावी हती। त्यार पछी शेठ रवजी-भाईये आ चोमासुं माटूंगामां रहेवानी विनति करी त्यारे पंन्यासजी महाराजे जणाव्युं जे ठाणाना संघनो घणा वखतथी चोमासुं करावबानो आग्रह छे तेथी हाल कांइ नकी कही शकाय नहि, त्यारे शेठ रवजीभाईये कह्युं के ठाणावाला आपश्रीने विनति करवा अत्रे आवशे त्यारनी वात त्यारे हाल तो आप अहीं ज स्थिरता करो, तेथी महाराजजी त्यां रोकाया हता। पछी थोडा दिवसमां मलाडथी सुरतवाळा श्रीयुत बालु-भाई झवेरी माटूंगे आव्या अने महाराजजीने जणाव्युं के हालमां अमे मलाड रहीये छीये, त्यां अमारो नवो बंगलो तैयार थयो छे तेमां गृहमन्दिर तैयार करावेलुं छे तेमां धातुना प्रतिमाजी पधरावबाना छे, ते प्रसंगे कृपा करीने आप मलाड पधारो एवी मारी विनति छे। तेओए खरा भावथी करेली विनतिने महा-राजजीए स्वीकारी तेथी तेओ खुशी थइने पोताने मुकामे गया। पछी बीजे दिवसे माटूंगेथी विहार करी कुरला तथा अंधेरी थइने पंन्यासजी महाराज मलाड पधार्या, शेठ बालुभाईये वैशाख वदी ६ ने दिवसे सवारे शुभ मुहूर्ते प्रभुप्रतिमाजीनो प्रवेश कराव्यो अने बपोरे नवाणुं प्रकारी पूजा भणावी हती। पूजा भणाववा माटे सुप्रसिद्ध गवैया माणसुखभाईने बोलावेला होवाथी श्रोताओने खूब आनन्द आव्यो हतो, सांजना स्वामि-वत्सलनुं जमण करीने शेठ बालुभाईये स्वामिभाईयोनी भक्ति करी हती। त्यार बाद पंन्यासजी महाराज पुनः माटूंगे पधार्या ते वखते शेठ रवजीभाईये पोताना शान्तिनिकेतनमां चोमासुं

कराववानी बधी सगवड करी राखी हती। एटलामां तो पंन्यासजी महाराजने ठाणे चोमासुं करवानी विनति करवा ठाणानो संघ आवी पहोंच्यो, तेणे खूब आग्रह करीने पंन्यासजी महाराजने जणाव्युं जे आपे अत्यन्त प्रयत्न करी अमारा संघमां पडेला तडनुं संधाण करीने एक मोटुं काम तो करी आप्युं छे, हवे वार वर्षथी अधुरा पडी रहेला नवपदजी महाराजना मंडल युक्त श्रीपाल महाराजाना प्रसंगोने प्रदर्शित करनारा नूतन जैन मन्दिरने सांगोपांग तैयार करावी प्रतिष्ठा कराववानुं बीजुं जे मोटुं काम बाकी रह्युं छे ते काम पुरुं कराववा माटे आपने खास ठाणे चोमासुं करवानी आवश्यकता छे, माटे कृपा करीने अमारी विनति स्वीकारी आप ठाणे पधारो। त्यारे पंन्यासजीए जवाब आप्यो के में तो माटुंगामां चोमासुं रहेवानी शेठ रवजीभाईनी विनति स्वीकारी लीधी छे, एटले हवे ए वात मारा हाथमां रही नथी तेथी तमे तमारी बधी हकीकत शेठ रवजीभाईने तथा तेमनी धर्मपत्नी श्रीमती कंकुबेनने जणावो, तेओने गळे जो तमारी वात उतरे तो तमारी विनति सफळ थवानो संभव छे। पंन्यासजी महाराजनुं कहेवुं सांभळीने पोतानी आशा अर्धी फलित थयेली होवाथी ठाणेथी आवेला बधा भाईयो उमंगभेर शेठ रवजीभाई पासे गया अने जणाव्युं जे शेठ साहेब! आ माटुंगा तो एवुं स्थळ छे के आप ज्यारे धारशो त्यारे जैन साधुनुं चोमासुं करावी शकशो, परन्तु अमारा ठाणाथी आप कांइ अजाण तो नथी ज, अमे तो अमारा वेपार धंधामां ज रच्या पच्या रहेनारा छीए, छतां अमारा कोई पूर्व पुण्यना उदये अमोए विनति

कर्या वगर ज पूज्य पंन्यासजी श्रीऋद्धिमुनिजी ठाणे पधार्या, एम तो कंइक वखत दक्षिण तरफ जता आवता मुनिराजोनुं आवागमन अमारा ठाणामां थया करे छे परन्तु तेओनो मुकाम विहारनी विश्रांति लेवा पूरतो ज ठाणामां थतो होइने कोई पण मुनिराज अमारुं आकर्षण करी शक्या नथी, अने आ पंन्यासजी महाराजे तो अमारे त्यां स्थिरता करी सदुपदेश आपी अमने धर्मने रस्ते चढाव्या, एटलुं ज नहि पण जेवी रीते पोताना वेदनाग्रस्त बाळकोने जोई मावापना हृदयने जेवो आघात लागे तेवी ज रीते अमारा गाममां पडेला तडने तथा तेने लइने १०-१२ वर्षथी अधुरा पडी रहेला मन्दिरने जोइने पूज्य पंन्यासजी महाराजने घणो ज आघात लाग्यो, तेथी नासिक जवानो पोतानो विचार मांडी-वाळीने अमारा ठाणामां ज रोकाया अने हमेशां व्याख्यानमां मुख्यताए संप उपर भार मेली अनेक दृष्टान्तोथी समजावी समजावीने अमारां हृदय उपर अद्भुत असर उपजावी। आखरे एओश्रीए अत्यन्त परिश्रम करीने दादरना आगरतडना आगेवानोनी मार्फत अमारा ठाणाना संघमां संप करावी अमारा उपर अनहद उपकार कर्यो छे, तेथी करीने अमारा संघनी संवेगी साधुनुं चोमासुं कराववानी भावना अगाउ कोइ वखत नहि पण आ वर्षे थयेली छे के पंन्यासजी महाराजनुं आ चोमासुं ठाणामां ज करावयुं, जेथी आपणे त्यां अधुरा रहेला मन्दिरनुं काम एओश्रीना सदुपदेशना प्रतापे पुरुं थइ जाय। माटे अमारी आ वात ध्यानमां लेवानी आपने तथा शेठाणी कंकुबेनने अमारी आग्रहभरी अरज

छे। शेठ साहेबे जणाव्युं जे जमवानो टाइम थइ गयो छे, रसोइ पण तैयार थइ गइ छे माटे सौथी पहेलां आप वधा भाईयो जमी ल्यो, पछी तमारी वात उपर आपणे विचार करीशुं। त्यारे ठाणावाळा भाईयोए शेठ रवजीभाईने जणाव्युं के जमवानुं तो अमे आपनी पासे मागी ज रह्या छीए, परन्तु जे जमणनी मागणी अमे करीये छीये, जे जमणनी अमने भूख छे, ते जमणने बदले आप बीजा प्रकारना जमणनो आग्रह करो छो, परन्तु ज्यां सुधी अमारा मनने शान्ति नहि थाय त्यां सुधी अमाराथी आपना जमणनो स्वीकार थइ शके एम नथी, माटे पहेलां अमारा मनने शान्ति प्राप्त करावो पछी अमने जमवा बेसवामां जरा य वांधो नथी। ठाणावाळा भाईयोनो एवो निश्चयात्मक जवाब सांभळीने एक वार तो शेठ रवजीभाई व्याघ्रतटिनीन्यायग्रसित थइ गया, परन्तु पोते अनुभवी अने लाभालाभनो विचार करनारा होइ तरत ज पंन्यासजी महाराजश्रीने जणावी दीधुं के ठाणावाळा भाईयोनी लागणी जोइने अत्रे करतां ठाणे आप चोमासुं करो तेमां मने वधारे लाभ जणाय छे, तेथी आप साहेब श्रीगुलाबमुनिजी आदि बे ठाणाने अत्रे चोमासुं करवानी आज्ञा आपी आप बीजा बे मुनिराजोने साथे लइने ठाणे चोमासुं करवा पधारो एवी मारी पण आप साहेबने विनति छे। शेठ रवजीभाईनुं कहेवुं सांभळीने पंन्यासजी महाराज कंइ पण बोले ते पहेलां तो अत्यन्त खुश थइ गयेला ठाणावाळा भाईयोए पंन्यासजी महाराजनी जय बोलावीने ठाणानुं चोमासुं जाहेर करी दीधुं। त्यार पछी शेठ

रवजीभाईये ठाणावाळा वधा भाइयोने प्रेम पूर्वक भोजन करावी विदाय आपी, पछी श्रीगुलाबमुनिजी आदि बे मुनिराजने माटूंगे चोमासुं करवा मुकी पंन्यासजी महाराज आदि त्रण मुनिओ विहार करीने ठाणे पधार्या, त्यांना संघे ठाठमाठथी प्रवेश कराव्यो अने सं. १९९४ नुं छेंताळीसमुं चोमासुं पंन्यासजी महाराजे ठाणामां कर्युं ।

हवे पंन्यासजी महाराजना उपदेशथी ठाणामां शुभकार्यनी शरुआत थवा मांडी, तेमां सौथी प्रथम असाड सुदी ११ ने दिवसे सवारे श्रीजिनदत्तसूरिजीनी जयन्ती उजववामां आवी हती अने बपोरे दादासाहेबनी पूजा खरतरगच्छना प्रेमी घाटकोपरवाळा शेठ मोणसीभाई तरफथी भणावी मोदकनी प्रभावना करवामां आवी हती । त्यार बाद वर्धमान तप आयंबील खातुं खोलवामां आव्युं ते हाल सुधी चाली रह्युं छे अने दिन प्रतिदिन उन्नति पर आवतुं जाय छे । ठाणामां ज्यारे स्वामिवत्सल के संघजमण थतुं त्यारे मारवाडीभाईयो तथा कच्छीभाईयो एकसाथे बेसी जमता न हता, ते बात महाराजश्रीना जाणवामां आव्याथी ते बाबतनो धर्मोपदेश आपी खूब समजावी बन्ने पक्षोने साथे बेसी जमवानुं कबूल कराव्युं, ते बाबतनो अमल करवा माटे पाळीवाळा शेठ वनेचन्दजी खीमाजीए पोताना तरफथी बे स्वामिवत्सलनां जमण कर्या तेमां ठाणाना बधा कच्छी गुजराती अने मारवाडी भाईयो साथे बेसीने जम्या, त्यारथी ठाणाना संघमां कच्छीभाईयो धर्मनां दरेक कार्योमां उत्साहथी भाग लेता थया ।

रावसाहेब शा० रवजीभाई सोजपाल.

जन्म संवत १९३७ श्रावण वद ४ ने शनीवार ता १३-८-१८८१

कच्छ लायजा.



जेमनी देखरेख हेठल ठाणा नगरमा जैनाचार्य श्रीजिनऋद्धिसूरिजी महाराजना सदुपदेशथी प्राचीन तीर्थोद्धार थयेल छे.

त्यार पछी जैनमन्दिरना अटकी पडेला कार्यने चालु कराववा माटे ठाणाना उत्साही आगेवानो श्रीयुत शेठ खेंगारजी हीराजी शेठ पन्नालालजी नवलाजी शेठ नरसिंगजी मनरूपजी शेठ चन्दनमलजी मूलचन्दजी शेठ रूपचन्दजी हजारीमलजी शेठ उमेदमलजी चत्रभुजजी शेठ सरदारमलजी मगनाजी शेठ मोतीलालजी ताराचन्दजी शेठ अनराजजी तपस्वी शेठ वनेचन्दजी खीमाजी शेठ कपूरचन्दजी भूताजी शेठ दलीचन्दजी अनराजजी शेठ पूनमचन्दजी धन्नाजी शेठ मूलचन्दजी उमाजी शेठ ताराचन्दजी वनेचन्दजी शेठ दीपचन्दजी सिन्दरूवाळा शेठ रावतमलजी शेठ जेठाभाई गोवरभाई शेठ आणंदजीभाई चांपशीभाई शेठ खीमजीभाई पुनशीभाई शेठ सवजीभाई तथा शेठ मेघजीभाई वगेरे बधा भाईयोने उपदेश आपीने टीप शरु करावी सारी रकम भरावी। टीपमां ठाणाना मारवाडी भाइयोए भरेली कूल रकम आसरे रु. ७००० नी थइ। त्यार बाद ते टीपमां बहारगामथी नीचे मुजवनी रकमो पण भरायेली छे।

१००१ राव साहेब शेठ रवजीभाई सोजपाळ जे. पी.।

१००१ शेठ तेजु काया।

१००१ शेठ कान्तिलाल ईश्वरलाल।

१००० शेठ माणेकलाल चुनीलाल।

५०१ शेठ वाडीलालभाई।

५०१ शेठ गिरधरलाल त्रिकमलाल।

१००१ श्रीगोडीपार्श्वनाथ जैन मन्दिर पायधुनी मुंबई।

१००१ श्रीअनन्तनाथ जैन मन्दिर शेठ नरशी नाथा स्ट्रीट मुंबई ।

१००१ श्रीआदीश्वर जैन मन्दिर भातबजार–मुंबई ।

२२५ श्रीझवेरी मंडल मुम्बई ।

१५० श्रीशान्तिनाथ जैन मन्दिर कोट–मुम्बई ।

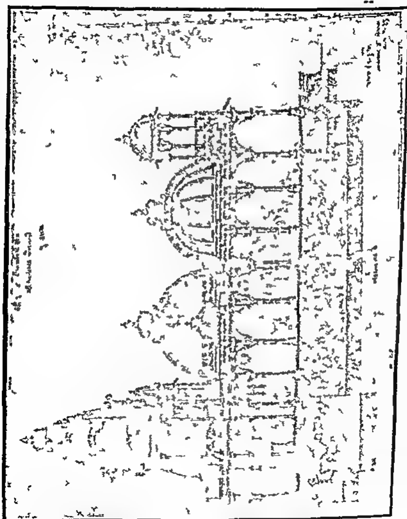
३२५ शेठ पालणभाई सोजपाळ हा. शिवजीभाई ।

३२५ शेठ मेघजीभाई सोजपाळ ।

उपर प्रमाणे खास खास रकमो भराया पछी बीजी रकमो पण भराइ छे अने हजी भराती जाय छे ।

ए प्रमाणे पंन्यासजी महाराजना उपदेशथी टीपमां भराया पछी ठाणाना संघे कच्छी वीसा ओसवालज्ञातिना अग्रेसर, जैन श्वेताम्बर कोन्फरन्सना माजी प्रेसीडन्ट, श्रीमोहनलालजी जैन सेंट्रल लायब्रेरी अने संस्कृत पाठशाळाना ट्रस्टी, कच्छ-देशमां पोताना गाम लायजामां सार्वजनिक फ्री दवाखानुं जैन मन्दिर अने जैन धर्मशाळानी सगवड करी आपनार, दरेक गच्छना चारित्रपात्र साधुओनी सेवाभक्तिना अभिलाषी धर्मप्रेमी राव साहेब शेठ रवजीभाई सोजपाळ जे. पी. तथा वीसस्थानकनी अने नवपदजीनी ओळी पूर्ण करी छन्नु जिननी ओळीनी तपस्या शरु करनार तेमना धर्मपत्नी शेठाणी श्रीमती कंकुबेनना शुभ हस्ते सं. १९९४ ना भादरवा सुदी १५ ने दिवसे नवा मन्दिरनुं खातमुहूर्त करावीने देरासरनुं कामकाज धमधोकार चालु करावी दीधुं छे । उपरोक्त समाचार ता. ९-१०-१९३८ ना जैन पत्रमां ९६७ मे पाने छपाया हता तेमांथी

श्रीनवपदमंडल युक्त
श्रीमुनिसुव्रतस्वामी भगवाननुं



जैन श्वेताम्बर नूतन मन्दिर—ठाणा।

खास जाणवा लायक अत्रे रजू करवामां आवे छे।

ठाणा नगरमां तैयार थतुं भव्य ऐतिहासिक जैन मन्दिर।

ठाणा नगरमां तैयार थता नूतन जैन मन्दिरने केटलाक भाईयो श्रीपालमन्दिर तरीके गणे छे ते हकीकत खरी नथी परन्तु ए मन्दिर श्रीमुनिसुव्रतस्वामिनुं छे, कारण के ए मन्दिरमां मूलनायकजी तरीके वीसमा तीर्थंकर श्रीमुनिसुव्रतस्वामिनी भव्य प्रतिमा विराजमान करवानी छे, तथा ए मन्दिरना रंग मंडपना मध्य भागमां आरसनुं सुन्दर नवपदजीनुं मंडल तैयार करावी पधराववानुं छे अने हजारो वर्ष पहेलाना ठाणाना इतिहासमां जैन धर्मनी गौरवता दर्शावनार श्रीपाल राजाना ऐतिहासिक दृश्योना सुन्दर आरसपटो कोतरावी दिवालोमां उभा करवामां आवशे, ते पटोने सारामां सारा कारीगरो पासे चित्रित करावी अत्यन्त आकर्षक बनाववामां आवशे के जेना दर्शन करवाथी प्रत्येक मनुष्यने तेनी सुन्दर असर थया विना नहि रहे।

उपरोक्त मन्दिरना कामनी शरुआत बार वर्ष पहेलां ठाणाना जैनमन्दिरनी बराबर सामे एक मोटी वाडी खरीदी लइने ते वाडीमां करवामां आवी हती। रु० १५००० नो खर्च थतां सुधीमां पायानुं काम मजबूत थइ रह्या पछी केटलाक संयोगोने लइने ते काम आज सुधी अटकी पडेलुं हतुं। त्यार बाद ठाणाना जैन संघना सद्भाग्ये पंन्यासजी महाराज श्रीऋद्धिमुनिजी ठाणे पधार्या, तेमना सदुपदेशथी संघमां ऐक्य थयुं

अने मन्दिरनुं काम पाछुं शरु करवामां आव्युं। हालमां ते काम रावसाहेब शेठ रवजीभाई सोजपाळनी जातीय देखरेख तळे दादर अने लालवाडीना भव्य जिनालयो तैयार करनार सोमपरा नानालाल इच्छाराम द्वारा चाली रह्युं छे। मन्दिर एवुं सुन्दर आकर्षक तैयार कराववामां आवशे के जेथी ठाणा नगर एक सुन्दर तीर्थधाम बनी रहेशे। ते माटेनो प्रयत्न ठाणाना संघमां १२ वर्षे संप करावनार वयोवृद्ध तपस्वी जशः कर्मी महात्मा पंन्यासजी श्रीऋद्धिमुनिजी निरन्तर करी रह्या छे। हालमां पूज्य पंन्यासजी महाराज ठाणामां ज चोमासुं रहेला छे, तेओश्रीना उपदेशथी रु.२०००० तो टीपमां भराई गया छे, हजी तेओश्रीना प्रयत्नथी ए टीपमां सारी रकम भरावानी आशा छे। आ मन्दिर तैयार थतां सुधी पंन्यासजी महाराज ठाणामां ज स्थिरता करी पोताना वरद हस्ते प्रतिष्ठा कराव्या पछी ज तेओश्री अत्रेथी विहार करे एवी ठाणाना संघनी भावना छे, आशा छे के पंन्यासजी महाराज ठाणाना संघनी भावनाने फळीभूत करशे, ठाणामां तैयार थता आ ऐतिहासिक अने तीर्थरूप जैनमन्दिरने जैनसमाजना दानेश्वरीओ अने समृद्धिशाळी जिनमन्दिरना कार्यवाहको उदारतायी साहाय करशे अने पूज्य मुनिराजो दरेक जग्याए आ मन्दिर संबन्धी उपदेश आपी मदद अपावशे तो आ जैन मन्दिर जल्दी तैयार थइ जशे।

मुम्बई पायधुनीथी श्रीगोडीपार्श्वनाथ जैन मन्दिरना ट्रस्टियो शेठ मोहनलाल हेमचन्द तथा शेठ नानालाल हरि-

भाई वगेरे ठाणे पधारी नवा बंधाता जैन मन्दिरनुं कामकाज जोई तपासीने बहु संतोष पाम्या हता । आ चोमासामां ठाणामां दर्शन करवा तथा पूज्य पंन्यासजी महाराजने वन्दन करवा आवनार जैन भाईयोनी सेवाभक्ति ठाणाना संघ तरफथी सारी रीते करवामां आवी हती । वळी पर्युषणपर्व ठाणामां अगाउ कदी नहि उजवायलां एवा ठाठमाठथी उजवायां हतां । पछी चोमासुं पुरुं थतां कार्तिकी पूनमे विहार करीने पंन्यासजी महाराज मुलुंद पधार्या, महाराजजीनी साथे ठाणाना आसरे २०० माणसो पण आव्यां हतां तेओनी सेवाभक्ति मुलुंदना शेठ मणिलाल चतुरभुज तरफथी करवामां आवी हती । बीजे दिवसे महाराजश्री भांडुप पधार्या त्यां ठाणाना शेठ कपूरचन्दजी तरफथी पूजा भणावी जमण करवामां आव्युं हतुं । त्यांथी घाटकोपरमां २१ दिवसनी स्थिरता करी महाराज साहेबे धर्मोपदेश आप्यो, पछी चीमोड माटूंगा दादर अने भायखले थइने पंन्यासजी महाराज पायधुनी उपर खरतरगच्छने उपाश्रये पधार्या, त्यां १५ दिवसनी स्थिरता करी कच्छी वीसा ओसवालनी वाडीए पधार्या, त्यां ४ दिवस रहीने पछी दादर पधार्या । दादरथी ठाणा तरफ विहार करवाना हता परन्तु दादरमां श्रीमहोदयमुनिजी ओचिंता बिमार पडी गया, त्यारे दादरमां रहेता डाक्टर दफतरीए डॉ० शान्तिलाल, सीवीलसरज्यन डॉ० मोदी तथा डॉ० महेताने साथे राखी त्रण दिवस सुधी अनेक चांपता उपायो करी सेवाभक्ति करी अने शेठ वल्लभजीभाई शेठ विठ्ठलभाई अने शेठ कानजी-

भाई वगेरे श्रावकोए दरेक प्रकारनी सेवाभक्ति करी हती। श्रीमहोदयमुनिजीनी बिमारीना समाचार मळवाथी घाटकोपरथी तुरत विहार करीने मुनि श्रीहेमसागरजी तथा मुनि श्रीत्रिलोकचन्दजी दादर आवी पहोंच्या अने बिमार मुनिनी सेवा शुश्रुषा करी हती परन्तु आयुष्यनो ज अन्त आवी गयेलो होवाथी कोई पण उपाये असर करी नहि अने चोथे दिवसे सं. १९९५ ना पोष वदी ४ ने रोज अंतकाळ पर्यन्त शुभ परिणामे रही अरिहंत प्रभुनो जाप जपतां जपतां समाधिपूर्वक स्वर्गवासी थइ गया। दादरना संघे तुरत सर्वत्र समाचार आपी दीधा तेथी मुंबई तेमज पराना घणां माणसो आवी पहोंच्यां, ठाणेथी पण ७५ माणसो आव्यां, मुंबईथी आवेला भगत मूलचन्द हीराचन्दनी देखरेखमां दरेक बाबतनी तैयारी करी बराबर १ वागे हजारो माणसोनी मेदनी सहित श्रीमहोदयमुनिजीनी स्मशान यात्रा शरु थइ हती । ते दिवसे दादरना बजारना मारवाडी भाईयो तरफथी ६० रु. ना जीवो छोडाववामां आव्या हता अने स्वर्गस्थ मुनिराजना आत्मानी शान्ति निमित्ते नवपदजीनी पूजा भणाववामां आवी हती, तेमज केटलांक भाई बेनोए मळीने ८१ आयंबीलनी तपस्या करवानुं शरु कर्युं हतुं। त्यार बाद दादरथी विहार करीने ठाणाना संघना आग्रहथी पंन्यासजी महाराज ठाणे पधार्या त्यारे त्यांना संघे ससत्कार प्रवेश कराव्यो हतो। थोडा दिवस बाद सं. १९९५ ना महा सुदी १२ ने रोज मुम्बईमां मांडवीबन्दर पर शेठ नरशी नाथा स्ट्रीटमां आवेला श्रीअनन्तनाथजी जैन मन्दिरना

दादरमां हता त्यारे महाराजश्रीने वन्दन करवा हुं दादर गयो हतो त्यां शेठ रवजीभाई मळ्या हता, तेओनी आगळ आचार्य पदवी संबंधी वात निकळतां तेओए जणाव्युं जे महाराज साहेब भले ना पाडे परन्तु तमारा ठाणाना बधा जैन भाईयोनी आचार्य पदवी आपवामां एकमती होय तो तमारे जरुर पदवी आपवी जोइये। ते वात सांभळीने ठाणाना संघे एकत्र थइने एकमते आचार्य पदवी आपवानो निर्णय कर्यो। त्यार पछी कोई सारा ज्योतिषी पासे मुहूर्त जोवडावतां सं० १९९५ ना फागण सुदी ५ नो दिवस उत्तम जणायो, तदनुसार आचार्य पद समर्पणनी कुंकुमपत्रिका छपावीने गामोगाम रवाना करी दीधी, दिवसो बहु थोडा रह्या होवाथी केटलीक खास खास जग्याए तारथी खबर आप्या अने आचार्यपद समर्पण महोत्सवनी तैयारी करवा लाग्या।

ठाणाना तिलक चोकमां आवेला जैनमन्दिरनी सामे ज नवा बंधाता जैनमन्दिरना विशाळ कम्पाउंडमां सुन्दर मंडप बांधी ते मंडपनी बरोबर मध्यमां त्रिगडुं गोठवी, तेमां चारे दिशाए चार धातुना प्रतिमाजी पधरावी सवारे आठ वागतां आचार्यपद प्रदाननी क्रियानी शरुआत करवामां आवी ते लगभग ११ वागे समाप्त थतां श्रीगुलाबमुनिए सर्व सभाजनो समक्ष खरतरगच्छीय जगत्पूज्य मुनि श्रीमोहनलालजी महाराजना पट्टधर श्रीजिनयशःसूरिजीना पट्टधर पंन्यासजी महाराज श्री-ऋद्धिमुनिजीने, जैनाचार्य भट्टारक श्रीजिनऋद्धिसूरिजी तरीके कर्या अने आ प्रसंगे खास हाजर रहेवा मुंबईथी विहार

मन्दिरना अटकी पडेला कामनो प्रारंभ करावीने आ ठाणा नगरने प्राचीन तीर्थ तरीकेनी जाहोजलालीमां लाववा माटे सतत प्रयास करी रह्या छे । वळी बांधकामना अनुभवी कंट्राक्टर राव साहेब शेठ रवजीभाईने प्रेरणा करी तेओनी तथा तेओना चिरंजीवी श्रीयुत रामजीभाईनी नवा मन्दिरना बांधकाममां दरेक प्रकारनी सहाय अपावी रह्या छे । तेओ बन्ने शेठ साहेबो पोताना अमूल्य टाइमनो भोग आपी अवार नवार अत्रे पधारी सलाह सूचना आपता रहे छे तेथी आपणा नवा मन्दिरनुं काम झपाटाबंध चाली रह्युं छे । एवा आपणा परम उपकारी पंन्यासजी महाराजने आपणा ठाणाना संघ तरफथी आचार्य पदवीथी अलंकृत करवामां आवे तो ते घणुं ज योग्य कार्य गणाय । ते सांभळीने पंन्यासजी महाराजे जणाव्युं के भाईयो पंच परमेष्ठिमां तृतीय पदे गणाता आचार्यपदनी जवाबदारी बहु मोटी छे अने ते जवाबदारी उठाववानी मारी योग्यता नथी, मुनिपणाना कर्तव्य अनुसार में तो मारी फरज बजावी तमने धर्मोपदेश आप्यो छे तेने अमलमां मेली तमोए जे धर्मनां कार्यो कर्यां छे तेमां तमे पण तमारी फरज बजावी छे । त्यार बाद ठाणाना मारवाडी भाईयो विचार करवा लाग्या के " अत्यन्त परिश्रम वेठीने आपणा उपर महान् उपकार करनार पूज्य पंन्यासजी महाराजने आपणी उपकारज्ञता शी रीते दर्शावी शकीए" ते संबंधी ठाणाना जैन भाईयोमां चर्चा थवा लागी, त्यारे शेठ रूपचन्द-भाईये जणाव्युं के थोडा दिवस पहेलां ज्यारे महाराजश्री

दादरमां हता त्यारे महाराजश्रीने वन्दन करवा हुं दादर गयो हतो त्यां शेठ रवजीभाई मळ्या हता, तेओनी आगळ आचार्य पदवी संबंधी वात निकळतां तेओए जणाव्युं जे महाराज साहेब भले ना पाडे परन्तु तमारा ठाणाना वधा जैन भाईयोनी आचार्य पदवी आपवामां एकमती होय तो तमारे जरुर पदवी आपवी जोइये। ते वात सांभळीने ठाणाना संघे एकत्र थइने एकमते आचार्य पदवी आपवानो निर्णय कर्यो। त्यार पछी कोई सारा ज्योतिषी पासे मुहूर्त जोवडावतां सं० १९९५ ना फागण सुदी ५ नो दिवस उत्तम जणायो, तदनुसार आचार्य पद समर्पणनी कुंकुमपत्रिका छपावीने गामोगाम रवाना करी दीधी, दिवसो बहु थोडा रह्या होवाथी केटलीक खास खास जग्याए तारथी खबर आप्या अने आचार्यपद समर्पण महोत्सवनी तैयारी करवा लाग्या।

। ठाणाना तिलक चोकमां आवेला जैनमन्दिरनी सामे ज नवा बंधाता जैनमन्दिरना विशाळ कम्पाउंडमां सुन्दर मंडप बांधी ते मंडपनी बरोबर मध्यमां त्रिगडुं गोठवी, तेमां चारे दिशाए चार धातुना प्रतिमाजी पधरावी सवारे आठ वागतां आचार्यपद प्रदाननी क्रियानी शरुआत करवामां आवी ते लगभग ११ वागे समाप्त थतां श्रीगुलाबमुनिए सर्वे सभाजनो समक्ष खरतरगच्छीय जगत्पूज्य मुनि श्रीमोहनलालजी महाराजना पट्टधर श्रीजिनयशःसूरिजीना पट्टधर पंन्यासजी महाराज श्रीऋद्धिमुनिजीने, जैनाचार्य भट्टारक श्रीजिनऋद्धिसूरिजी तरीके जाहेर कर्या अने आ प्रसंगे खास हाजर रहेवा मुंबईथी विहार

करीने पधारेला वयोवृद्ध मुनि श्रीहेमसागरजीए मुनि श्रीगुलाब-मुनिए अने मुनि श्रीत्रिलोकचन्द्रजीए अनुक्रमे वासक्षेप नांख्यो हतो। त्यार बाद रु० १५१ नी बोलीथी रावसाहेब शेठ रवजी भाईना सुपुत्र शेठ रामजीभाईए वासक्षेप नांख्यो, त्यार पछी शेठ गिरधरलाल त्रिकमलालनी धर्मपत्नी श्रीमती चन्दनबेने रु० १५१ नी बोलीथी वासक्षेप, नांख्यो हतो। तदनन्तर ठाणाना शेठ देवीचन्दजी हेमाजीए रु० १४१ नी बोलीथी आचार्यपदनी चादर ओढाडी हती, त्यार पछी सकळ संघे नूतन आचार्यश्रीने वन्दन कर्युं हतुं। पछी आचार्य श्रीजिन-ऋद्धिसूरिजीए देशना आपतां जणाव्युं जे तमोए मने खुश करवा आचार्य पदवी आपी परन्तु हुं तो त्यारे ज खुश थइश के ज्यारे आप बधा भाईयो पोतापोतानी शक्ति अनुसार तन मन अने धनथी मददगार थइने घणा उत्साहथी प्रारंभ करेलुं आ सामे देखाता नूतन जैन मन्दिरनुं काम जेम बने तेम जल्दी पुरुं करी अंजनशलाका तथा प्रतिष्ठा करावशो, तथा यात्रालुओने उतरवा लायक आलीशान धर्मशाळा तथा वासण-कुसण गादलां गोदडां वगेरेनी सगवड करीने आ ठाणा नग-रने एक प्राचीन तीर्थनी कक्षाए लावी मुकशो। देरासरनुं काम पंचोने के मुकादमोने सोंपीने बीजा भाईयोए निश्चिन्त थइ जवानुं नथी परन्तु कार्य करनाराओने दरेक रीते सहाय आपी सौए पोतानी फरज बजाववानी छे। वळी जेओने पूर्व-कृत पुण्यना प्रतापे लक्ष्मीनी प्राप्ति थयेली छे तेमणे आ तीर्थ तुल्य नूतन जैन मन्दिरमां उदार दिलथी मदद करी प्राप्त

थयेली चंचळ लक्ष्मीने स्थिर करी लेवानी छे, जो तेम नहि करशो तो पण लक्ष्मीनो स्वभाव ज चंचळ होवाथी ते गमे ते मार्गे चाली जवानी तो छे ज माटे बुद्धिशाळी पुरुषोए लक्ष्मीने तेना मन मान्या मार्गे जतां अटकावीने आवा धर्मना उत्तम काम रूपी सत्क्षेत्रमां जवानी फरज पाडवी जोइये, अर्थात् आवा सत्कार्यमां पोतानी लक्ष्मीने वापरीने सदुपयोग करी लेवो जोइये एवी मारी आ तके खास भलामण छे। लक्ष्मीने जेम पुण्यकार्यमां वापरशो तेम तेम वंधाता जता पुण्यना प्रतापे लक्ष्मीने तमारी पाछळ पाछळ घसडावुं पडशे, ते संबंधी तार्जा दृष्टान्तो मुंबईवाळा शेठ माणेकलाल चुनीलाल तथा कान्तिलाल ईश्वरलालनां हालमां तमारी समक्ष मोजूद छे। ते बन्ने शेठियाओ कांइ बहु मालेतुजार नथी, एनाथी विशेष मालदार तो बीजा कंइक शेठियाओ मुंबईना जैनोमां छे परन्तु उपरोक्त बन्ने शेठियाओए हमणां हमणां थोडा वखतमां ज लाखो रुपीयानी सखावत करी छे अने करता ज जाय छे। जेटली सखावत तेओ करे छे तेनाथी सवाई लक्ष्मी तेओना पुण्य कार्यना प्रतापथी तेओनी पासे आवीने हाजर थइ जाय छे। तेओ बन्ने जणाए जाणे लक्ष्मीनी साथे हरिफाइ मांडी होय तेम जणाय छे, कारणके लक्ष्मीने रवाना करवा माटे तेओना तरफथी कोई पण महिनो सखावत कर्या विनानो खाली जतो नथी, ज्यारे लक्ष्मी पण खाइ पीने तेओनी पाछळ पडी होय तेम जणाय छे, कारण के ते बन्ने शेठियाओ आगले वारणेथी जेटली लक्ष्मी सत्कार्योमां वापरे छे तेथी सवाइ लक्ष्मी पाछले वारणेथी

तेओना मकानमां मवेश करती होय तेवुं जोवामां आवे छे। माटे तेओना मत्यक्ष दृष्टान्तथी तमे पण प्राप्त थयेली लक्ष्मीने उदार दिलथी आवा तीर्थोद्धार जेवा सत्कार्यमां वापरीने पुण्य हांसल करशो । वळी कदाच आ तीर्थोद्धारना कार्यमां जेमनाथी कोई पण रीते मददगार नहि थवाय तेनो वांधो नथी परन्तु ए कार्यमां कोई पण जातनुं विघ्न तो कोई नांखशो ज नहि । जगतमां घणा भाग्यशाळीओ पड्या छे, कोई नें कोई मददगार मळ्या ज करशे अने आ माचीन तीर्थनो उद्धार जरुर थइ जशे । आचार्य श्रीनी देशना पुरी थया बाद मुंबईनी यंग मेन्स जैन सोसायटीना माजी मसुख खंभातवाळा शेठ मूळचन्द बुलाखीदास, राधनपुरवाळा शेठ गिरधरलाल त्रिकमलाल अने शेठ गणेशमलजी सोभागमलजीनी पेढी तरफथी अनुक्रमे आचार्य महाराजश्रीने कामळी ओढाडवामां आवी हती । त्यार बाद आचार्य पदवीनुं समर्थन करनारा बहारगामथी आवेला तारो अने पत्रोमांथी नीचे मुजबना मुख्य मुख्य वांची संभळाव्या हता ।

१—पालीताणेथी श्रीरत्नमुनिजी गणी आदि ठाणा दश तरफथी तार तथा पत्र ।
२—वरकाणा तीर्थथी श्रीविजयललितसूरिजीनो पत्र ।
३—वापीथी शेठ मगनीरामजी रामसुखजीनो तार ।
४—नन्दरबारथी शेठ डाह्याभाई मंछारामनो पत्र ।
५—अमदावादथी, शेठ कान्तिलाल मगनलाल झवेरीनो पत्र।
६—चीछीमोरेथी शेठ केसरीचन्द भाणाभाईनो पत्र ।

७—खंभातना वीसा पोरवाड जैन युवक मंडल तरफथी वाडीलाल जेठाभाईनो पत्र ।

छेवटे आ प्रसंग उपर मुंबईथी खरतरगच्छना टरेक आगेवानो हाजर थयेला तेओमांथी सुरतवाळा शेठ झवेरभाई केसरीचन्द तरफथी श्रीफळनी प्रभावना करवामां आवी हती । वघोरना आडम्बर पूर्वक वरघोडो काढवामां आव्यो हतो ते मुख्य मुख्य बजारोमां फरीने जैनमन्दिरे आवी पहोंचतां आचार्यपदवीवाळा मंडपमां ठाठमाठथी पूजा भणाववामां आवी हती अने सांजना संघजमण करवामां आव्युं हतुं ।

त्यार पछी थोडा दिवस बाद आचार्य श्रीजिनऋद्धिसूरीश्वरजी महाराज साहेबने सं० १९९५ नुं आवतुं चोमासुं माटूंगामां पोताना बंगलामां करवानी विनति करवा माटे, माटूंगेथी शेठ तेजुकायापाकवाळा श्रीयुत नेणशीभाई भोजराज, राव साहेब श्रीयुत रवजीभाई सोजपाळने तेडीने ठाणे आव्या अने पूज्य आचार्यश्रीने जणाव्युं जे आवतुं चोमासुं माटूंगामां करवानी अमारी विनति स्वीकारवानी कृपा करो । त्यारे जवाबमां आचार्यश्रीए जणाव्युं जे हजी तो चोमासाने घणी वार छे, चोमासानी विनतिओ तो जूदा जूदा संघोनी आव्या करे छे परन्तु हजी कोईनी विनति स्वीकारी नथी । माटूंगामां चोमासुं कराववानो तमारो भाव छे अने तमे विनति करवा अत्रे आव्या छो, परन्तु हमणां हुं तमने चोक्स जवाब आपी शकतो नथी, संभळाय छे के आ साल

माटूंगामां तेरापंथना साधुओ चोमासुं करवाना छे, तेरापंथना साधुओनुं माटूंगामां चोमासुं थवानुं चोकस जाहेर थशे त्यां सुधीमां जो कोई पण संघनी विनति में स्वीकारी नहि हशे तो माटूंगामां चोमासुं करवानी तमारी विनति सफळ थवानो सारो चान्स छे।

त्यार पछी जगत्पूज्य श्रीमोहनलालजी महाराजनी जयन्तीनो दिवस नजीक आवी पहोंच्यो। आचार्यश्रीना उपदेशथी आ सालनी ३२ मी जयन्ती ठाणाना संघ तरफथी ठाणामां ज उजववानुं नक्की थवाथी, ते बाबतनी आमंत्रण पत्रिका बहार पाडवामां आवी हती अने मुंबई सुधी आजुबाजुना परामां पहोंचाडवामां आवेली होवाथी बहारगामनां पण केटलांक माणसो जयन्ती प्रसंगे पधार्या हतां। सं० १९९५ ना चैत्र वदी १२ ने दिवसे सवारमां आठ वागे ते दिवसनी जयन्तीना नायक श्रीमोहनलालजी महाराज साहेबनी प्रतिकृति (-फोटा) ने एक शणगारेली मोटरमां पधरावी ठाणाना सरकारी बेन्ड सहित वरघोडो काढवामां आव्यो हतो। ते ठाणाना मुख्य मुख्य रस्ता अने बजारमां फरीने जैन मन्दिर पासे आवी पहोंचतां तुरतज जैन उपाश्रयना विशाळ होलमां आचार्य श्रीजिनऋद्धिसूरीश्वरजीना अध्यक्षपणामां जयन्तीना कार्यनी शरुआत करवामां आवी हती। सौथी पहेलां ठाणाना एक आगेवानभाईये आमंत्रण पत्रिका वांची संभळाव्या बाद श्रीयुत मावजी दामजी शाह मास्तरे मास्तर विजयचन्द कृत संस्कृत मोहनाष्टक तथा स्वरचित पद्यमय मोहनचरित्र अने स्तुति गाइ

संभळाव्यां हतां, त्यार पछी मास्तर विजयचन्द मोहनलाल शाहे पण स्वरचित मोहनस्तुति गाई संभळावी हती। तदनन्तर मास्तर लक्ष्मीचन्द सुखलाल शाहे मास्तर भावजीभाईये तथा श्रीयुत मंगळदास त्रिकमदास झवेरीये गुजराती भाषामां अने मास्तर विजयचन्दे हिन्दी भाषामां जयन्तीनायकना चरित्रमांना एक एक प्रसंग उपर सुन्दर विवेचन कर्या पछी गुलाबमुनिए पूज्य गुरुदेवना आखा चरित्रनो सार श्रोताजनोने कही संभळाव्यो हतो। छेवटमां टाइम घणो थइ जवाथी अने ते प्रसंगे बीजुं कंइ खास विशेष जणाववानुं न होवाथी प्रमुखपदेथी आचार्यश्रीए उपसंहार करी मंगलिक संभळावी सभानी समाप्ति करी हती। ते दिवसे ठाणाना संघ तरफथी मोदकनी प्रभावना करवामां आवी हती, बहार गामथी आवेला माणसोने प्रेमपूर्वक जमाडवामां आव्यां हतां तथा जिन मन्दिरमां पूजा भणावी आंगी रचाववामां आवी हती।

त्यार पछी वैशाख सुदीमां आचार्य श्रीविजयप्रेमसूरिजी पोताना विशाल शिष्यसमुदाय साथे मुम्बईथी विहार करीने ठाणे पधार्या अने आचार्य श्रीजिनऋद्धिसूरीश्वरजी ज्यां बिराजता हता ते ज स्थानमां उतर्या, तेओश्रीए ठाणामां १० दिवसनी स्थिरता करी हती ते दरम्यान तेओश्रीना समुदाये ठाणाना संघने व्याख्यान संभळाव्युं हतुं अने ठाणाना श्रावकोए साधुसमुदायनी सेवाभक्तिनो सुन्दर लाभ लीधो हतो। ते समये, बन्ने सूरिपुंगवोए अनेकवार साथे बेसीने वार्तालाप कर्यो हतो। एक दिवसे शेठ रवजीभाई सोजपाळ तथा शेठ जीवतलाल प्रतापशीनी साथे पोताना शिष्योने लइने आचार्य श्रीविजय-

प्रेमसूरिजी-ठाणामां नवा बन्धाता जैनमन्दिरनुं निरीक्षण करवा पधार्या हतां, तेओश्रीने शेठ रवजीभाईए दरेक कामकाजनी विगतवार समजण आपी हती, देरासरनुं बांधकाम तथा खरा मोकानी विशाळ जग्या जोइने तेओ वधाए सन्तोष पामीने जणाव्युं जे खरेखर आ मन्दिर एक तीर्थ तरीकेनी ख्याति पामीने आगळ जतां खूब उन्नति पर आवशे। त्यार पछी ठाणेथी वैशाख सुदी १३ ने रोज सवारमां विहार करीने आचार्य श्रीजिनऋद्धिसूरीश्वरजी मुलुंद पधार्या ते वखते ठाणानो संघ घणे दूर सुधी पहोंचाडवा गयो हतो, मुलुंदमां १० दिवसनी स्थिरतामां हमेशां बपोरना व्याख्यान चालतुं हतुं जेनो लाभ घणां माणसो लेतां हतां। पछी त्यांथी विहार करी भांडुप घाटकोपर अने कुरला थइने माटूंगामां तेजुकाया-पार्कमां आवेला विमलविलामां पधार्या अने शेठ नेणशीभाईना अत्यन्त आग्रहथी माटूंगामां ज चोमासुं रहेवानुं नक्की थयुं। थोडा दिवस बाद दादरथी श्रीसिद्धचक्र सेवामंडलना घणा मेम्बरोए माटूंगे आवीने विनति करवाथी आचार्यश्री दादर पधार्या ते प्रसंगे श्रीसिद्धचक्र सेवामंडलना एक मेम्बरे आड-म्बरथी पूजा भणावीने स्वामिवत्सलनुं जमण कर्युं हतुं।

त्यार पछी दादरना श्रीजैन मंडलना कार्यवाहकोनी विनतिथी आचार्य श्रीजिनऋद्धिसूरिजीए तथा पंन्यासजी श्रीमेरुविजयजीए एक दिवसे व्याख्यानने टाइमे दादरनी जैनपाठशालाना छोकरा छोकरीओनी परीक्षा लीधी हती, ते समाचार मुम्बई समाचार ता. १-६-१९३०. गुरुवारना अंकमां नीचे मुजब छपाया हतो।

शा० खीमजी तेजू काया जे. पी

जन्म सं० १९६८ ता० १-'



कच्छी वीसा ओसवाल सखावती

जैन युवक।

दादर जैन पाठशालानो मेलावडो ।

ता. २८-५-३९ ना रोज पंन्यासजी श्रीमेरुविजयजीए दादरनी जैन पाठशालानी परीक्षा लीधा बाद आचार्य श्रीजिनऋद्धिसूरिजीना प्रमुखपणामां एक मेलावडो करवामां आव्यो हतो। ते प्रसंगे आचार्यश्रीए जैन धार्मिक ज्ञानथी थता फायदा उपर प्रवचन कर्युं हतुं, ते वखते एक वयोवृद्ध विधवा बेननी सूचना उपरथी पूज्य आचार्यश्रीए जणाव्युं हतुं के मुंबई जैन महिला समाजना केटलांक सुधरेलां गणानारां बैरांओ अटकाव पाळतां नथी एम संभळाय छे, तेमांनी एक अडचणवाळी बाई दादरमां गोखले रोड उपर चालती हुन्नर शिक्षण शाळामां आवी हती अने त्यां हाजर रहेली बेनोनी आगळ अटकाव पाळवो ए तो एक जातनो व्हेम छे एवुं बोली हती। ते उपरथी आचार्यश्रीए शास्त्रना प्रमाणथी अटकाव पाळवानुं समजाव्युं हतुं तेथी घणी बेनोए अटकाव पाळवाना नियम लीधा हता। विशेषमां आचार्यश्रीए जणाव्युं हतुं के एवा सुधारा करवाथी धर्मनी के देशनी उन्नति थवानी नथी, जैन महिला समाजना सेक्रेटरी आ बाबत जाहेर खुलाशो करशे तो जैन मन्दिरोमां थती आशातना बन्ध थशे। आचार्यश्रीए एम पण जणाव्युं हतुं के अनेक उपाधिधारक स्थानकवासी पंजाबी उपाध्याय श्रीआत्मारामजीए हालमां ज संशोधन करीने श्रीदशाश्रुतस्कन्ध हिन्दी अनुवादयुक्त प्रगट कराव्युं छे, ते ग्रन्थमां तेओनो फोटो मुकेलो छे तेनी नीचे जणाव्युं छे के 'चित्र परिचय माटे छे' तो हुं तेओने जणावुं छुं के भगवाननी मूर्त्ति

गा० भीमजी तेजू काया जे. पी.

जन्म सं० [illegible] ता० [illegible]



कराव्युं नथी । पर्युषणनुं व्याख्यान संभळाववा माटे, हालमां गमे तेवो साधु गमे तेवी पदवी लइ शके एवी स्थिति प्रवर्ती रहेली होवानो मोको जोइने, योगोद्वहन कर्या विना ज स्वयमेव पंन्यास बनी बेठेला, मुम्बईमा पायधुनी उपर आवेली श्रीआदीश्वरजीनी धर्मशाळामां विराजता मुनि श्रीभावविजयजीने कच्छी भाईयोए विनति करेली त्यारे तेओए हा पाडेली, अने तेओ कच्छी वीसा ओसवालनी वाडीमां मुहपत्ति पण पडिलेही आव्या हता, हवे ज्यारे पर्युषण नजीक आव्यां त्यारे कच्छी भाईयोए पोताने पर्युषणनुं व्याख्यान संभळाववा माटे कच्छी वीसानी वाडीमां पधारवानुं श्रीभावविजयजीने जणाव्युं, त्यारे तेमणे पोते कबूल करेली वातनो अस्वीकार करवामां पोताना बीजा महाव्रतना भंग थवाना भयने पण भगाडी मुकीने आववानी चोक्खी ना पाडी दीधी । पछी ते महाजनवाडीमां आयंबील खातामां खंतथी काम करनार शेठ नरशीभाई तथा शेठ पुनशी मोणशी मारफते आव्या अने शेठ रवजी सोजपाळ जे. पी. शेठ तेजु कायावाळा शेठ खीमजीभाई जे. पी. तथा शेठ नेणशीभाई भोजराज आगळ नम्रपणे जणाव्युं जे, शेठ साहेबो ! आपने तो आठे दिवस पर्युपणपर्वनां व्याख्यानो सांभळवानो सारो लाभ मळशे, परन्तु आपनी ज ज्ञातिना मुम्बईमांना पांच हजार भाई बहेनो पर्युषणनां व्याख्यानो सांभळवाना लाभथी जो वंचित रहेशे तो तेमां आप साहेबोनी शोभा गणाशे नहि, माटे मुम्बईवासी आपना जातिभाईयोने पण पर्युषणनां व्याख्यानो सांभळवानो

तथा आगमो पण परिचयने माटे ज छे । तमारो फोटो जोईने तमारा भक्तो तमने ओळखीने जेवी रीते तमारो विनय साचवे छे तेवी ज रीते भगवानना फोटानो मूर्तिनो तथा आगमोनो भव्य जीवो विवेकपूर्वक विनय पूजन सत्कार वगेरे करे छे अने पोतानुं कल्याण करे छे । ए दशाश्रुतस्कन्धना अनुवादमां बीजा सूत्रोना पाठ सहित दरेक प्रकारनी अशुचि टाळीने भणवा भणाववानुं पण जणावेलु छे, ते पाठ आचार्यश्रीए त्यां हाजर रहेली स्थानकवासी बेनोने बताव्यो हतो तेथी आचार्यश्रीनो अडकाव पाळवा बाबतनो उपदेश ते बेनोने घणो ज रुच्यो हतो । त्यार बाद मंगलिक संभळावीने मेळावडो समाप्त कर्यो हतो ।

त्यार पछी चोमासा माटे आचार्यश्री पाछा माटुंगे पधार्या हता । माटुंगामां राव साहेब शेठ रवजी सोजपाळना शान्तिनिकेतनमां हमेशां व्याख्यान वंचाय छे, तेमां प्रथम व्याख्यानमां उत्तराध्ययनसूत्र लक्ष्मीवल्लभी टीकावाळुं अने भावनाधिकारे धर्मकल्पद्रुम महाकाव्य वंचाय छे ते सांभळवानो लाभ घणा भाई बेनो ले छे ।

श्रीकच्छी वीसा ओसवाल जैनोए मुम्बईमां भातबजारमा आवेला श्रीआदीश्वर भगवानना मन्दिरने तोडी नंखावी नवुं बन्धाववा मांडेलुं होवाथी, खडकपर पालागलीमां आवेली तेओनी महाजनवाडीमां देरासरनो सर सामान भरवाथी तथा भगवानने बिराजमान करवाथी जग्यानी संकडाशने लइने आ साल कोई साधुनुं चोमासुं ते वाडीमां तेओए

कराव्युं नथी । पर्युषणनुं व्याख्यान संभळाववा माटे हालमां गमे तेवो साधु गमे तेवी पदवी लइ शके एवी स्थिति प्रवर्ती रहेली होवानो मोको जोइने, योगोद्वहन कर्या विना ज स्वयमेव पंन्यास बनी बेठेला, मुम्बईमां पायधुनी उपर आवेली श्रीआदीश्वरजीनी धर्मशाळामां विराजता मुनि श्रीभावविजयजीने कच्छी भाईयोए विनति करेली त्यारे तेओए हा पाडेली, अने तेओ कच्छी वीसा ओसवालनी वाडीमां मुहपत्ति पण पडिलेही आव्या हता, हवे ज्यारे पर्युषण नजीक आव्यां त्यारे कच्छी भाईयोए पोताने पर्युषणनुं व्याख्यान संभळाववा माटे कच्छी वीसानी वाडीमां पधारवानुं श्रीभावविजयजीने जणाव्युं, त्यारे तेमणे पोते कबूल करेली वातनो अस्वीकार करवामां पोताना बीजा महाव्रतना भंग थवाना भयने पण भगाडी मुकीने आववानी चोक्खी ना पाडी दीधी । पछी ते महाजनवाडीमां आयंबील खातामां खंतथी काम करनार शेठ नरशीभाई तथा शेठ पुनशी मोणशी मारफत आव्या अने शेठ रवजी सोजपाळ जे. पी. शेठ तेजु कायावाळा शेठ खीमजीभाई जे. पी. तथा शेठ नेणशीभाई भोजराज आगळ नम्रपणे जणाव्युं जे, शेठ साहेबो ! आपने तो आठे दिवस पर्युषणपर्वनां व्याख्यानो सांभळवानो सारो लाभ मळशे, परन्तु आपनी ज ज्ञातिना मुम्बईमांना पांच हजार भाई बहेनो पर्युषणनां व्याख्यानो सांभळवाना लाभथी जो वंचित रहेशे तो तेमां आप साहेबोनी शोभा गणाशे नहि, माटे मुम्बईवासी आपना जातिभाईयोने पण पर्युषणनां व्याख्यानो सांभळवानो

लाभ मळे एवो जातनो कोई प्रबन्ध करवानी आपने खास विनंति करवा अमे आव्या छीए। जो के अमोए आपणी महाजन वाडीमां पर्युषणनां व्याख्यानो संभळाववा माटे श्रीभावविजयजीने विनंति करेली हती अने तेओए व्याख्यान वांची संभळाववानी हा पण पाडेली, परन्तु लालबागना उपाश्रये ठराव थयो छे के तपागच्छनो जे कोई साधु तपागच्छ सिवायना बीजा कोई पण पर्युषण करनाराने पर्युषणनां व्याख्यानो संभळावे तेने संघ बहार करवो, लालबागवाळाओना एवी जातना ठरावथी श्रीभावविजयजी डरी गया अने पोतानी कबूलात उपर पाणी फेरवीने हवे अमने पर्युषणनां व्याख्यानो संभळाववानी साफ ना पाडी दीधी। एवा प्रकारनी तेओनी वात सांभळीने तेओने साथे लइने उपरोक्त माटुंगाना शेठियाओ आचार्य श्रीजिनऋद्धिसूरिजी पासे आव्या अने बधी हकीकत निवेदन करी, विशेषमां जणाव्युं के मुम्बईवासी अंचलगच्छवाळाओने पण पर्युषणनां व्याख्यानो सांभळवानो लाभ मळे एवो कांइ रस्तो काढवानी आप साहेबने अमारी नम्र विनंति छे। आचार्यश्रीए जणाव्युं के जो के मारी तबीयत हालमां जेवी जोईये तेवी सारी नथी छतां पण तमे बधा आशाभर्या मारी पासे आव्या छो तो तमने निराश नहि करतां मुम्बई जइने तमारी वाडीमां पर्युषणनां व्याख्यानो संभळाववा हुं तैयार छुं, परन्तु मारी साथे बीजा एक साधुनी जरूरत होवाथी घाटकोपरमां तमारी वाडीमां त्रण साधुओ चोमासुं रहेला छे तेमांथी एक साधुने अहीं तेडावो पछी अमे

बन्ने साथे मुम्बई जइशुं अने पर्युषणपर्वनुं आराधन करावी शुं। त्यार पछी घाटकोपरथी तेओए मुनि श्रीत्रिलोकचन्द्रजीने तेडाव्या एटले तेओ माटूंगे आव्या पछी आचार्यश्री आदि ठाणा वे माटूंगेथी विहार करी मुम्बई भींडीबजारमां आवेला श्रीशान्तिनाथ जैन मन्दिरे पधार्या, त्यांथी मुम्बईना कच्छी वीसा ओसवाल महाजन तरफथी करायला सामैया सहित पायधुनी झवेरीबजार वडगादी खारेकबजार अने भातबजारने रस्ते पालागलीमां कच्छी वीसा ओसवाल महाजनवाडीमां पधार्या।

त्यार पछी ते वाडीमां अंचलगच्छवाळाओने आचार्यश्रीए आठे दिवसनां व्याख्यानो सभळावी उत्तम प्रकारे पर्युषणपर्वनुं आराधन कराव्युं हतुं। पर्युषणमां कच्छी वीसा ओसवाल तथा दसा ओसवालनो कल्पसूत्रनो वरघोडो घणा ठाठमाठथी भेगो नीकळ्यो हतो। चौद स्वप्नां तथा पारणा वगेरेना घीनी बोलीनी उपज पण सारी थइ हती। अने अट्ठाईनी तपस्या करनाराओने राव साहेब शेठ रवजीभाई सोजपालना धर्मपत्नी श्रीमती कंकुबेन तरफथी श्रीफळ सहित एक एक रुपीयानी लाणी करवामां आवी हती। बीजा श्रावण सुदी ६ ने रोज पायधुनी उपर आवेला श्रीमहावीर जैन मन्दिरेथी रथयात्रानो वरघोडो निकळवानो हतो तेथी पालागलीमांनी महाजनवाडी-एथी सामैया सहित आचार्यश्री पायधुनी पधार्या हता अने वरघोडामां सामेल थया हता। वरघोडामां पंचरंगी मानव मेदनीनो जमाव सारो थयो हतो। वरघोडामां आचार्य श्रीजि-नऋद्धिसूरिजी उपाध्याय श्रीसुखसागरजी पंन्यासजी श्रीप्रीति

विजयजी तथा श्रीभावविजयजी पोतपोताना समुदाय-सहित पधारेला होवाथी, पृष्ठ ९२ मां जणाव्या मुजब तेरापंथना सावकाभाई जेवा सोसायटी पक्षना लालबागना साधुओनी गेरहाजरी होवा छतां वरघोडानी शोभा घणी सारी देखाती हती। लोको पण शासननी शोभाना दरेक कार्यमां दरेक गच्छना साधुओ आवी रीते परस्पर सहकार आपे तो शासननी घणी ज शोभा वधे एम मांहोमांहे वातो करता हता। थोडा दिवस पहेलां आदीश्वरजीनी धर्मशाळाएथी तपस्या निमित्ते नीकळनारा वरघोडामां पधारवानी विनति करवा, श्रावको लालबागमाना साधुओ पासे गयेला त्यारे श्रीकनकविजयजी आदिए वरघोडामां पधारवानी हा पाडेली, परन्तु पाछळथी सोसायटीना आगेवान श्रावकोनी आज्ञाने आधीन थइ तेओ वरघोडामां पधार्या नहि, ते समाचार ता. २०-८-३९ ना जैन पत्रमां छपाया हता। सोसायटीना श्रावको तथा साधुओ बीजा साधुओ उपर एवो आरोप करे छे के "तेओ तो श्रावकोनी आज्ञा प्रमाणे वर्तन करे छे" तो पछी उपरनी हकीकतमां लालबागमां रहेला सोसायटीपक्षना साधुओए श्रावकोनी आज्ञा मानीने वरघोडामां नहि पधारी "आपणी ते लापसी ने पारकी ते कुसकी" अथवा "मीठा मीठा हडप हडप अने कडवा कडवा थू थू" जेवी पोतानी नीति जाहेर करी के बीजुं कांई ? ते बाबत तेओ कांई खुलाशो करे तो समजी शकाय। त्यार पछी बीजे दिवसे आचार्यश्री पाछा माटूंगे पधार्या हता। माटूंगामां आचार्यश्रीनी आज्ञाथी गुलाबमुनिए अंचलगच्छवाळाने-तथा खरतरगच्छ-

वालाने अट्ठाइ व्याख्यान तथा कल्पसूत्रनां व्याख्यानो शेठ तेजु कायाना भोजमहालना विशाळ हॉलमां संभळाव्यां हतां, छेल्ले दिवसे चैत्यप्रवाडी होवाथी संघ समुदाय सहित दादरना श्रीशान्तिनाथ जैन मन्दिरना दर्शन करवा गया हता। शेठ रवजी सोजपाळ तथा शेठ नेणशी भोजराज वगेरे तरफथी पर्युषणना दिवसोमां हमेशां प्रभावना करवामां आवती हती। आ जी० आइ० पी० रेल्वेनुं माटूंगा परुं हालमां ज नवुं वसेलुं होवा छतां बी० बी० सी आइ० ना खार सान्टाक्रूझ वीलापारला तथा अन्धेरी वगेरे बधा पराथी चढीयातुं थइ गयुं छे, पेलां बधां परा करतां एक तो आ परानी जमीन घणी उंची आवेली छे तेथी ते पराओना जेवो अहीं मच्छरोनो त्रास नथी, वळी आ परामां दरेक बंगलानी चारे तरफ छुटी जग्या विशेष मुकाती होवाथी, म्युनीसीपालीटीए दरेक रस्ता पहोळा अने डामरना बनावेला होवाथी तथा अहींयानी वस्तीने फरवा हरवा माटे ठेर ठेर खुली जग्या राखी रमत गमतना साधनोवाळा घणा ज बगीचाओ करेला होवाथी आ पराने हिन्दुस्थाननुं पारीस गणी शकाय तेवुं छे। लक्ष्मीवन्तोए पोताना बंगलाओ पण अहीं जात जातनी बांधणीना एक एकथी चढीयाता बन्धावेला होवाथी माटूंगानी शोभा घणी ज वधी गइ छे। वळी सर कीकाभाई प्रेमचन्द तरफथी जैन भाईयोने सस्ते भाडेथी रहेवा माटे गृहमन्दिरनी सगवडवाळी बे चालीयो तो तैयार थई जवा आवी छे, तथा तेओना ज तरफथी बीजी पण एवी चालीयो बन्धावानुं संभळाय छे, अने

शेठ देवकरण मूळजीना ट्रस्टीयो तरफथी पण जैन भाईयोने सस्ते भाडेथी रहेवा माटेनी चालीयो बान्धवा जमीन लेवाइ गइ छे तथा तैयार मकान पण लेवायेल छे। वळी मुम्बईना श्रीअनन्तनाथजी जैन मन्दिरना पेटा मन्दिर तरीकेनुं एक मोटुं जैन मन्दिर बांधवा माटे ते मन्दिरना ट्रस्टीयोए माटूंगामां जग्या लीधी छे एटले थोडा वखतमां अत्रे सारुं जैन मन्दिर पण थइ जशे। आचार्य श्रीजिनऋद्धिसूरिजीना उपदेशथी थोडा ज वखतमां अत्रे एक सारी पाठशाळानी स्थापना करवा माटे अत्रेना श्रावको प्रयत्न करी रह्या होवाथी हजी पण माटूंगानी शोभा घणी ज वधशे। वळी अत्रे रहेनाराने ट्रामगाडीनुं साधन पण मळतुं होवाथी वधा परात्रो करतां अहीं वस्तीमां घणो ज वधारो थतो जाय छे। पर्युषण प्रसंगे एकला अंचलगच्छना ज आसरे त्रणसो माणसोनी हाजरी व्याख्यानोमां जणाती हती।

हवे बीजा श्रावण वद १२ थी तपागच्छना पर्युषण शरु थतां होवाथी माटूंगाना तपागच्छवाळाओए तथा दादरना तपागच्छवाळाओए पोताने पर्युषण पर्वनी आराधना कराववानी विनति आचार्य महाराजने करी, तेथी धर्मवृद्धिनुं कारण जाणीने गुलाबमुनिने माटूंगामांना तपागच्छवाळाओने पर्युषणनां व्याख्यानो संभळाववानुं सोंपीने आचार्यश्री दादरना तपागच्छीयोने पर्युषणनां व्याख्यानो संभळाववा माटे घाटकोपरथी आवेला मुनि श्रीमतिसागरजीने साथे लइने दादर पधार्या हता। माटूंगाना तपागच्छीयोए पर्युषणना व्याख्यानो संभळाववा माटे

भांडारकररोड उपर आवेला आस्तिक समाजना हॉलमां गोठवण करेली होवाथी पर्युषणना आठे दिवस त्यां जइने गुलाबमुनिए तपागच्छीय श्रावकोने व्याख्यान संभळाव्युं हतुं। दरेक फिरकाना जैनोनो आचार्यश्री उपर घणो ज भक्तिभाव होवाथी, तपागच्छीय पर्युषणमां पण माटूंगामां पोताना पर्युषण वीतिगयेला होवा छतां घणां अंचलगच्छवाळाओ तथा स्थानकवासीयो व्याख्यानो सांभळवा आवता हता। पौषधवाळा भाई बहेनोने शेठ रवजीभाई सोजपाळ तरफथी श्रीफळ सहित एक एक रुपीयानी लाणी करवामां आवी हती। तपागच्छना पर्युषणनी उजवणीमां पोरबन्दरवाळा शेठ हीरजीभाई भणशाली तथा शेठ छोगालालजी ललवाणीए आगेवानीभर्यो भाग लीधो हतो, तेमना उत्साह अने प्रयत्नथी हमेशां श्रीफळ वगेरेनी जातजातनी प्रभावनाओ करवामां आवती हती। भाद्रवा सुदी १ ने दिवसे वेरांओनो रात्रिजगो राखी लोटानी लाणी करवामां आवी हती। शेठ प्रेमजीभाई कच्छीए वाजते गाजते श्रीकल्पसूत्रनी पधरामणी पोताने घेर करावीने श्रीफळनी प्रभावना करी हती। छेल्ले दिवसे बारसासूत्र सांभळ्या बाद चैत्यप्रवाडीनो वरघोडो काढी सकळ संघ दादरना जैन मन्दिरे दर्शन करवा गयो हतो, त्यांथी पाछा माटूंगे आवीने सांजना सकळ संघे वार्षिक प्रतिक्रमण करी पर्युषणपर्वनी आराधनानी समाप्ति करी हती। दादरमां पण आचार्यश्रीनी छत्रछायामां दादरना संघे उत्साहथी पर्युषणपर्वनी आराधना करी हती। दादरमां स्वप्नानी तथा पारणा वगेरेनी उपज तथा अट्ठाइ वगेरे तपस्या

सारी थइ हती । दादरना संघने पर्युषणपर्वनी आराधना उत्तम प्रकारे करावीने आचार्यश्री आदि ठाणा वे पुनः माटुंगे पधार्या हता ।

स्थानकवासी तथा तेरापंथी साधुओनो मने घणां वर्षोथी परिचय होवाथी तेओना उपदेशमां अने आचरणमां हाथीना चाववाना अने देखाडवाना जूदा जूदा दांतनी पेठे केटलुं बधुं अन्तर छे ते मारी जाण वहार नथी, तथापि " भेंसना शिंगडां भेंसने भारे " ए कहेवत अनुसार तेओना विपरीत आचरण उपर टीका टीप्पण करतो न हतो परन्तु कलकत्तानी श्रीजैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभाए बहार पाडेली बे चोपडीयो हमणां मारा जोवामां आवी, ते चोपडीयो वांचवाथी ते चोपडीयो सम्बन्धी कंइक विना जाहेर करवानी जरुरीयात जणायाथी आ लखाणनो प्रारम्भ करवो पड्यो छे।

ते बन्ने चोपडीयोमां भाषानी अशुद्धियो तो घणीज छे परन्तु ते तरफ लक्ष्य नहि आपतां मुद्दानी वात पर ज लखवु योग्य धार्यु छे । ते चोपडीयोमां स्वर्गस्थ महान् जैनाचार्य (आत्मारामजी) श्रीविजयानन्दसूरिजी उपर तथा परोपकार परायण वर्तमान जैनाचार्य श्रीजिनऋद्धिसूरिजी उपर अनेक प्रकारे दोषारोपण करी जनतामां भ्रम फेलाववानो प्रयत्न करवामां आव्यो छे । थोडा वखत पहेलां तो स्थानकवासी साधुओ पुस्तको लखाववामां तथा छपाववामां पाप समजता हता परन्तु हवे तो धमधोकार लखावे छे अने छपावे पण छे। तथा आ पांचमा आरामां पण पोते जाणे चोथा आराना साधु

होय तेम पोताना चारित्रनी उत्कृष्टता जणावनार तेरापंथी-साधुओ लोकोनी आगळ वारंवार जाहेर करे छे के, अमे तो ३२ सूत्रोने ज मानीने ते मुजब वर्तन करीये छीये, तो हुं तेओने पुछुं छुं के तमोए तमारा भक्तो पासे 'सूरिजीना वचनामृत' तथा 'जैन साधु' नामनी चोपडीयो छपावी ते कया सूत्रना आदेश प्रमाणे छपावी छे? वळी तमे कहो छो के अमे कोईने पुस्तक छपाववानुं कहेता नथी तो पछी सांज-वर्तमान जैनप्रवचन सिद्धचक्र प्रबुद्धजैन अने वीरशासन वगेरे वर्तमान पत्रोना, तथा जैनज्योति जैन अने जैनप्रकाशपत्रोनी भेटना पुस्तकोना लखाणोमांथी, तमारा मनगमता उतारा उतारीने तमारा भक्तोद्वारा प्रगट कराव्या छतां लोकोनी आगळ "नाऽहं कलिङ्गान् जगाम" जेवो अपलाप करो छो अने पोताना आत्माने ठगो छो, परन्तु ए तमारी ठगाइने मूर्खा लोको भले सोळ वालने एक रत्ती उपर पण साची मानी ले बाकी समजु माणसो तो सोलेसोल आना ए काम तमारी प्रेरणाथी ज थवानुं मानी रह्या छे। वळी तेरापंथी साधुओ कहे छे के जे मकानमां गृहस्थोनो वास होय ते मकानमां अमे उतरता नथी, परन्तु हालमां तेओना समुदायना घासी-रामजी वगेरे साधुओ माटूंगामां जे मकानमां चोमासुं रहेला छे ते मकानना उपरना भागमां केटलाक गृहस्थ पुरुषो पोताना चालबच्चां अने स्त्रियोसहित रहे छे ते तो जगत जोई रह्युं छे। कपडां धोवानुं तेरापंथी साधुओ स्वीकारता नथी छतां माटूं-गामां रहेला तेओना साधुओ तो कपडां धोतां देखाय छे,

वळी तेओ सांजे गोचरी जता नथी एम जाहेर करे छे छतां सुरतवाला शेठ· जीवणचन्द भगुभाईने त्यां तथा मारवाडी छोगालालजी ललवाणीने त्यां घणी·वखत सांजना गोचरी जाय छे। जैनसाधु नामनी चोपडीने २६ मे पाने स्वयमेव प्रश्न करे छे के जैनसाधु एकली, साध्वी अगर एकली स्त्री साथे वात करे के नहिं? अने पछी तेना जवाबमां जणावे छे के वात करी शके नहि परन्तु तेरापंथी साध्वीयोमां जे वडिल साध्वी होय छे ते एकली ज तेमना पूज्यनी साथे पडदामां रहीने एकाकी पूज्यने पासे रहीने आहार करावे छे ते बाबतमां लोकोए शुं समजवुं? वळी ते ज चोपडीना २१ मा पानामां जणाव्युं छे के तेरापंथी साधुओना ब्रह्मचर्यनी रक्षा थवा माटे भीखमजी तथा जीतमलजी आदिए पोताना साधुओ माटे खावा पीवानी बाबतमां मर्यादा बांधेली छे, परन्तु जैन साधुओने माटे खावा पीवानी बाबतमां बांधेली मर्यादानुं वर्णन घणां सूत्रोमां आवे छे, तथा चौदपूर्वधर श्रुतकेवली श्रीभद्रबाहुस्वामीए साधुसामाचारीमां पण ते मर्यादा विस्तारथी समजावी छे, तेमां उत्सर्ग अने अपवाद ए बन्ने रस्ता जणाव्या छे। तेमां उत्सर्ग रस्तो छे ते धोरी रस्तो छे अने अपवाद रस्तो छे ते कोई खास कारणसर न छुटके लेवानो रस्तो छे। हालना मूर्तिपूजक सम्प्रदायना साधुओ उपर कहेला बन्ने मार्गनुं अवलम्बन करीने पोतानो निर्वाह करे छे, एमां तेरापंथी पूज्योए नवी शुं मर्यादा बांधी।

खरुं कहिए तो मारवाडमां एक गाम छे बगडी,

त्यां जिनाज्ञा उत्थापक भीखमजीनी बुद्धि गइ वगडी,
तेथी त्यां पोताना गुरुजीनी साथे पड्या झगडी,
पछी भीखमजीए फेरवी बांधी पोतानी पगडी,
त्यारबाद भीखमजीए पोताना हाथमां एक पकडी,
तेरापंथना नामनी खूब जबरदस्त लकडी,
अने धर्ममांथी दया तथा दानने मुक्यां तगडी,
पछी नानां मोटां दरेक गामोए खूब रवडी,
कहेवा लाग्या के तेरापंथ तो छे सोनानी लगडी,
ए रीते तेओनी जाळमां भोळा जीवो जे गया पडी,
पोताना फांदामां तेओने धीमे धीमे लीधां जकडी,

अने घणा जीवोने वीतरागना धर्मथी उंधे रस्ते चढावी दुर्गतिना भागी बनाव्या छे। तेरापंथना साधुसाध्वीयो केवी रीते शुद्ध गोचरी लावे छे तेनो एक दाखलो मारी जाणमां आवेलो छे, तेओनी एक साध्वी लाडनूं गाममां पोतानी एक भक्ताणी .... ने घेर गोचरी गई अने कह्युं के .... बाई अमुक वस्तुनो संजोग छे? त्यारे ते .... भक्ताणी बोली के हाल तुरत तो संजोग नथी पण थोडी वारमां थइ जशे। एटले पेली साध्वी बीजे ८–१० घेर फरीने पाछी पेली .... भक्ताणीने घेर आवी पहोंची, एटलामां तो पेली रागी भक्ताणीए साध्वीए मांगेली वस्तु झटपट तैयार करी दीधी अने वहोरावी पण खरी, तेथी खूब खुश थयेली ते साध्वीए पेली भक्ताणी .... नी खूब प्रशंसा करीने जणाव्युं के तमे तो खरेखरां धर्मनी माता छो, तमारा जेवी उत्तम

श्राविकाओनी साहाय्यथी ज अमारा जेवा साधु साध्वीओ सारी रीते संयम पाळी शके छे। पछी ते आहार लइने ते साध्वीए पोतानी वडिल साध्वीने तथा तेरापंथी पूज्यने बताव्यो, ते जोइने पोताने मनगमतो आहार गमे त्यांथी गमे ते रीते पण लावीने हाजर करी आपवा बदल तेनी गुरुणीए अने पूज्यजीए ते साध्वीनी भक्तिनी खुब तारीफ करी हती। भीखमजीए तेरापंथी श्रावकोने माटे तेरापंथी साधुओने दान देवा सिवाय दान देवानां बधां द्वार बन्ध करी दइने तेरापंथी श्रावकोने माटे फक्त पोताना साधुओने दान देवानुं एक ज द्वार खुल्लुं राखेलुं होवाथी, तेरापंथी श्रावको पोताना साधु-ओने बदाम आदि पौष्टिक पदार्थो अत्यन्त मिश्रित करीने तैयार करेलो आहार वहोरावता होवाथी तथा 'बावो बेठो जपे अने जे आवे ते खपे' ए उक्ति अनुसार कांदा बटाटा लसण रताळु माखण अने मध वगेरे अभक्ष्य विकारोत्पादक वस्तुओनुं पण तेरापंथी साधुओ भक्षण करता होवाथी तेओ ब्रह्मचर्यनुं पालन केवी रीते करता हशे ते तो तेओ ज जाणता हशे तथा तेओनो खुदा जाणतो हशे। तेरापंथी साधुओ वारंवार जाहेर करे छे के जेमां हिंसा थाय एवुं कोई पण कार्य अमे करता नथी परन्तु तेओ गोचरीए जाय त्यां गृहस्थो गरम रसोइनां वासण उघाडे छे त्यारे बाफथी घणा वायुकायना जीवो हणाय छे, तेओना भक्तो तेओने दूर दूर अनेक प्रकारना वाहनो द्वारा वांदवा जाय छे त्यारे, तथा तेरापंथनो कोई पूज्य काळ करे त्यारे तेनी मांढवी करी बाळे छे अने चारे दिशाए दीवा करे छे त्यारे पण

अनेक प्रकारे जीवो हणाय छे छतां ते कार्योनो तेओ निषेध नहि करतां अनुमोदन आपता रहे छे तेमां तेओने हिंसा देखाती नथी ए पण एक जातनुं आश्चर्य छे।

ज्यारे पोताना भक्तोने तेओ समकित उचरावे छे त्यारे खास करीने जिनमूर्तिनी पूजा तथा दर्शन करवानो ज आत्यन्तिक निषेध करे छे, परन्तु मिथ्यात्वि देवोनी बाबतमां तेवा प्रकारनो निषेध नहि करता होवाथी, तेरापंथीयोमां भेरुंजी इल्लाजी भोपामाता शीतलामाता शंकर हनुमान पीर पेगम्बर अने उकरडा उकरडीनी पूजा मानता जोर शोरथी प्रसरी रहेली छे, अने तेओना मानी लीधेला समकितने मलिन करे छे छतां ते बाबत तेरापंथी साधुओ आंख आडा कान करीने ' हांक सुलेमान गाल्ली ' नी माफक पोतानो पंथ चलाव्या जाय छे। कदाच कोई श्रावक मिथ्यात्वि देवोनी पूजा मानता कर्या विना पोताने चाले एम नथी एवुं जणावे, तो तेरापंथी साधुओ उलटुं तेने समजावे छे के भाईजी! तमे तो संसारी छो तमारे बधुं करवुं पडे छे, तेथी कांई तमारा समकितने उनी आंच आवे एम नथी के वांको वाळ पण थाय एम नथी, कारण के ते बाबतना आगारो राखीने ज अमे तमने समकित उचरावीये छीये। एटले पेला श्रावको पण निडर थइने मिथ्यात्वि देवोनी पूजा मानता बेधडक कर्या ज जाय छे। परन्तु जो कदाच कोई श्रावक एम पुछी जुए के साहेबजी! गाममां नहि पण शत्रुंजय गिरनार समेतशिखर आबू तारंगा क्षत्रियकुंड अने पावापुरी वगेरे तीर्थोनी

यात्राए जइये अने त्यां दर्शन पूजा करीये तो कांई वांधो आवे खरो ? ते वखते तेरापंथी साधुओना मगजनो पारो तथा केटलाक ढूंढक साधुओना मगजनो पारो १०५ डीग्री पर चढी जाय छे अने पेला बिचारा पुछनारने संभळावे छे के " भाठो रे भाठो देखणवालारो समकित नाठो " वगेरे कहीने चोक्खी मनाइ फरमावे छे, छतां तेओमांना केटलाक तो गुरुजीना उपदेशने गुरुजीनी पासे ज पधरावीने शत्रुंजय वगेरे तीर्थोनी यात्रा करे छे अने दर्शन पूजा पण घणा भावथी करे छे।

उपरोक्त बन्ने सम्प्रदायना साधुओ दीक्षा लेती वखते करेमि भंतेनो पाठ उचरी जीवन पर्यन्त जीवहिंसा नहि करवानो नियम लइ पछी जीवहिंसाना अनेक कामो करता देखाय छे। जेवी रीते काउस्सग्ग करतां वखते काउस्सग्गनो भंग न थाय ते माटे अन्नत्थ ऊससिएणं वगेरे बार आगारो भगवाने बताव्या छे तेवा कोई आगारो करेमि भंतेना पाठमां बताव्या नथी, छतां तेओ जीवहिंसाना कामो मनस्वीपणे ज करता होवाथी तेओनुं साधुपणुं टकतुं नथी, माटे एवा असंयति अविरतिने आहारादि आपवामां तथा आदर सत्कार करवामां एकान्त पाप छे।

वळी पोताने उत्कृष्ट साधु तरीके गणावनारा तेरापंथी साधुओ काचा पाणीना भरेला घडामां राख नंखावीने ते पाणी वहोरी लावे छे, तथा केटलाक ढूंढक साधुओ कन्दोईनी दुकानेथी तेओनी मीठाइना वासणोनुं धोवण कढाइमां पडी

रहेलुं होय ते पाणीने, कुतरां वीलाडां अने गधेडां वोटी गयां होय तथा सेंकडो कीडी मकोडा माखी मच्छर अने डांसोए जेमां पोतानी आहुति आपी होय, अने जे पाणीमां अनेक सम्मूर्छिम जीवो उत्पन्न थया होय तेवा अत्यन्त मलिन गन्दा पाणीने लइ जइने पीता होवाथी तेओनी बुद्धि पण एवी मलिन ज थइ रहे छे। तेओना एवा वर्तनथी तेओ अन्य मतावलम्बियोमां तेमनी पोतानी तो निन्दा करावे ज छे परन्तु साथे साथे वीतराग देवना परम पवित्र जैनधर्मनी पण केटली घधी अपभ्राजना करावे छे ते तेओ समजी शकता ज नथी। ढूंढकपंथी तथा तेरापंथी साधुओ मलिनतामां ज मानता होवाथी रातना टाइमे संवेगी साधुओनी माफक चूनो नांखीने पाणी राखता नथी, तेथी कदाचित् तेओना कोई साधुने के साध्वीने रात्रिने टाइमे जंगल जवानी जरुर पडे त्यारे तेओ केवुं निन्दनीय आचरण करे छे ते हुं लखी जणावुं तेना करतां, वांचकोज पोतानी बुद्धिथी स्वयं समजी ले ते वधु योग्य छे एवुं मानीने छेवटे कट्टर तेरापंथी तथा कट्टर ढूंढकने तो लाभ थवो मुश्केल छे परन्तु बीजा ढूंढकोने तथा तेरापंथीयोने तो जरुर थोडो घणो लाभ थशे ज, एम धारी तेओनी मान्यता मुजबना ३२ सूत्रोनी साक्षी आपीने सिद्ध करनार मूर्तिपूजा सम्बन्धी पूर्वाचार्योए उपकार बुद्धिथी रचेलां वे स्तवनो अत्रे दाखल करवामां आवे छे।

१

भविका श्रीजिनविम्ब जुहारो।
आतम परम आधारो रे। भविका श्रीजिन०।

जिन प्रतिमा जिन सरखी जाणो,
न करो शंका कांई ।
आगमवाणीने अनुसारे,
राखो प्रीति सवाई रे । भविका० ॥ १ ॥
जे जिन बिम्ब स्वरूप न जाणे,
ते कहिये किम जाणे ।
भूल्या तेह अज्ञाने भरिया,
नहि कांई तत्त्व पिछाणे रे । भविका० ॥ २ ॥
अम्बड श्रावक श्रेणिक राजा,
रावण प्रमुख अनेक ।
विविध परे जिन भक्ति करतां,
पाम्या धर्म विवेक रे । भविका० ॥ ३ ॥
जिन प्रतिमा बहु भक्तिए जोतां,
होय निश्चय उपकार ।
परमारथ गुण प्रगटे पूरण,
जो जो आर्द्रकुमार रे । भविका० ॥ ४ ॥
जिनप्रतिमा आकारे जलचर,
छे बहु जलधि मझार ।
ते देखी बहुला मत्स्यादिक,
पाम्या विरति प्रकार रे । भविका० ॥ ५ ॥
पांचमे अंगे जिनप्रतिमानो,
प्रगटपणे अधिकार ।
सूर्याभसुरे जिनवर पूज्या,
रायपसेणी मझार रे । भविका० ॥ ६ ॥

दशमे अंगे अहिंसा दाखी,
जिनपूजा जिनराज ।
एवा आगम अरथ मरोडी,
करिये केम अकाज रे । भविका० ॥ ७ ॥
समकितधारी सती द्रौपदीए,
जिन पूज्या मनरंग ।
जो जो एहनो अरथ विचारी,
छट्ठे ज्ञाता अंगे रे । भविका० ॥ ८ ॥
विजयसुरे जिम जिनवर पूजा,
कीधी थिर चित्त राखी ।
द्रव्य भाव बेहु भेदे करीने,
जीवाभिगम छे साखी रे । भविका० ॥ ९ ॥
इत्यादिक बहु आगम साखे,
शंका कोई मत करजो ।
जिनप्रतिमा देखी नित नवलो,
प्रेम घणो चित्त धरजो रे । भविका० ॥ १० ॥
चिन्तामणि प्रभु पास पसाये,
श्रद्धा होजो सवाई ।
श्रीजिनलाभ सुगुरु उपदेशे,
श्रीजिनचन्द सवाई रे । भविका० ॥ ११ ॥

२

धरो तुम जिनप्रतिमाका ध्यान,
प्रतिमा जिनवर आप समान । धरो तुम० ॥ १ ॥

समकितधारी सती द्रौपदी,
पूजे श्रीभगवान ।
नारद नहि वांद्या दृढ समकित,
ज्ञाता सूत्र पिछान । धरो तुम० ॥ २ ॥
सूर्याभे जिनप्रतिमा पूजी,
मोक्ष अर्थ परिमाण ।
क्षायक समकित वीर वखाणे,
रायपसेणी जान । धरो तुम० ॥ ३ ॥
विजयपोलिये सत्तर भेदे,
पूजा करी प्रमाण ।
जिनप्रतिमा जिनवर सम भाखी,
जीवाभिगमे जान । धरो तुम० ॥ ४ ॥
आनन्दादिक दश ही श्रावक,
पूजे प्रतिमा थान ।
कुमति अर्थ करत है जूठा,
पाया नहि गुरु ज्ञान । धरो तुम० ॥ ५ ॥
जंघा विद्याचारण मुनिवर,
वन्दे प्रतिमा मान ।
भगवती सूत्रमांहे लिखा है,
परगट अर्थ पिछान । धरो तुम० ॥ ६ ॥
अम्बड संन्यासी जिनप्रतिमा,
जाने प्रभु समान ।
वन्दे पूजे भक्ति करे ते,
उववाइ सूत्र वखान । धरो तुम० ॥ ७ ॥

सिद्धार्थ राजाने जिन पूजे,
कर भक्ति पहिचान ।
पार्श्वनाथका श्रावक सच्चा,
आचारंगमें ब्यान । धरो तुम० ॥ ८ ॥
श्रावक जिनमन्दिर करावे,
स्वर्ग बारमा जान ।
महानिशीथ सूत्रमें भाख्या,
देखो तत्त्व पिछान । धरो तुम० ॥ ९ ॥
शरणा तीन कहा है परगट,
भगवती सूत्र निशान ।
जिनप्रतिमाकी शरण लेनेसे,
हो न कभी नुकशान । धरो तुम० ॥ १० ॥
साधु भावपूजा करते हैं,
श्रावक द्रव्य भाव जान ।
महानिशीथ सूत्रमें देखो,
कुमति तज तोफान । धरो तुम० ॥ ११ ॥
दूर देशसे आय आयकर,
बहुत करे घमसान ।
कुमति करे आरम्भ मोटका,
छाय रहा अज्ञान । धरो तुम० ॥ १२ ॥
जिनपूजामें दया बखानी,
प्रश्नव्याकरण छान ।
उसमें पाप बतावे पापी,
प्रत्यक्ष नरक निशान । धरो तुम० ॥ १३ ॥

जिनआज्ञा प्रतिमा पूजनकी,
श्रावकको हित आन ।
आज्ञा विना जो दया पुकारे,
है नहि दया निशान । धरो तुम० ॥ १४ ॥
जिनप्रतिमाके सन्मुख साधु,
ले आलोयण जान ।
पाठ प्रगट व्यवहार सूत्रमें,
क्यों लोपे जिन आन । धरो तुम० ॥ १५ ॥
दया दान जिनपूजा छोडी,
लिया कुगतिका थान ।
तेरे काठिया पंथ बीचमें,
भये कइक हैरान । धरो तुम० ॥ १६ ॥
नगुरा पंथ निकाला तेरा,
चूका कहे भगवान ।
उनके नामसे मांगके खावे,
ऐसे ये बेइमान । धरो तुम० ॥ १७ ॥
इनकी संगत मत कर भविजन,
संगत दुःखकी खान ।
निह्नव जिनवर वचन उत्थापक,
ले डूबा जजमान । धरो तुम० ॥ १८ ॥
ब्राह्मण जीमायां नरक बतावे,
ऐसे मूरख अज्ञान ।
जलती गौएं नहि ज बचावे,
कर्मचंडाल समान । धरो तुम० ॥ १९ ॥

आधाकर्मी आहार वहोरे,
करे राख जल पान ।
साधुपनेके लक्षण है नहि,
कुशल राम निर्वाण ।
धरो तुम जिनप्रतिमाका ध्यान,
प्रतिमा जिनवर आप समान, धरो तुम० ॥२०॥

* * * *

जिनप्रतिमा पूजी नहि, धरा उस पर द्वेष ।
सो नर मर कुत्ता हुआ, झालर वेला देख ॥ १ ॥

* * * *

दर्शन कीजे देवके, आदि मध्य अवसान ।
सुरगणके सुख भुंजकर, पावे मुक्ति निदान ॥ २ ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

माटुंगा (मुम्बई)
भाद्रपद शुक्लाष्टमी
सं० १९९५

सन्तचरणोपासक
गुलाबमुनि ।

* * * *

संसारना जीवो उपर उपकार करती जेम आ,
देखाय छे सौथी हमेशां प्रसरती सूरजप्रभा ।
उपकार करशो भव्यजीवोने हमेशां तेम आ,
आचार्य श्रीजिनऋद्धिसूरीश्वरतणी जीवनप्रभा ॥ १ ॥

* * * *

मास्तर विजयचन्द ।

आचार्यश्रीना थयेलां चातुर्मासोनो
सं. १९४९ थी सं० १९९५ सुधीनो अनुक्रम ।



१ पालीताणा ।
२ सुरत ।
३ मुम्बई ।
४ मुम्बई ।
५ अमदावाद ।
६ पाटण ।
७ सुरत ।
८ सुरत ।
९ सुरत ।
१० मुम्बई ।
११ जोधपुर ।
१२ मुम्बई ।
१३ सुरत ।
१४ सुरत ।
१५ कठोर ।
१६ सुरत ।
१७ ग्वालीयर ।
१८ जयपुर ।
१९ कुचेरा ।
२० मुम्बई ।
२१ मुम्बई ।
२२ पालीताणा ।
२३ खंभात ।
२४ सुरत ।
२५ मुंबई ।
२६ मुम्बई ।
२७ खंभात ।
२८ मुम्बई ।
२९ सुरत ।
३० वलसाड ।
३१ खंभात ।
३२ कडोद ।
३३ वलसाड ।
३४ व्यारा ।
३५ मुम्बई ।
३६ मुम्बई ।
३७ सुरत ।
३८ कठोर ।
३९ दाहाणुं ।
४० खंभात ।
४१ अमदावाद ।
४२ घोलवड ।
४३ मुम्बई ।
४४ लालवाडी ।
४५ दादर ।
४६ ठाणा ।
४७ माटूंगा ।

शुद्धिपत्रक।

पानुं।	लीटी।	अशुद्ध।	शुद्ध।
६	२३	स्यारे	त्यारे
१६	१०	वारमुं	तेरमुं
१६	१०	तेरमुं	चौदमुं
१९	१०	कहुं	कह्युं
२४	१४	डमोई	डभोई
३४	२०	अपना	आपना
४१	१३	वंधु	वधुं
४३	१३	यइने	थइने
४४	२३	अभीई पंचमे	पंचमे अभीचीए
४५	४	पछ्युं	पुछ्युं
४६	२०	जण	जल
४६	२३	मालथी	माठथी
४७	३	भावना	भावत्रा
४८	४	सग्दुरु	सद्गुरु
५१	७	घधुंका	धंधुका
५५	१८	मनमूवो	मनसूवो
५९	२	अपनार	आपनार
६०	१३	दूपण	दूषण
६१	३	तेरोनां	तरोनां
७४	२०	जरीने	करीने
७७	१	खच	खर्च

७७	११	निविघ्ने	निर्विघ्ने
११६	६	दर्वीपर	दर्वीयर
१३४	१	शान्ति	खान्ति
१३६	१४	चत्र	चैत्र
१६३	५	तराकि	तरीके
१७४	१२	पोतापोता	पोतपोता

